

# अमर ज्योति

2024-25

**M.M.H. COLLEGE**  
**GHAZIABAD**  
NAAC Accredited



अमर ज्योति

सत्र: 2024-25

अंक: 70

संरक्षक  
श्री अभिनव कृष्णा (सचिव)  
प्राचार्य  
प्रो० संजय कुमार सिंह



## एम०एम०एच० कॉलेज, गाजियाबाद

संपादक मंडल



**बैठे हुए:** प्रो० सीमा शर्मा, प्रो० रेनू राणा, प्रो० संजय कुमार सिंह (प्राचार्य), प्रो० सुता कुमारी (प्रधान संपादक), डॉ० अनुपमा गौड़,  
प्रो० कल्पना दुबे

**खड़े हुए:** अनिकेत (छात्र प्रतिनिधि), श्री मूलचंद वर्मा (असिस्टेंट प्रोफेसर), प्रतिभा (छात्र प्रतिनिधि), सुधा सिंह (छात्र प्रतिनिधि),  
हिमानी (छात्र प्रतिनिधि)

**अन्य सदस्य सम्पादक मंडल:** प्रो० मोनिका शर्मा, प्रो० सुनीता सिंह, प्रो० राकेश कुमार

# अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या	क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	सन्देश - राज्यपाल	7	37	Spectrum of Cultural Activities	38
2	सन्देश - राज्य मंत्री	8	38	Drawing & Painting Exhibition	39
3	सन्देश - विधायक	9	39	Highlights of Sports Activities	40
4	सन्देश - कुलपति	10	40	Basant Panchmi Celebration	41
5	सन्देश - सचिव	11	41	Felicitation of Our Bright Stars	41
6	सन्देश - प्राचार्य	12	42	NCC Rank Ceremony	42
7	सम्पादकीय	13	43	Visit to Parliament	43
8	भारत में नई शिक्षा नीति 2020	15	44	Releasing of Poster	43
9	हिंदी साहित्य व बाजारवाद	17	45	Annual Prize Distribution Function	44
10	माँ के हाथों का खाना	18	46	College Committees	46
11	हिंदी काव्य में प्रकृति चित्रण	19	47	Global Skills	50
12	सपनों की उड़ान	20	48	Arjun: The Eternal Warrior	51
13	अंतरिक्ष का सफर सुनीता विलियम्स	21	49	Importance of Dreams	52
14	हिंदी की व्यथा	21	50	Dream Trap	53
15	भारत की सामाजिक आर्थिक असमानता	22	51	Teenage	53
16	नारी - एक परिचय	23	52	Revitalizing Roots	54
17	भूमंडलीकरण के दौर में दुनिया	24	53	Rights and Duties	55
18	वागड़ के आदिवासी	27	54	Artificial Intelligence	56
19	नारी	28	55	Is Our default set to self-destruct	57
20	यादों की स्याही से	28	56	The Future of AI in India	58
21	अमृत-वाणी	29	57	Women in Stem	59
22	माँ की महिमा	29	58	Are we living in simulation?	60
23	बच्चा काम पर जा रहा है	30	59	Northern Indian Folk Rhythms	61
24	अभी भी बाकी है	30	60	Happiness in Life	62
25	दो भाई	31	61	Cybersecurity	63
26	उम्मीदवार	31	62	Discrimination	65
27	हम फिर लौटेंगे	32	63	What is a Friend?	66
28	मैंने पहलगाम को रोते देखा	32	64	Breaking the Silence	67
29	बेटी की अभिलाषा	33	65	AI in Crime Handling	69
30	प्रहेलिका:	34	66	NGT and Pollution	71
31	सुभाषितानि	34	67	A World Without Screens	72
32	तृषित: काक:	35	68	Value of Teacher	72
33	विद्यायाऽहङ्कार:	35	69	Misplaced Priorities	73
34	सिंहमूषकयो: मैत्री	36	70	Shining Stars of Our College	74
35	शिकागो यात्रा	36	71	India & The New Geopolitics	75
36	सुविचारा:	37	72	Nature's Paradox	78
			73	Great Thoughts	80
			74	Dean's Report	81
			75	Cultural Committee Report	82
			76	Physical Education Report	83



श्री गुरु पिताजी महाराज  
महाविद्यालय संस्थापक



## महाविद्यालय प्रबन्ध-समिति की पूर्व सचिव



स्वर्गीय - श्रीमती सरोजनी बोस



स्वर्गीय - श्रीमती रंजना कृष्णा



श्री अभिनव कृष्णा  
सचिव, महाविद्यालय प्रबन्ध-समिति



प्रो० संजय कुमार सिंह  
प्राचार्य

आनंदीबेन पटेल

राज्यपाल, उत्तर प्रदेश



सत्यमेव जयते

राज भवन  
लखनऊ - 226 027

20 मार्च, 2025

### सन्देश

मुझे यह जानकर हर्ष की अनुभूति हो रही है कि एम0एम0एच0 कॉलेज, गाजियाबाद की वार्षिक पत्रिका 'अमर ज्योति' का प्रकाशन होने जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिकाएं साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों, उपलब्धियों के साथ-साथ कार्यरत शिक्षकगण, अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं शिक्षणेत्तर कर्मियों की रचनात्मक कृतित्व और प्रतिभा की अभिव्यक्ति होते हैं। मुझे आशा है कि प्रकाश्य पत्रिका में महाविद्यालय की शैक्षणिक यात्रा और उत्कृष्ट शिक्षण प्रतिमानों का समावेश किया जाएगा, जो पाठकों के ज्ञानवर्द्धन में सहायक होगी।

वार्षिक पत्रिका 'अमर ज्योति' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आनंदीबेन  
( आनंदीबेन पटेल )

दूरभाष : 0522-2236497 फ़ैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@gov.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

## नरेन्द्र कश्यप

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)  
पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं  
दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग



अ0शा0पत्र सं0 1968/पि0व0क0 एवं दि0स0वि0/2024  
कार्यालय : 07, नवीन भवन, उ0प्र0 सचिवालय, लखनऊ।  
निवास : बी-61, एचआईजी डुलेक्स, संजय नगर, गाजियाबाद।  
निवास : 11, एन.डी.एम आर., विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ।  
दूरभाष : 0522-2238089 (कार्या0)  
दूरभाष : 0522-2235687 (लखनऊ आवास)  
दूरभाष : 0120-2784882 (गाजियाबाद आवास)  
मो0नं0 : 9412219385 / 9891276564

दिनांक : 30/04/2025.....



### शुभ कामना संदेश

यह हर्ष का विषय है कि एम0एम0एच0 कॉलेज, गाजियाबाद द्वारा वार्षिक पत्रिका 'अमर ज्योति' का प्रकाशन करने जा रहा है, जो अपनी शैक्षणिक यात्रा में उत्कृष्ट शिक्षण प्रतिमानों के साथ जनपद का सबसे पुराना और बड़ा केन्द्र है। यह पत्रिका छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों की रचनात्मकता, कृतित्व और प्रतिभा के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका छात्र-छात्राओं के मार्गदर्शन हेतु सकारात्मक ऊर्जा और प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करेगा। इसके लिए महाविद्यालय के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को बधाई देता हूँ तथा 'अमर ज्योति' के प्रकाशन की शुभ कामना प्रेषित करता हूँ।

प्रो0 संजय कुमार सिंह,  
प्राचार्य (कार्यवाहक),  
एम0एम0एच0 कालेज,  
जनपद-गाजियाबाद।

(नरेन्द्र कश्यप)

(नरेन्द्र कश्यप)  
मा0 राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)  
पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं  
दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग  
उ0प्र0 शासन।



**संजीव शर्मा**  
विधायक  
56, गाजियाबाद शहर

क-7 No. 364712



दिनांक :- 10-03-2025

॥ शुभकामना सन्देश ॥

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि एम.एम.एच. कॉलेज द्वारा पत्रिका "अमर ज्योति" का प्रकाशन किया जा रहा है।

एम0एच0एच0 कॉलेज गाजियाबाद का इतिहास गौरवपूर्ण और अनेक विलक्षण पलों का साक्षी रहा है। साथ ही अपनी शैक्षणिक यात्रा में उत्कृष्ट शिक्षण प्रतिमानों के साथ जनपद का सबसे पुराना और बड़ा केंद्र है।

यह पत्रिका महाविद्यालय की साहित्यिक, सांस्कृतिक, गतिविधियों, उपलब्धियां और हमारे छात्रों-शिक्षकों की रचनात्मक, क्रतिव और प्रतिभा की सृजन अभिव्यक्ति है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी और से हार्दिक शुभकामनायें।

भवदीय

*Sanjeev Sharma*  
(संजीव शर्मा)

प्रो0 संजय कुमार सिंह  
प्राचार्य (कार्यवाहक)  
एम0एच0एच0 कॉलेज गाजियाबाद।

कैम्प कार्यालय – R-145, वकील कॉलोनी, प्रताप विहार, गाजियाबाद  
मो. नं. – 8130666180



## चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ-250 004 (उ०प्र०)

(NAAC A++ Accredited)

प्रोफेसर संगीता शुक्ला

डी०एस०सी०

कुलपति



पत्रांक : एस०वी०सी०/21/ 1378

दिनांक : 17.03.2025

### 'सन्देश'

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि एम०एम०एच० कॉलेज, गाजियाबाद द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "अमर ज्योति" का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी महाविद्यालय की पत्रिका महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास के लिये आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के विहंगम वर्णन के माध्यम से विद्यार्थियों में नयी उमंग एवं उत्साह का संचार करती है तथा उनकी सकारात्मक सक्रियता के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विश्वास है कि यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सृजनात्मक प्रतिभा के निखार का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ ज्ञानोपयोगी लेखों का प्रचार-प्रसार करेगी। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन हेतु शुभकामनायें।

*Sangeeta*  
(संगीता शुक्ला)

प्रो० संजय कुमार सिंह

प्राचार्य (कार्यवाहक),

एम०एम०एच० कॉलेज,

गाजियाबाद।

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर  
मेरठ - 250 004

कार्यालय: +91-0121-2760554, 2760551, फ़ैक्स: 2762838  
शिविर कार्यालय: +91-0121-2600066, फ़ैक्स: 2760577

वेबसाइट: [www.ccsuniversity.ac.in](http://www.ccsuniversity.ac.in)  
ई-मेल: [vc@ccsuniversity.ac.in](mailto:vc@ccsuniversity.ac.in)

## सन्देश



मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि एम० एम० एच० महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका 'अमर-ज्योति' के सत्र 2024-2025 का अंक प्रकाशित कर रहा है। दरअसल, महाविद्यालय पत्रिका न केवल वर्ष भर आयोजित हुई गतिविधियों का एक प्रामाणिक अभिलेख होती है बल्कि छात्रों की बहुमुखी प्रतिभा और उनकी रचनात्मकता का प्रतिबिम्ब भी है। यह वर्ष भर आयोजित की जाने वाली शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियों की झलकियों के अलावा युवा मन में प्रस्फुटित होने वाले ज्ञानांकुर का एक दर्पण है जैसा कि साहित्य और रचना मन को प्रसन्न करते हैं और युवा मन लेखनी के सहारे उड़ान भरने का प्रयत्न करता है तो महाविद्यालय पत्रिका छात्रों की इस प्रतिभा के लिए एक मंच प्रदान करने का सर्वोत्तम साधन है जहाँ वे अपनी सकारात्मक ऊर्जा का संचार अपनी कृतियों द्वारा कर सकते हैं।

'अमर-ज्योति' के सफल प्रकाशन हेतु मैं प्राचार्य प्रो० संजय कुमार सिंह, संपादक मंडल एवं समस्त महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और कामना करता हूँ की महाविद्यालय परिवार के सामूहिक उद्यम से छात्रों का सर्वांगीण विकास हो और महाविद्यालय सतत प्रगतिपथ पर अग्रसर होता रहे। श्रद्धेय गुरु पिताजी महाराज का स्नेहपूर्ण आशीर्वाद महाविद्यालय परिवार पर सदैव बना रहे।

अभिनव कृष्णा  
सचिव, प्रबंध समिति  
एम० एम० एच० कॉलेज  
गाजियाबाद

## प्राचार्य का सन्देश



प्रिय छात्र/छात्राओं

मुझे आपको अवगत कराते हुए बहुत खुशी हो रही है कि महाविद्यालय कि वार्षिक पत्रिका "अमर ज्योति" का यह संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका महाविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों कि कड़ी मेहनत और उपलब्धियों का प्रतिबिम्ब है। छात्र छात्राओं ने शैक्षणिक, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। हमारा महा विद्यालय हमेशा छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध रहा है, हम न केवल छात्रों को अकादमिक रूप से उत्कृष्ट बढ़ाने का प्रयास करते हैं, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार राष्ट्रभक्त और सभ्य नागरिक बनने के लिए भी प्रेरित करते हैं।

मेरा मानना है कि एक प्रबुद्ध विद्यार्थी होने के साथ साथ एक जागरूक नागरिक होना भी आवश्यक है। यह अत्यंत चिंता का विषय है कि आज विद्यार्थी वर्ग में ज्ञान के प्रति अनास्था, पुरुषार्थ के प्रति उपेक्षा भाव और प्रत्येक समस्या के प्रति सतही दृष्टिकोण रखना आज के विद्यार्थियों को सामान्य लक्षण बनते जा रहे हैं। हमारे देश व समाज के लिए यह शुभ नहीं है। वास्तविक अर्थों में आप लोग ही देश के भावी निर्माता है, इस देश की समस्त भावी उन्नति आपके ही कोमल कन्धों पर निर्भर है। यदि आप परिश्रम से जी चुरायेंगे, पुरुषार्थ से मुंह मोड़ेंगे अथवा अपने समाज व राष्ट्र की समस्याओं के प्रति उदासीनता का भाव रखेंगे तो आप न तो कभी अच्छे विद्यार्थी बन पाएंगे और न ही इस समाज के अच्छे नागरिक। अतः परिश्रम, पुरुषार्थ, परोपकार, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता और निष्ठाशीलता जैसे सद्गुणों को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाइये स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है **"Whatever you think that you will be. If you think yourself weak, weak you will be. If you think yourself strong, strong you will be."** इसलिए हमेशा सकारात्मक सोचिए और अपने जीवन का एक निश्चित लक्ष्य निर्धारित कीजिये। केवल पुस्तकीय ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। शिक्षा हमें प्रज्ञाचक्षु भी प्रदान करती हैं, हमें विवेकशील बनाती है और हमें सन्मार्ग पर चलना सिखाती है। इसलिए पुस्तकीय ज्ञान पर चिंतन करना और फिर उसे व्यवहार में परिणत करना ही वास्तविक शिक्षा है। अध्ययन और चिंतन का अभिन्न सम्बंध है चिंतन के बिना किया गया अध्ययन जीवन में किसी काम नहीं आता। एडबर्ग ने उचित ही कहा है **"To read without reflecting is like eating without digestion"**. इसलिए पढ़िए एक बार, चिंतन कीजिए दो बार और आचरण कीजिए बार बार। हर्बर्ट स्पेंसर भी यही उपदेश देते हुए कहते हैं **"The true aim of education is not knowledge but action"** अतः विद्वान वही है जिसके प्रत्येक कर्म से शिक्षाजनित संस्कार प्रतिबिंबित हो तथा जिसकी समस्त क्रियाएं व्यक्तिगत ही ना हो बल्कि समष्टिगत भी हो।

प्रिय विद्यार्थियों ! सुख के कपास को उठाने में साथ देने वाले तुम्हे बहुत मिल जाएंगे, लेकिन दुख के पर्वत को तुम्हे अकेले ही उठाना पड़ेगा। यही जीवन का नियम है और यही मानव की नियति। इसलिए जीवन में किसी से कृपा की अपेक्षा न करें, क्योंकि अपेक्षा की उपेक्षा होने से दुख मिलता है। अता प्रगति के पथ पर आप अकेले ही चल पड़े और नेपोलियन के इस आप्त वाक्य को हमेशा याद रखें **"Those who walk alone walk fast"**. सचमुच प्रभु ने तुम्हें अनंत शक्तियां दी हैं, तुम धरती को ठोकर मारकर पानी निकालने का सामर्थ्य रखते हों, जरूरत है सिर्फ अधिक साहस और संकल्प शक्ति की।

अंत में एक बात और मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि शिक्षा हमें आदर्श नागरिक ही नहीं, आदर्श मानव भी बनाती है। यह हमें निरंतर संकीर्णता से विशालता की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर तथा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। मेरी कामना है कि आप सब शिक्षा प्राप्त कर ऐसे ही श्रेष्ठ एवं आदर्श मानव बने। मैं आप सब के उज्ज्वल एवं मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ। मेरी मनोकामना है कि आप प्रतिफल प्रगति करते हुए जीवन के विविध क्षेत्रों में शिखरस्पर्शी सफलताएं प्राप्त करें। आप अपने जीवन में निरंतर यशस्वी, तेजस्वी और वर्चस्वी बने यही मेरी मंगलकामना है। प्रभु आपका भावी जीवन पथ प्रशस्त करे। एक बार पुनः आप सबको मेरी असीम शुभकामनाएं एवं अमित आशीष।

प्रो० संजय कुमार सिंह

प्राचार्य।

## संपादकीय



प्रो० सुता कुमारी

प्रधान संपादक, अमर ज्योति

अमर ज्योति का यह अंक सहृदय पाठकों के सामने प्रस्तुत है। महाविद्यालय पत्रिका का प्रमुख प्रायोजन विद्यार्थियों की सृजनात्मक-साहित्यिक प्रतिभा को विकसित करना है। इस प्रयोजन की सिद्धि हेतु अनेक सृजनशील विद्यार्थियों की रचनाओं को प्रस्तुत अंक में प्रकाशित कर उनकी साहित्यिक प्रतिभा को प्रेरित एवं उत्साहित किया गया है ऐसा तो नहीं है कि सभी विद्यार्थियों की रचनाओं को प्रस्तुत अंक में स्थान मिल पाया हो, परंतु ऐसा अवश्य है कि साहित्यिक संस्पर्श रखने वाली प्रत्येक मौलिक रचना को यथासंभव स्थान देने का प्रयास किया गया है। फिर भी कुछ का चुन लिया जाना और कुछ का छूट जाना स्वाभाविक ही है। इनमें से जहाँ कुछ रचनाएँ आपको राष्ट्र एवं समाज के परिदृश्य को बिम्बित करती प्रतीक होंगी वहाँ कुछ अन्य में आप ऐसा भी पाएंगे जो आपको अपने निकटवर्ती, समाज की विसंगतियों और विकृतियों का प्रामाणिक परिदृश्य प्रस्तुत करती दिखाई देंगी। सचमुच व्यक्ति और समाज के कटु तिक्त यथार्थ को कल्पना के हल्के रंग में रंगकर प्रस्तुत करना ही सच्चे साहित्य की प्रमुख पहचान है।

साहित्य, संगीत और कला के प्रति अनुराग मानव की जन्मजात स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इनसे रहित व्यक्ति को संस्कृत काव्यशास्त्र से बिना पूँछ और सींग के साक्षात् पशु की संज्ञा दी गई है। हृदय प्रसूत ये तीनों विद्याएं परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। साहित्य संगीत के पड़ोस में बसता है। चित्रकारी मूक कविता है, और कविता मुखर चित्रकारी। मानव चिंतन करने वाला प्राणी ही नहीं स्वप्न देखने वाला जीव भी है। यह भावना, संवेदना व अनुभूति ही है, जो उसे सच्चे अर्थों में मानव बनाती है लेकिन अतिशय अनावश्यक भौतिकता से परिपूर्ण इस आधुनिक युग में वह संवेदनाशून्य होता जा रहा है, उसके हृदय से भावनाओं एवं अनुभूतियों का स्रोत सूखता जा रहा है। फलतः आज समस्त मानवीय संबंध अर्थहीन होकर रह गए हैं। आज वे केवल सुविधा केंद्रित संबंध बनकर रह गए हैं, आज किसी के पास किसी के लिए समय नहीं। भाग दौड़ भरी जिंदगी में हमारा अस्तित्व मशीनी हो गया है। पहचान कहा है? किसी को पता नहीं।

आधुनिक युग का मनुष्य अपने सुखों के लिए चिंतित रहता है। वर्तमान में रहते हुए भी वह निरंतर भविष्य की कल्पनाएं करता है और सदैव दुखों से घिरा रहता है। अंधी सुरंग के इस सफर में सब भागे जा रहे हैं सिर्फ एक दिन मृत्यु को पाने के लिए। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि एल्फ्रेड लॉर्ड टेनिसन ने उचित ही लिखा है **"If death is the end of this life, ah, why should life all labour be?"** परन्तु मृत्यु हमारा गंतव्य नहीं है। संवेदना के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच कर प्राणी मात्र का उपकार करना ही हमारे जीवन का चरम लक्ष्य है। संवेदना से शून्य व्यक्ति अस्थि पिंजर से अधिक कुछ नहीं और साहित्यिक पुस्तकों से रहित मकान मरुभूमि से कुछ कम नहीं।

साहित्य मन और मस्तिष्क का संतुलित प्रयोग करना सिखाता है। मन और मस्तिष्क का संतुलन ही सुंदर जीवन की पहचान है। महान मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Psychology of Everyday Life' में लिखा है कि मानव अपने मस्तिष्क का केवल चार-पांच प्रतिशत भाग ही प्रयोग करता है परन्तु हम अपने हृदय का, अपने मन का दो-तीन प्रतिशत भाग भी प्रयोग नहीं करते यही कारण है कि आज

दर्दनाक से दर्दनाक दृश्य देखकर भी हमारा हृदय द्रवित नहीं होता, हमारा मन व्यथित नहीं होता। लड़ना झगड़ना, मरना मारना और फिर अंत में पछताना ही आज के मानव की विडंबना बनकर रह गया है। इतिहास साक्षी है कि जब जब मानव जीवन से भावनाओं एवं संवेदनाओं का हास हुआ है तब तब संसार में युद्ध और विनाश की ज्वाला जली है। इसलिए संसार को यदि बचाना है, जीवन को यदि संवारना है तो संवेदनाओं और भावनाओं से लोगों को सुदृढ़ करना होगा, इसमें किंतु परंतु के विकल्प का अवकाश नहीं।

जीवन जिस प्रकार सुख-दुःख का संगम है साहित्य भी उसी प्रकार सुख दुख का चितेरा है। जीवन में सुख कम और दुख घने है। साहित्य में दुख को, विषाद को, वेदना को अभिव्यक्त करने वाली रचनाएं हमें सर्वाधिक प्रभावित करती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वेदना, विषाद और पीड़ा ही जीवन के शाश्वत सत्य हैं। सुख पूर्ण हास्य की सृष्टि करके धमा चौकड़ी मचाने वाली रचनाएं कुछ देर के लिए हमें चमत्कृत तो कर सकती हैं, लेकिन वे हमारे अंतर्मन की अतल गहराइयों तक नहीं झकझोर सकती। दूसरी और जीवन की वेदना, विषाद और दर्द को अभिव्यक्त करने वाली रचनाएं आज उतनी ही लोकप्रिय, जीवंत, मर्मस्पर्शी और हृदयग्राही है जितनी कि वे अपने प्रथम रचना काल में थी। सचमुच, गंभीर भावों को अभिव्यक्ति करने वाली रचनाएं ही कालजयी बनकर विश्व साहित्य में अपना स्थान बनाती है। रामायण, महाभारत, मेघदूत, गोदान, इडिपस, वॉर एंड दी पीस, औथेलो, मैकबेथ, किंगलीयर, जूलियस सीजर, टैस ऑफ दी डीउर्बर्विल्स आदि इसी प्रकार की कालजयी कृतियां हैं, जो कभी मर नहीं सकती। धन्य है ये रचनाएँ और धन्य हैं इनके रचनाकार। इन्हें मेरा शत शत नमन। साथ ही अनुरोध है कि आप साहित्य, संस्कृति व समाज सेवा सरीखे उदात्त तत्वों से अपनी जिंदगी को जोड़िए और अलौकिक आनंद व सच्चे सुख की अनुभूति प्राप्त कीजिए।

और अब अंत में आभार अभिव्यक्ति। सर्वप्रथम मैं संपादक मंडल की ओर से प्रबंध समिति के सचिव श्री अभिनव कृष्णजी के सदैव सराहनीय योगदान के लिए विशेष आभार व्यक्त करती हूँ। मैं प्राचार्य प्रो. संजय कुमार सिंह जी के प्रति विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ क्योंकि उनके सहयोग, प्रोत्साहन और विवेकपूर्ण मार्गदर्शन के फलस्वरूप भी पत्रिका का सम्यक प्रकाशन संभव हो सका है। छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. प्रकाश चौधरी एवं अनुशासन अधिकारी प्रो. रवींद्र यादव के प्रति भी मैं अपना हार्दिक आभार अभिव्यक्त करती हूँ। उन सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों के प्रति मैं आभारी हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत अंक को संजीव एवं साकार किया और अंत में संपादक मंडल के सभी सदस्यों, जिन्होंने रचनाओं के संग्रह एवं संकलन में सराहनीय सहयोग दिया है, सभी के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

पाठकों से मेरा अनुरोध है कि देश के भावी कर्णधारों के मानसिक स्तर एवं पैनी सोच को ध्यान में रखकर उन्हें साहित्य के प्रति प्रेरित तथा उत्साहित करें। पत्रिका में जो भी त्रुटियां रह गई है उनकी जिम्मेदारी स्वयं वहन करते हुए शुभकामनाओं सहित।



# भारत में नई शिक्षा नीति 2020: एक परिवर्तनकारी कदम

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास का आधार होती है। यह न केवल व्यक्तियों को सशक्त बनाती है बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था को भी समृद्ध करती है। भारत में शिक्षा प्रणाली को समय के साथ बदलती जरूरतों के अनुरूप ढालने के लिये समय समय पर सुधार किए गए हैं। इस कड़ी में, 29 जुलाई 2020 को भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) को मंजूरी दी, जो 34 साल पुरानी 1986 की शिक्षा नीति का स्थान लेती है। यह नीति भारत को 21 वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों के लिए तैयार करने का एक दूरदर्शी दस्तावेज है। शिक्षा को समग्र, लचीला, समावेशी और कौशल उन्मुख बनाना है ताकि प्रत्येक बच्चा अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सके। इस निबंध में नई शिक्षा नीति की प्रमुख विशेषताओं, इसके उद्देश्यों, लाभों, चुनौतियों और भविष्य में इसके संभावित प्रभावों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

## नई शिक्षा नीति 2020 का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में शिक्षा नीति का इतिहास स्वतंत्रता के बाद से ही विकसित होता रहा है। 1968 में पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई, जिसे 1986 में संशोधित किया गया। 1986 की नीति ने शिक्षा के प्रसार और गुणवत्ता में सुधार पर ज़ोर दिया, लेकिन यह बदलते वैश्विक परिदृश्य और तकनीकी प्रगति के साथ तालमेल नहीं बिठा सकी। 21 वीं सदी में डिजिटल क्रांति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वैश्वीकरण के दौर में भारत को एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की जरूरत थी जो युवाओं को न केवल नौकरी के लिए तैयार करे बल्कि नवाचार और नेतृत्व के लिए भी प्रेरित करे। नई शिक्षा नीति 2020 इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए लाई गई। इसे तैयार करने में डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति ने व्यापक शोध और जनता से सुझावों के आधार पर कार्य किया।

## नई शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएं

नई शिक्षा नीति को स्कूली और उच्च शिक्षा के साथ साथ तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में सुधार के लिए डिजाइन किया गया है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं: स्कूली शिक्षा में बदलाव नई संरचना (5+3+3+4), पारंपरिक 10+2 संरचना को बदल कर 5+3+3+4 मॉडल अपनाया गया है। इसमें फाउंडेशन स्टेज (3-8 वर्ष), प्री प्राइमरी स्टेज (8-11 वर्ष), मिडल स्टेज (11-14 वर्ष) और सेकेंडरी स्टेज (14-18 वर्ष) शामिल हैं। यह मॉडल बच्चों के संग ज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास के विभिन्न चरणों पर आधारित है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ECCE): 3-6 बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा को अनिवार्य किया गया है, जिससे उनकी नींव मजबूत होगी। मातृ भाषा और क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई, कक्षा 5 तक, और संभव हो तो कक्षा 8 तक मातृभाषा या स्थानीय भाषा में पढ़ाई को प्राथमिकता दी जाएगी। इससे बच्चों की समझ बढ़ेगी और शिक्षा अधिक प्रभावी होगी।

पाठ्यक्रम में सुधार: रटने की संस्कृति को खत्म कर आलोचनात्मक चिंतन, समस्या, समाधान और रचनात्मकता पर ज़ोर दिया जाएगा। विज्ञान गणित, कला और सामाजिक विज्ञान को एकीकृत रूप से बढ़ाया जाएगा।

मूल्यांकन में बदलाव: बोर्ड परीक्षाओं को कम तनावपूर्ण बनाने के लिए मॉड्युलर और लचीली प्रणाली शुरू की जाएगी। साल में दो बार परीक्षा देने का विकल्प भी होगा।

## उच्च शिक्षा में परिवर्तन

बहु विषयक शिक्षा: विश्व विद्यालयों में एकल विषय आधारित शिक्षा की जगह बहु विषयक दृष्टिकोण अपनाया जाएगा। उदाहरण के लिए, एक छात्र विज्ञान के साथ साथ साहित्य या कला भी पढ़ सकता है।

चार वर्षीय स्नातक डिग्री: नई नीति में चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम शुरू किया गया है, जिसमें पहले वर्ष में सर्टिफिकेट, दूसरे के डिप्लोमा, तीसरे में डिग्री और चौथे में ऑनर्स डिग्री डिग्री मिलेगी। यह लचीलापन छात्रों को अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने पर भी लाभ देगा।

राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन(NRF): अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए NRF की स्थापना की जाएगी, जो शोध के लिए फंडिंग और संसाधन उपलब्ध कराएगा।

एक नियामक प्रणाली: उच्च शिक्षा के लिये एकल नियामक संस्था ( हायर एजुकेशन कमीशन ऑफ इंडिया) बनायी जाएगी, जो गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करेगी।

प्रौद्योगिकी और डिजिटल शिक्षा डिजिटल इनफ्रास्ट्रक्चर: नेशनल एजुकेशन टेक्नोलॉजी फोरम (NETF) और डिजिटल प्लैटफॉर्म के जरिए ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा। ई-लर्निंग का विस्तार ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा की पहुँच बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए जाएंगे।

कोडिंग और तकनीकी कौशल: कक्षा 6 से कोडिंग और तकनीकी शिक्षा शुरुआत की जाएगी ताकि बच्चे डिजिटल युग के लिए तैयार हो।

## शिक्षक प्रशिक्षण और समावेशिता

शिक्षकों का विकास: शिक्षकों के लिये 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम और निरंतर प्रशिक्षण अनिवार्य होगा। सामाजिक समावेश: लिंग, जाति और आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव को खत्म करने के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए भी समावेशी शिक्षा पर ज़ोर है।

## नई शिक्षा नीति के उद्देश्य

NEP 2020 का मुख्य उद्देश्य भारत को 2040 तक एक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था बनाना है। इसके लिए नीति में निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं:

1. शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (GER) को 100% तक ले जाना, शिक्षा पर जीडीपी का 6% खर्च करना।
2. भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपराओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना।
3. छात्रों को वैश्विक नागरिक बनाना, जो नैतिकता, सहानुभूति और नेतृत्व के गुणों से युक्त हो।

## लाभ और संभावनाएँ

नई शिक्षा नीति 2020 के कई लाभ हैं, जो इसे एक परिवर्तनकारी कदम बनाते हैं:

1. कौशल आधारित और बहु विषयक शिक्षा भारत युवाओं को वैश्विक नौकरी बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाएगी।
2. सांस्कृतिक संरक्षण: मातृभाषा और भारतीय ज्ञान प्रणालियों (जैसे वेद, योग और आयुर्वेद) पर ज़ोर से छात्र अपनी जड़ों से जुड़ेंगे।
3. लचीलापन और स्वतंत्रता: छात्रों को अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनने की आजादी मिलने से उनकी रचनात्मक और संतुष्टि बढ़ेगी।
4. सामाजिक समानता: वंचित समुदायों, लड़कियों और विशेष बच्चों के लिए शिक्षा के अवसर बढ़ने से सामाजिक असमानता कम होगी।
5. आर्थिक विकास: कुशल और नवोन्मेशी कार्यबल भारत को आर्थिक महाशक्ति बनाने में मदद करेगा।

## चुनौतियाँ और समाधान

हर नीति की तरह NEP 2020 के सामने भी कुछ चुनौतियाँ हैं:

- वित्तीय संसाधन: शिक्षा पर 6% जीडीपी खर्च का लक्ष्य हासिल करना मुश्किल है। इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारों को बजट बढ़ाना होगा।
- बुनियादी ढांचा: ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों, शिक्षकों और डिजिटल सुविधाओं की कमी एक बड़ी समस्या है। इसे दूर करने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी (PPP) मॉडल मददकार हो सकता है।
- शिक्षक प्रशिक्षण: लाखों शिक्षकों को नई पद्धतियों के लिए तैयार करना समय और संसाधन मांगता है। ऑनलाइन प्रशिक्षण और कार्यशालाएं इस दिशा में प्रभावी होंगी।
- जागरूकता: नीति के लाभों को जनता तक पहुंचाने के लिए व्यापक प्रचार और अभियान जरूरी है।

## भविष्य में प्रभाव

यदि NEP 2020 को प्रभावी ढंग से लागू किया गया तो यह भारत की शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह बदल सकता है। ना केवल छात्रों को बेहतर भविष्य देगा बल्कि भारत को वैश्विक मंच पर एक शैक्षिक और आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित कर देगा। यह नीति भारत की प्राचीन 'विश्व गुरु' इस अपने को फिर से साकार करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

नई शिक्षा नीति 2020 भारत के लिए एक सुनहरा अवसर है। शिक्षा को औपचारिक ढांचे से बाहर निकालकर जीवन का अभिन्न अंग बनाने की कोशिश करती है। इसके जरिये भारत न केवल अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करेगा, बल्कि आधुनिक तकनीक और नवाचार के साथ आगे बढ़ेगा। हालांकि, इसकी सफल होने के लिए सरकार, शिक्षकों, अभिभावकों और समाज के सभी वर्गों को मिलकर काम करना होगा। यदि यह नीति इ अपने लक्ष्यों को हासिल कर लेती है तो यह निश्चित रूप से भारत को 21 वीं सदी का ज्ञान केंद्र बनाएगी।

डॉ. क्रांति बोध  
हिन्दी विभाग

“किसी बच्चे की शिक्षा अपने ज्ञान तक सीमित मत रखिये  
क्योंकि वह किसी और समय में पैदा हुआ है” - रविन्द्रनाथ टैगोर



## हिंदी साहित्य व बाजारवाद

साहित्य शब्द अपने मूल में हित का भाव समाहित किए हुए हैं। हित मानव का, हित सृष्टि का। साहित्य की रचना मानव हित अथवा उनके कल्याण व मंगल की भावना हेतु की जाती रही है। इसलिए कवि तुलसीदास जी भी कहते हैं " वही साहित्य धन्य होता है जो गंगा के समान सबके लिए हित का होता है।" इसलिए युगीन साहित्यकार की सामाजिक गुणवत्ता तथा मानवीय हित पर बल देते रहे हैं। काव्य के विभिन्न प्रयोजन बताए गए हैं जैसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, यश, आनंद आदि। यद्यपि इनमें अर्थ को काव्य के एक प्रायोजन के रूप में प्राचीन काल से माना जाता रहा है तथापि, वह काव्य का मुख्य प्रयोजन नहीं था। यदि हम हिंदी साहित्य को विभिन्न काल खंडों के माध्यम से देखने का प्रयास करते हैं तो पाते हैं कि विभिन्न खंडों में काव्य के प्रायोजन परिवर्तनशील रहे हैं। आदिकालीन हिंदी साहित्यकार आश्रयदाता के आश्रय में रहकर कविकर्म करता रहा था, इसलिए वह अपने रचनाकर्म में निरंतर अपने आश्रयदाता की रुचि और अरुचि का ध्यान रखता था। उसकी आजीविका का आधार आश्रयदाता से प्राप्त वृत्ति थी। इस काल की कविता में राज्य प्रशंति की प्रवृत्ति मुख्य रूप से पाई जाती है। भक्तिकाल का कवि स्वांत सुखाय की भावना से कवि कर्म करता है। भक्तिकालीन कवियों की कविता का लक्ष्य मनुष्य का कल्याण है। इस युग का कवि सामाजिक मूल्यों का महत्त्व प्रतिपादित करता है तथा अपनी रचना के माध्यम से समाज का मार्ग भी प्रशस्त करता है। साहित्य का एक उद्देश्य मानव कल्याण अथवा मंगल की भावना होता है और इस युग का कवि इसी उद्देश्य को केंद्र में रखकर साहित्य सृजन में रत रहता है, जिससे समूची मानवजाति शांति, सौहार्द व सहिष्णुता के साथ एक स्वस्थ समाज का निर्माण करते हुए अपना जीवन यापन कर सके। इसके विपरीत उत्तर मध्यकालीन काव्य की रचना पुनः एक ऐसे परिवेश में होती है जहाँ पर कवि आश्रय दाता के दरबार में रहकर साहित्य सृजन में प्रवृत्त होता है। स्पष्ट ही है कि इन परिस्थितियों में अपनी आजीविका उपलब्ध कराने वाले व्यक्ति को प्रसन्न करना, दरबार में अपनी स्थिति सुदृढ़ करना तथा बेहतर जीवन यापन हेतु अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा करना जैसे गुण एक कवि को प्रभावित करते हैं। परिणामस्वरूप उसके कवि कर्म का केंद्र मानव कल्याण न होकर आश्रयदाता होता है। जहाँ दरबार में आश्रयदाता को खुश करने पर प्रत्येक पद पर अशरफी या अन्य किसी रूप में मूल्य की प्राप्ति होती थी, वहाँ वह धन के लिए कवि कर्म करता है। यद्यपि अपवाद प्रत्येक समय में विद्यमान होते हैं। इसी कथन की पुष्टि करता हुआ बिहारी का उदाहरण भी हमें मिलता है। जो आश्रयदाता पर निर्भर होने के पश्चात भी अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए साहित्यिक मूल्यों में समझौता नहीं करता। राजा जयसिंह को उसके कर्तव्य का बोध कराने का साहस करता हुआ यह रचनाकार अपने निम्न पद के माध्यम से स्वयं के कवि कृतव्य का भी निर्वहन करता है।

**नहीं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास इही काल।**

**अली कलि ही सौं बिंधयो, आगे कौन हवाल।**

आधुनिक हिंदी साहित्य की शुरुआत भारतेंदु हिंदू युग से मानी जाती है। इस युग के साहित्यकारों के केंद्र में समाज, संस्कृति और देश प्रेम की भावना विद्यमान थी। भारतेंदु युग व उत्तरोत्तर द्विवेदी युग के सभी साहित्यकार मानवीय मूल्यों पर आधारित साहित्य की रचना कर रहे थे। डॉक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का यह कथन "मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है" को मानो ये साहित्यकार पूरी तरह से चरितार्थ कर रहे थे। इतना ही नहीं इस युग के साहित्यकार लेखन व संपादन के साथ साथ समाज को गति व दिशा देने वाले सामूहिक व सामाजिक कार्य भी कर रहे थे। ऐसे साहित्यकारों के बहुआयामी व्यक्तित्व को देखने से यह मालूम होता है कि साहित्य कर्म उनका निजी कार्य या व्यवसायी नहीं था बल्कि एक सामाजिक अथवा सार्वजनिक कार्य था। ये समूह में रहकर अपनी रचनाधर्मिता को पूर्ण करते थे। आज कल तो साहित्य में इस प्रकार की प्रवृत्ति का नितांत अभाव दिखाई पड़ता है।

बदलते युग में साहित्य के मानदंड और उनके मूल्यों में भी परिवर्तन हुआ है। भूमंडलीकरण व उत्तरीकरण की गूंज हिंदी साहित्य में भी लक्षित होती है। किसी भी देश अथवा काल में लिया गया साहित्य तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा राजनैतिक प्रभावों से अछूता नहीं रह सकता। इसलिए साहित्य को समाज के दर्पण के रूप में भी अभिव्यक्ति मिली है। इस भूमंडलीकरण के चलते इसके एक प्रमुख आयाम बाजारवाद अथवा उपभोक्तावादी दृष्टि चारों तरफ देखी जा सकती है। इसी बाजार वाली सोच की अभिव्यक्ति हिंदी साहित्य के नए कवियों द्वारा रचित नई कविता में जहाँ तहाँ मुखर है। आधुनिक कालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा रचित 'गीत फ़रोश' कविता के माध्यम से इसे समझा जा सकता है।

**जी हाँ हुज़ूर,  
मैं गीत बेचता हूँ,  
मैं तरह तरह के गीत बेचता हूँ,  
मैं किस्म किस्म के गीत बेचता हूँ।**

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

जी माल देखिये, दाम बताऊंगा।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

हे गीत बेचना वैसे बिल्कुल पाप,  
क्या करूँ मगर लाचार,  
हारकर गीत बेचता हूँ।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

यह पंक्तियाँ मन को छू जाती है कि वह लाचार होकर किसी मजबूरी से विवश ऐसा करने को बाध्य हैं। परन्तु आज का गीतकार, गजलकार या फिर साहित्यकार शोहरत व धन पाने के लिए भी ऐसा करता है। साहित्यकार भी इन परिवेश में हो रहे परिवर्तन से बच नहीं पाया है। बाजारवाद से प्रभावित हिंदी साहित्य की बात करें तो कह सकते हैं कि बिकता वही है जो बाजार के लिए उपयोगी हो या फिर समाज में जिस विषय की मांग हो। वर्तमान समय में सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य भी तेजी से बदले हैं या यूँ कहें कि परिवर्तित परिवेश ने नए नए आयाम ग्रहण किए हैं। जिससे विवेक, जवाबदेही, दायित्व, मूल्य बोध जैसे शब्द अपनी चमक होते जा रहे हैं। अब साहित्य कर्म का संसार भी सीधा सरल नहीं है। आज साहित्यकार भी बाजार के साथ ताल से ताल मिलाता नजर आ रहा है। रचनाकारों का एक वर्ग अब भी ऐसा है जो जो स्वांतःसुखाय लिख रहा है। ऐसे रचनाकारों को ना तो आर्थिक लाभ मिल पाता है और प्रसिद्धि भी कम ही मिलती है। लेकिन दूसरी ओर ऐसे साहित्यकारों की भी कमी नहीं है, जिनके द्वारा बाजार को केंद्र में रखकर साहित्य सर्जना की जा रही है और बाजार की मांग और पूर्ति सिद्धांत का निर्वाह हो रहा है, जिससे वह भी सेलिब्रिटी बन सके। हिंदी में जो रचनाएं मात्र जीवन मूल्यों को ध्यान में रखकर लिखी जा रही है, वे बाजार की दृष्टि से सफल नहीं हो पाती है। ऐसे ही भावों को व्यक्त करती योगीन गजलकार उदयभानु की निम्नलिखित पंक्तियाँ दृष्टव्य है:

क्या समय आ गया है कोई दुख किसी का समझता नहीं,  
अपनी सूरत भी आईने में आजकल अजनबी हो गयी है।

आज बाजारवाद चहु ओर अपना प्रभाव बढ़ाता जा रहा है। इस बाजारवाद की होड़ में सिनेमा जगत मनोरंजन के लिए घटिया द्विअर्थी गानों को आकर्षक धुनों के साथ परोस रहा है। फिल्मकार एक ऐसे दर्शन वर्ग को चिन्हित कर फिल्मों में लगाए गए धन को कई गुना बढ़ाना कमाना ही नहीं चाहता वरन वह प्रसिद्धि भी पाना चाहता है। चाहे इसके लिए उसे निम्नस्तरीय तथा समाज के लिये घातक कथानक व संवादों का सहारा ही क्यों न लेना पड़े। तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन और भौतिक सुख संसाधनों की दौड़ में कहीं मनुष्यता छूट न जाए और बाजार मनुष्यता पर हावी न हो जाए, इसके लिए साहित्यकार को सजग दिशा निर्देश की भूमिका निभाने की आवश्यकता है।

प्रोफेसर गीता शर्मा  
हिंदी विभाग

## “माँ के हाथों का खाना” (लघु कहानी)

राजेश एक बड़े शहर में नौकरी करता था। पैसे की कोई कमी नहीं थी, लेकिन वक्त की कमी थी। माँ बार बार गांव से बुलाती लेकिन वे हमेशा कहता “माँ बहुत काम है बाद में आऊंगा।”

समय बीतता गया, एक दिन माँ का फ़ोन आया “बेटा मैंने तेरे पसंदीदा पराठे बनाए हैं कब आ रहा है?” राजेश ने फिर वही जवाब दिया, “माँ व्यस्त हूँ बाद में आऊंगा।”

कुछ दिनों बाद एक खबर आई माँ नहीं रही। दौड़ते हुए गांव पहुंचा। घर में सन्नाटा था। किचन में माँ की डायरी मिली जिसमें लिखा था “राजू के लिए पराठे बनाए लेकिन वो नहीं आया। अगली बार जब आएगा तब गर्म गर्म पराठे खिलाऊंगी।”

राजेश की आँखों से आंसू झरने लगे। उसने महसूस किया कि वक्त किसी का इंतजार नहीं करता।

**सीख-** अपनों के साथ समय बितायें क्योंकि जब वे नहीं रहेंगे तब पश्चाताप ने के सिवा कुछ नहीं बचेगा।

सुधा सिंह  
बी.ए द्वितीय वर्ष

## हिंदी काव्य में प्रकृति चित्रण

मनुष्य स्वभाव से ही सौन्दर्यप्रेमी माना जाता है। प्रकृति अपने आप में सुंदरता का स्रोत रहे। मनुष्य एवं प्रकृति का संबंध अनादिकाल से है। मनुष्य को साहित्य सृजन की मूल प्रेरणा प्रकृति के सौंदर्य एवं उसकी रहस्यमय प्रवृत्तियों को देखकर एवं जानकर प्राप्त हुई। विशेषतौर से कवियों ने प्रकृति के स्वरूप का चित्रण विभिन्न संख्याओं के संदर्भ में किया है। वैदिक साहित्य प्रकृति संबंधी ऋचाओं और सूक्तियों से परिपूर्ण हैं। ऋग्वेद काल से ही प्रकृति चित्रण की सुदृढ़ एवं समृद्ध परंपरा का विकास हुआ। उसे ग्रंथों में ऊषा, इन्द्र इत्यादि को आलौकिक शक्तियों के रूप में उनका मानवीकरण किया गया है। प्रातः कालीन समय के एक कुमारी बाला के रूप में चित्रण करते हुए सूर्य को उसका प्रेमी बताया गया है। कहीं पर प्रकृति के भयानक स्वरूप का भी चित्रण किया गया है। परवर्ती लौकिक संस्कृत काल का साहित्य प्रकृति चित्रण सौंदर्य को अपने में समाविष्ट किये हुए है। कालिदास की रचना अभिज्ञानशाकुन्तलम् एवं मेघदूतम् में प्राकृतिक सौंदर्य का मनोहारी चित्रण किया गया है। बाणभट्ट की कादम्बरी भी प्राकृतिक चित्रण का बेजोड़ काव्य है। हिंदी साहित्य की प्रारंभिक युग आदि काल में कविगण, आलंबन और उद्दीपन के रूप में ही प्रकृति का चित्रण करते आए हैं। किंतु अवसर की उपलब्धता पर आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल में अपने काव्य के माध्यम से कवियों ने प्रकृति पर बहुत कुछ रचा है। प्रकृति भी सदैव मानव के साथ रही एवं मनुष्य के सभी क्रियाकलापों में अपना योगदान निःस्वार्थ भाव से देती आ रही है। मनुष्य के सभी प्राथमिक आवश्यकताओं को भी परिपुष्ट करती चली आ रही है। सुंदरता की प्रत्यक्ष मूर्ति बनकर प्रकृति मानव तथा साहित्यकार के मन को मोहने में सदैव सफल रही है। अतः संपूर्ण हिंदी साहित्य पर प्रकृति सौंदर्य की विशेष छवि स्पष्ट झलकती है।

आदिकाल में प्रकृति चित्रण:

हिंदी के प्रारंभिक काव्य में वीर गाथाएं भरी पड़ी है। प्राकृतिक चित्रण केवल कुछ रूपों में आलंबन एवं उद्दीपन में ही हुआ है। रासो ग्रंथों में रचियता जहाँ सौंदर्य निरूपण हेतु प्रकृति के उपमान ग्रहण किए हों, वहीं संयोग वियोग की अनुभूतियों के उद्दीपन रूप में विभिन्न ऋतुओं का वर्णन किया है। पृथ्वीराज रासो में प्रकृति चित्रण की अनुपम छठा दर्शनीय है। बीसलदेव रासो की नायिका की विरह अग्नि भादो मास की वर्षा की झड़ियों से उद्दीप्त हो उठती है।

भादबऊ बरसई छई मगहर गंभीर,

जल थल महियल सह भरया नीर। (पृथ्वीराज रासो)

सूनी सेज विदेश पिया,

दोई दुख नाल्ह क्यों सइहणा जाई। (चंद्रवरदायी)

जायसी कृत पद्मावती में भी प्रकृति का चित्रण अत्यंत मनोहारी के रूप से किया गया है। मैं अभिनव जयदेव की संख्या वाले कवि विद्यापति को नारी रूप के वैभव को अंगराग से सुसज्जित करने की कला में जैसी दक्षता प्राप्त है, वह अन्य किसी समकालीन कवि को नहीं मिली। उदाहरण

सुंदर बदन चारू अरुण लोचन काजर रंजती भेला।

कनक कमल माझ काल भुजंगीनी श्रीयुक्त खंजन खेला।

सरस बसंत समय भले पावली दक्षिण पवन बह धीरे।

सपनउ रूप वचन इक भाखिय मुखि ते दूरी करू चीरे॥

पूर्वमध्यकालीन हिंदी काव्य को भक्ति काव्य भी कहा जाता है। हिंदी साहित्य में भक्तिकाल, निर्गुण धारा एवं सगुण धारा नामक दो भागों में विभाजित किया जाता है। पल में ही आध्यात्मिक प्रेम का वर्णन करते हुए कहीं प्रकृति के उद्दीपन रूप का चित्रण हुआ है।

दौ लाग्यो सादर जलिया, पंथी बैठे आई।

दाधी दे न पालवै सतगुरु माया लगाय॥

सूरदास का 'देखीमत कालिंदी अतिकारी' नामक पद मानवीकरण का श्रेष्ठ उदाहरण है।

रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि गोस्वामी तुलसीदास के काव्य ग्रंथों में भी प्रकृति चित्रण की विभिन्न प्रणालियाँ का प्रयोग हुआ है।

देखो राम पथिक नाचत मुदित मोर

के पै कलाप बर बरहीं किरावत, गावत कल कोकिल किशोर।

उत्तर मध्यकाल हिंदी काव्य को रीतिकाव्य कहा जाता है। रीतिकाव्य में प्रकृति मुख्यतः उद्दीपन और अलंकारों से ही प्रयुक्त हुई है। रीतिकाल के अधिकांश कवि प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता के प्रति उदासीन थे। अतः सेनापति बिहारी देव, घनानंद आदि गिने कवियों का कविपय उक्तियों में ही प्रकृति के स्वभाविक चित्र मिलते हैं। कवि देव का यह छंद दर्शनीय है।

डाल हुई पलना बिछौना नवपल्लव के।

सुमन झंगूला सोहै तब छवि भारी दै।

आधुनिक हिंदी साहित्य का प्रथम चरण भारतेंदु युग कहलाता है। इस युग में प्रकृति प्रेम और प्रकृति चित्रण की दृष्टि से हम भारतेंदु युग से हिंदी कविता का एक नवीन स्वरूप देखते हैं। भारतेंदु को यमुना वर्णन एवं गंगा वर्णन कविताएँ दर्शनीय हैं। प्रेमघन ने भी प्रकृति के प्रति अपना अनुराग व्यक्त किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, राय देवी प्रसाद पूर्ण, सत्य नारायण कविरत्न, हरिबोद्ध, मैथिली शरण गुप्त, राम नरेश त्रिपाठी आदि कवियों की काव्य कृतियों में प्रकृति के प्रेम हेतु सच्चा अनुराग दिखाई पड़ता है।

प्रकृति का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान छायावादी काव्य में ही प्राप्त हुआ छायावादी कविता प्रकृति चित्रण में युगांतर प्रस्तुत करती है। उदाहरण:

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,

तोड़ प्रकृति से भी माया,

बाल तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन। (पंत)

उषा सुनहले तीर बरसती, जयलक्ष्मी सी उदित हुई।

उधर पराजित कालरात्रि भी, जल में अंतर्निहित हुई।। (जयशंकर प्रसाद)

अज्ञेय एवं माखनलाल चतुर्वेदी ने भी राष्ट्र की एकता एवं प्रेम को दर्शाने के लिए प्रकृति को माध्यम बनाया

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।

चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।। (माखनलाल चतुर्वेदी)

महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को प्रकृति चित्रण संबंधी विशेष सफलता प्राप्त होने के कारण प्रकृति प्रेमी कहते हैं।

रोमांचित सी लगती वसुधा आई जौ गेहूं में बाली।

अरहर सोनई की सोने की किंकनिया है शोभालाली।।

वे प्रकृति को ही सर्वस्व मानते हैं। इससे अतिरिक्त प्रकृति प्रेमी कवियों से नागार्जुन, शिवमंगल सिंह सुमन, महादेवी वर्मा, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, नरेश सक्सेना, माखनलाल चतुर्वेदी, केदारनाथ अग्रवाल, उमाशंकर जोशी, आलोक धन्वा, मंगलेश डबराल, लीलाधर जगूड़ी, मुक्तिबोध सुभद्राकुमारी चौहान आदि आधुनिक काल के वे प्रसिद्ध कवि/ कवित्री हैं जिनके काव्य एवं गद्य में प्रकृति का मनोरम चित्रण मिलता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य के विकास में प्राकृतिक सौंदर्य की वो छाप साहित्यकारों पर पड़ी वह अद्वितीय साहित्य की रचना में मील का पत्थर है।

विश्व के प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य से आधुनिक हिंदी साहित्य में विशेष रूप से काव्य में प्रकृति ने साहित्यकारों का ध्यान आकृष्ट किया है। इन्होंने अपने साहित्य में प्रकृति के विभिन्न रूपों को सूक्ष्मता से परिष्कृत व परिमार्जित रूप में पेश किया हो अतः प्रकृति के उपादानों का साहित्य के विकास को चरमोत्कर्ष स्तर उपलब्ध कराने में भी अभूतपूर्व योगदान है।

शिवम त्रिपाठी

शोध छात्र

## सपनों की उड़ान

चलो आसमान को छु आएं, सपनों की नई राह बनाएं।

रुकावटें जो भी आएँगी, हम हौसलों से मिटाएँ।

हर अँधेरी रात के पीछे, सवेरा मुस्कुराता है।

जो गिरकर फिर संभल जाये, वही जीवन को पाता है।

संघर्ष की ये आँधियाँ, हमें रोक नहीं सकती।

जो जलता है रोशनी बनकर, उसको छाँए नहीं ढकती।

चमकेंगे हम भी एक दिन, नयी किरण के साथ यहाँ।

बस मेहनत को साथी बनाकर, चलना है हर पल सदा।

सुधा सिंह

बी ए। द्वितीय वर्ष

# अंतरिक्ष का सफर सुनीता विलियम्स

सुनीता विलियम्स का जन्म 19 सितम्बर 1965 को ओहायो अमेरिका में हुआ था। उनके पिता दीपक पांडेय भारतीय मूल के हैं जो अहमदाबाद गुजरात से हैं।

सुनीता विलियम्स ने यू एस ए नॉवल अकादमी से भौतिकी विज्ञान में स्नातक (१९८७) और फ्लोरिडा इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी से मास्टर्स (1995) किया है।

सुनीता विलियम्स 1998 में नासा की अंतरिक्ष यात्री बनी। सुनीता विलियम्स ने एक्सपेंडिशन 1415 (2006-2007) में 195 दिन अंतरिक्ष में व्यतीत किये और 4 स्पेसवॉक किये, फिर एक्सपेंडिशन 32133 (2012) में 127 दिन रहकर 3 स्पेसवॉक (50 घंटे 44 मिनट) में पूरे किये। बोइंग स्टारलाइनर मिशन के दौरान सुनीता विलियम्स ने अंतरिक्ष में सबसे अधिक समय बिताने वाली महिला बनने का गौरव हासिल किया।

बोइंग स्टारलाइनर मिशन का उद्देश्य है बोइंग के नए स्टारलाइनर कू कैप्सूल का मानव परीक्षण, अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) तक सुरक्षित मानव यात्रा और वापसी की पुष्टि तथा ISS पर वैज्ञानिक अनुसन्धान और तकनीकी परीक्षण जिससे मंगल गृह जैसे ग्रहों पर मानव को बसाया जा सके।

यह मिशन 5 जून, 2024 बोइंग कस्ट स्पेसक्राफ्ट से 8 दिन की समयावधि के लिए केनेडी स्पेस सेंटर फ्लोरिडा से लांच किया गया परन्तु तकनीकी समस्या (हीलियम रिसाव और प्रणोदन प्रणाली की समस्या) के कारन यह मिशन 286 दिनों के बाद 19 मार्च 2025 को सफल हुआ।

प्रारम्भ में नासा की असफलता माना जा रहा था क्योंकि अधिक समय तक अंतरिक्ष में शून्य गुरुत्वाकर्षण के कारण हड्डियों और मांसपेशियों में कमजोरी, हृदय और रक्त संचार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे अंतरिक्ष यात्री के जीवन को भी खतरा होता है।

सुनीता विलियम्स और बेरी बुच को नासा की मेडिकल टीम उनकी फिजिकल थेरेपी पर ध्यान दे रही है। इसके साथ ही, पोषण और मानसिक स्वास्थ्य की भी निगरानी कर रही है। पृथ्वी पर लौटने से पहले इन्होंने पृथ्वी की 4500 बार परिक्रमा की थी। 17,500 मील प्रति घंटा की गति से 12 करोड़ मील की यात्रा की। 286 दिन अंतरिक्ष में बिताने के बाद सुनीता विलियम्स और उनके साथी बुच विलमोर धरती पर कैप्सूल से बाहर आये। उनके चेहरे पर एक मुस्कान थी। यद्यपि वो जल्दी से सामान्य जीवन नहीं जी पाएंगे। उन्हें एक मुकम्मल रिकवरी प्रक्रिया से गुजरना होगा। विशेषज्ञ यह मानते हैं कि लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहने वाले के स्वास्थ्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है मनोविज्ञान में भी बदलाव आता है। सबसे बड़ा बदलाव तब आता है जब अंतरिक्ष यात्री माइक्रोग्रेविटी में होती है। माइक्रोग्रेविटी वह है स्थिति है जब कोई इंसान यथा वस्तु भारहीन हो जाते हैं, अंतरिक्ष में चूंकि गुरुत्वाकर्षण काम नहीं करता है, इसलिए अंतरिक्ष यात्री भारहीन हो जाते हैं। माइक्रोग्रेविटी में खून और सेरेब्रोस्पाइनल फ्लूड नीचे से ऊपर शिफ्ट होने लगते हैं। ऐसे में आंखों और मस्तिष्क के आकार में बदलाव की आशंका प्रबल होती है। सीधा चलना, खड़ा होना और शरीर का संतुलन बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण काम होता है। अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से धरती पर लौटें सुनीता विलियम्स ने पत्रकार के सवाल के जवाब में कहा "भारत शानदार है।"

सुनीता विलियम्स की यह यात्रा न केवल वैज्ञानिक उपलब्धि है, बल्कि उन्होंने सिद्ध कर दिया कि यदि इरादे मजबूत हों तो अंतरिक्ष भी हमारी सीमाएं नहीं बना सकता। उनकी कहानी हमें सिखाती है कि कठिनाई केवल हमारे हासिले की परीक्षा है।

शिवानी  
बी ए पंचम सेमेस्टर

“उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की  
प्राप्ति न हो जाए” - स्वामी विवेकानन्द

## हिंदी की व्यथा

हम हैं हिंदुस्तानी बड़े गर्व से सब कहते हैं, फिर मातृभाषा हिंदी से इतना दूर दूर क्यों रहते हैं?

हर तरफ अंग्रेजी की है पुकार, हिंदी लगती अब सबको बेकार।

अंग्रेजी चलती ऑफिस में, अंग्रेजी चलती कॉलेज में,

अंग्रेजी है तो शिक्षित है हर कोई, अंग्रेजी बिन शिष्ट नहीं है कोई।

हिंदी रह गयी बस बातों में, या सिर्फ रह गई किताबों में,

आने वाले कल में शायद, रह गयी बस यादों में।

क्या यह सामाजिक पतन नहीं, हिंदी नहीं तो वतन नहीं,

इसकी आन क्या अपनी आन नहीं, इसकी शान क्या अपनी शान नहीं?

अब शपथ ये सबको खानी है, हिंदी की खोई प्रतिष्ठा लौटानी है

तभी हो सकेगा देश का विकास, जब हिंदी से गुंजित हो आकाश।

लवीश चौहान  
बी.एससी चतुर्थ सेमेस्टर

# भारत की सामाजिक आर्थिक असमानता को दूर करने में जाति जनगणना की भूमिका

21 वीं सदी में हमें 19वीं सदी के भारतीय समाज जैसी छूआछूत की घटना तो देखने को आम तौर पर नहीं मिलती। आज सभी छात्र बिना किसी भेदभाव के एक साथ कक्षा में बैठते हैं। संविधान का अनुच्छेद 17 जो छूआछूत की प्रथा की समाप्ति तथा ऐसे कृत्य को दंडनीय अपराध बनाता है। इसलिए ऐसी किसी भी रुढ़िवादी प्रथा को कोई संभावना नहीं है। लेकिन फिर 2020 में ये खबर आती है जहाँ गुजरात के पालनपुर में दलित समुदाय के 27 वर्षीय व्यक्ति को उसकी बारात में जबरन घोड़े में उतार दिया गया, जातिवाद गालियां दी गयी और कथित तौर पर उसकी पिटाई की गयी। अद्यतन ऐसी अन्य घटनाएं भी प्रकाश में आती रहती है।

उपर्युक्त चर्चा भारत में जातिगत अत्याचार पर प्रकाश डालती है। जाति, भारतीय समाज की अनचाही व्यवस्था बन गयी है तो सामाजिक आर्थिक गतिशीलता को प्रभावित करना जारी रखती है। ऋग्वेदिक काल की वर्णव्यवस्था व्यवसाय पर आधारित तथा लचीली थी, लेकिन कालांतर में व्यवसायी आधारित जाति व्यवस्था के जन्म आधारित जाति व्यवस्था बनने के पश्चात इसका स्वरूप कठोर हो गया। ज्योतिबा फुले ने कहा था “बाल काटना नाइ का धर्म नहीं बल्कि व्यवसाय है। चमड़े की सिलाई मोची का धर्म नहीं बल्कि व्यवसाय है। इसी तरह पूजा करना ब्राह्मण का धर्म नहीं बल्कि व्यवसाय है।”

2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आबादी का 16.6% हिस्सा अनुसूचित जाति से है। भारत के त्वरित आर्थिक विकास और विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति के बावजूद जातिगत असमानता आज भी व्याप्त है। संवैधानिक सुरक्षा उपायों और शिक्षा सरकारी नौकरियों और विधायिकाओं में आरक्षण जैसी सकारात्मक कार्यवाही के बाद भी जाति आधारित असमानताएं बनी हुई हैं। केंद्रीय कानून मंत्रालय की एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार 2018 से 2022 के बीच नियुक्त सभी उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों में से 79% उच्च जातियों से हैं। आरटीआइ आवेदन पर सरकार की प्रतिक्रिया के अनुसार केंद्र सरकार में सचिव रैंक के 81 अधिकारियों में से केवल दो अनुसूचित जाति से और तीन अनुसूचित जनजाति से हैं।

इसलिए जातिगत असमानताओं को कम करने, संसाधनों पर सभी के समान अधिकार सुनिश्चित करने तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग ने हाल के वर्षों में जातिगत जनगणना की मांग को बढ़ाया है। विगत वर्षों में बिहार, तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेश राज्य में जातिगत जनगणना का होना इसका उदाहरण है। बिहार सरकार ने 2023 में अपना जाति आधारित सर्वेक्षण कराया। निष्कर्षों से पता चला कि पिछड़े और अत्यंत पिछड़े वर्गों का भारी वर्चस्व है जो राज्य की आपत्ति का 60% से अधिक हिस्सा है। इसने इन समूहों को सामाजिक आर्थिक स्थितियों का आकलन करने के लिए एक व्यापक जाति जनगणना की आवश्यकता के बारे में राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा को फिर से हवा दे दी है।

जातिगत जनगणना का उद्देश्य जनसंख्या की जाति संरचना पर व्यापक डेटा एकत्र करना है। यह सामाजिक आर्थिक विषमताओं को दूर करने में महत्वपूर्ण है। इस तरह के डेटा अधिक प्रभावी नीतियों को आकार देने में मदद कर सकते हैं जिससे सरकार को उन जगहों पर हस्तक्षेप करने में सक्षम बनाया जा सकता है जहाँ उनकी सबसे अधिक आवश्यकता है असमानताओं को कम करने और संसाधनों तक अधिक न्यायसंगत पहुँच सुनिश्चित करने के लिये। जाति जनगणना इन असमानताओं को दूर करने में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम कर सकती है। ये क्षेत्रों और आर्थिक क्षेत्रों में जाति समूह के वितरण पर विस्तृत डेटा प्रदान करता है और बहिष्कार और हाशिए पर जाने के पैटर्न की पहचान करने में मदद करेगा।

वर्तमान में भारत की आधिकारिक जनगणना जो हर 10 साल में आयोजित की जाती है, जनसांख्यिकीय डेटा एकत्र करती है, लेकिन इसमें अनुसूचित जाति तथा जनजाति को छोड़कर अन्य जाति पर विस्तृत जानकारी शामिल नहीं होती है। बाहर जाति जनगणना 1931 में ब्रिटिश शासन के दौरान की गई थी। तब से जाति के आंकड़ों की अनुपस्थिति ने विभिन्न जाति समूहों की वर्तमान सामाजिक आर्थिक स्थितियों को समझने में एक शून्यता की स्थिति पैदा कर दी है। 2011 में आयोजित सामाजिक, आर्थिक और जाति जनगणना (SECC) इस अंतर को दूर करने का एक प्रयास था, लेकिन एकत्र किए गए डेटा को विभिन्न विधियों के कारण नीति निर्माण के लिए अपर्याप्त माना गया था। हालांकि हाल के वर्षों में एक अद्यतन और व्यापक जाति जनगणना की मांग ने ज़ोर पकड़ा है। क्योंकि नीतिनिर्माताओं और सामाजिक न्याय अधिवक्ताओं का तर्क है कि निरंतर असमानताओं को दूर करने के लिए यह आवश्यक है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गाँधी ने कहा था कि “जाति जनगणना नीति निर्माण का आधार है।”

राष्ट्रीय जनता दल (राजद), समाजवादी पार्टी (सपा) और जनता दल (यूनाइटेड) जैसे क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने केंद्र सरकार से जाति जनगणना कराने की मांग की है, जिसका उद्देश्य अद्यतन आंकड़ों के आधार पर आरक्षण नीतियों की समीक्षा करना है। वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि मौजूदा आरक्षण कोटा जो उन्हें 131 की जनगणना के पुराने आंकड़ों पर आधारित है, पिछड़ी जातियों और हाशिए पर पड़े समुदाय की वर्तमान सामाजिक आर्थिक स्थितियों को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं करता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने ऐतिहासिक निर्णयों के माध्यम से सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए डेटा आधारित नीति निर्माण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। इंद्रा साहनी बनाम भारत संघ या मंडल आयोग मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण की वैधता को बरकरार रखा, लेकिन कुल आरक्षण को 50% तक सीमित कर दिया, जिसके बाद आरक्षण नहीं बढ़ाया जा सकता था। हालांकि, न्यायालय ने आरक्षण की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए सामाजिक आर्थिक डेटा के आधार पर समय समय पर समीक्षा की आवश्यकता पर भी ज़ोर दिया।

एक व्यापक जाति जनगणना सरकार के विभिन्न जाति समूहों की सामाजिक आर्थिक स्थितियों की बेहतर पहचान करने में सक्षम बनाएगी, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि लाभ उन लोगों तक पहुंचे जो वास्तव में जरूरतमंद हैं। यह नीति निर्माताओं को वर्तमान डेटा के आधार पर सकारात्मक कार्रवाई नीतियों को समायोजित करने की अनुमति देता है। जाति वितरण, आय, शिक्षा के स्तर और रोजगार पर सटीक डेटा के साथ, सरकारी विशिष्ट अंतराल को संबोधित करने के लिए नीतियों को तैयार कर सकती है। उदाहरण के लिए, एक जाति जनगणना यह बता सकती है कि उच्च शिक्षा या कुछ आर्थिक क्षेत्रों में किन समुदायों का प्रतिनिधित्व कम है, जिससे लक्षित हस्तक्षेप संभव हो सके।

भारत में कई कल्याणकारी कार्यक्रम हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान के लिए बनाए गए हैं। हालांकि विस्तृत जाति डेटा के अभाव में, यह चुनाव चुनौती है कि ये कार्यक्रम इच्छित लाभार्थियों तक नहीं पहुंच पाएंगे। जाति जनगणना इस अंतराल को समाप्त कर सकती है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि कल्याणकारी योजनाएं अधिक प्रभावी ढंग से डिजाइन और कार्यान्वित की जाएं।

संविधान का अनुच्छेद 14 विधि के समक्ष सभी नागरिकों की समानता की बात करता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि आज भी जाति किसी व्यक्ति के सामाजिक और आर्थिक अवसरों को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण कारक बनी हुई है। जाति जनगणना, ऐतिहासिक अन्याय को संबोधित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक डेटा प्रदान करेगी कि हाशिए पर पड़े समुदायों को संसाधनों का उनका उचित हिस्सा मिले।

हालांकि इस बात की संभावना है कि जाति जनगणना जातिगत पहचान को और गहरा कर सकती है और समाज में विभाजन को बढ़ावा दे सकती है। इससे जाति आधारित राजनीतिक लामबंदी बढ़ सकती है क्योंकि पार्टियां चुनाव भी लाभ के लिए जाति के आंकड़ों का फायदा उठाने की कोशिश कर सकती हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में जाति का राजनीतिकरण सामाजिक तनाव को बढ़ा सकता है। साथ ही भारत की आबादी और इसकी जटिल जटिलताओं को देखते हुए जाति जनगणना करना एक बहुत बड़ी प्रशासनिक कवायद होगी। एकत्रित किए गए डेटा की सटीकता को लेकर चिंताएँ हैं। खास कर ग्रामीण इलाकों में जहाँ जातिगत पहचान अक्सर अस्थिर और ओवरलैपिंग है। इसलिए जाति जनगणना मूल्यांकन अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है, लेकिन इसे राजनीतिक दलों के लिए समुदाय को विभाजित करने या कुछ समूहों को और हाशिए पर रखने का साधन नहीं बनने देना चाहिए।

भारत में सामाजिक आर्थिक असमानता को दूर करने में जाति जनगणना की भूमिका को कम करके नहीं जा सकता। इसमें बहुत जरूरी अनुभवजन्य डेटा प्रदान करने की क्षमता है जो हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान के उद्देश्य से लक्षित नीतियों और कार्यक्रमों को आगे बढ़ा सकता है। विभिन्न जाति समूहों को सटीक सामाजिक आर्थिक स्थितियों की पहचान करके जाति जनगणना, संसार को संसाधनों का समान आवंटन करने, प्रभावी सकारात्मक कार्रवाई को लागू करने और ऐतिहासिक अन्याय को दूर करने में मदद कर सकती है।

लंबे समय में, जाति जनगणना, समाजिक न्याय और समानता के संवैधानिक लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण साधन हो सकती है, जिससे भारत एक अधिक समावेशी समाज का निर्माण करने में सक्षम हो सकता है जहाँ अवसर किसी को जाति से नहीं बल्कि किसी की क्षमताओं और आकांक्षाओं से निर्धारित होते हैं।

**“एक न्यायपूर्ण समाज वह समाज है जिसमें आदर, बढ़ती भावना और अवरोही अवमानना की भावना एक दयालु समाज के निर्माण में विलीन हो जाती है।” बी.आर. अम्बेडकर एनिहिलेशन ऑफ कास्ट।**



**श्रीमती मीनाक्षी**  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
भूगोल विभाग

## नारी- एक परिचय

नारी है सृष्टि की पहली किरण, उससे ही जीवन में है रंग-बिरंग।  
कभी माँ की ममता में लिपटी, कभी बहन बन राखी सी जुड़ी।  
कभी पत्नी बन साया देती, कभी रोटी बन आशा बुनती।  
त्याग की मूरत, प्रेम की भाषा, नारी से ही जीवन की आशा।  
वो बोझ नहीं, आधार है, हर रिश्ते की असली पहचान है।  
कभी चूल्हे पर रोटी बनाती, कभी किताबों से जग को जगाती।  
कभी खेतों में हल चलाती, कभी अंतरिक्ष तक उड़ जाती।  
नारी है तो सब कुछ संभव, वो ही तो है जीवन का उत्सव।

**दीपिका सिंह**  
रिसर्च स्कॉलर  
कॉमर्स डिपार्टमेंट

**नारी कि करुणा अंतर्जगत का उच्चतम विकास है जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए है - जयशंकर प्रसाद**

## भूमंडलीकरण के दौर में दुनिया

हम वसुधैव कुटुंबकम की मान्यता वाले हैं। हमने विश्व को जियो और जीने दो का आदर्श दिया है। मानव स्वभाववत सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव आया है। अब लोगों में सद्भाव, सहिष्णुता समाप्त होती जा रही है और समाज में विषमता एवं शोषण की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। मानसिक प्रताड़ना बढ़ने लगी है। मैं कुछ वर्ग व समूहों को मूलभूत मानवाधिकार भी प्राप्त नहीं। लोगों के उत्थान के लिए कई कानून बनाए गए हैं। इसको मानवाधिकार के परिपेक्ष्य में देखें तो आधुनिक हो या पुरातनपंथी, हर किस्म की दकियानूसी धारणाओं से दूर सत्ते के प्रति आदर, अहिंसा, विश्व मैत्री और समुदाय गत समस्ता के आधार पर कई मानवाधिकारों की नई संकल्पना की आधारशिला गढ़ी जा सकती है। किसी सौहार्द व्यक्ति के सामाजिकरण और उसकी अस्मिता के निर्माण के लिए भी आवश्यक है। बच्चे जीवन और समाज के मूल्य, परिवार, समुदाय और विद्यालय जैसी सामाजिक संस्थाओं में रहकर सीखते हैं। यह तथ्य इस ओर संकेत देता है कि हम दूसरे लोगों के भी ऋणी हैं। हमारे जीवन का मूलमंत्र है। यह वह प्रक्रिया है जो जीवन संभव बनाती है और उसे संचालित तथा संप्रेषित करती है। पारस्परिकता तेजी से घटती जा रही है। समूह या सामूहिकता मानव स्वभाव है क्योंकि अकेले व्यक्ति चिंतन या विचार तो कर सकता है पर विचार विमर्श नहीं कर सकता है। वह अकेले आनंद तो ले सकता है पर उत्सव नहीं मना सकता है। वह अकेले खुश तो हो सकता है मुस्कुरा सकता है पर हर्षोल्लास से खुशी नहीं मना सकता है। हम सबको एक दूसरे की जरूरत है। बहुत सारी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति हमारे सामाजिक संबंध करते हैं। यही समाज का महत्त्व है और यही सामाजिक संबंधों का सौंदर्य भी। लोग वर्षों से चली आ रही पारस्परिक नज़रिए की बात करते हैं। उसके क्या आधार है? यह तो निश्चित है कि दो भिन्न धार्मिक आचरणों के बीच अंतर होगा। लोगों की जीवन पद्धति अलग अलग हो सकती है। इस चिंता को स्वीकार कर यह संबंध बनते और टिकते थे। यहाँ आश्चर्य और खेत की बात है कि जीस दौरान भिन्न समुदायों के बीच रोटी बेटे के रिश्ते कड़ाई से वर्जित थे और उन्हें कोई नैतिक, सामाजिक, प्रशासनिक या कानूनी स्वीकृति नहीं प्राप्ति उस समय भी परस्पर सद्भाव काफी हद तक सहज और स्वाभाविक था। मानवाधिकार का मसला और सामाजिक न्याय का सवाल उतना ही पुराना है जितना स्वयं समाज। न्याय समाज में व्यवस्था स्थापित करने का एक प्रमुख आधार रहा है। आश्चर्य की प्रगति और कुशलता की सूचक होती है। कई ही सामाजिक तनावों को दूर करने का एकमात्र साधन है। विशेष रूप से एक लोकतांत्रिक देश में जहाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता और समानता को विशेष महत्त्व दिया जाता है। सामाजिक न्याय की पूरी ऐतिहासिकता को हम गहराई से देखने समझने की कोशिश करते हैं तो पता चलता है कि धर्म, नीति, राजनीति ये गुजरता हुआ यह बड़ा सवाल आज बाजार में खड़ा है। इस शोध पत्र में सामाजिक न्याय की ऐतिहासिकता को समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य में समझने की कोशिश की गयी है। उदारवादी आज के साम्प्रदायिक परिपेक्ष्य में एक मानवीय मूल्य के रूप में उभर रहा है। उसे स्वीकृति भी मिली है और इसके प्रसार के लिए सचेत व सतर्क हस्तक्षेप भी किए गए हैं।

यह सब उपभोक्तावाद का विस्तार है। इन प्रयास ओकी बुनियादी कमी थी कि इसमें संसार के सभी समाजों को पिछड़ा माना, जिसमें पश्चिमी समाज के मूल्य अनिवार्यतः स्वीकार्य नहीं थे। या यूँ कहें कि इन मूल्यों का विकल्प स्वीकृत न था। भारत में इन नई जीवनशैली में पाँच पसारे तेजी से बढ़ते हुए शहर, उद्योग और अर्थव्यवस्था में बढ़त हासिल करने के लिए हम प्रयत्नशील रहे। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में सामाजिक सब जीवों की पारंपरिक बनावट गौड़ हो गयी और लगभग भुला दी जाती रही। अब लोगों से संबंध- व्यक्तियों के बारे में तो मालूम है किंतु जिन समुदाय से वे व्यक्ति आते हैं, उनका कोई परिचय नहीं रह जाता। अज्ञान के चलते परस्पर समुदाय के बीच अविश्वास पनपता है। इन अविश्वास ओं को कम करने के जो उपाय अपनाते हैं उनके पीछे भी समुदायों की समझ काम नहीं करती क्योंकि जिन लोगों के द्वारा वह उपाय सुझाए गए हैं उनका स्वयं का परिचय समुदायों से नहीं होता। के तौर पर जिससे सांप्रदायिक दंगे को हम आसानी से दो सांप्रदायों के बीच की लड़ाई मान लेते हैं, यह ठहरा देते हैं। जबकि ज्यादातर मामलों में सच्चाई यह होती है कि इनमें दोनों ही पक्ष हिंसात्मक कार्य के लिये सांप्रदायिक पहचान को केवल एक आड़ में एक बहाने के रूप में शामिल करते हैं। तो प्रत्येक दंगे के थमने के बाद, हम अपने सह जीवन पर वापस लौटने में पूरी तरह सक्षम नहीं हो पाते। जिन मानवीय उदाहरणों को हर दंगे में सुर्खियाँ मिलती हैं। एक दूसरे की सामुदायिक और सांप्रदायिक पहचान को अस्वीकार किया जा रहा है, उसे नकारने की कोशिश हो रही है। हम यह जानने का कोई प्रयास नहीं करते कि जिन समुदाय और सांप्रदायों के बारे में हम राय बना रहे हैं, वे वस्तुतः है क्या? और स्थानीय स्तर पर उनका क्या इतिहास है? सांस्कृतिक विविधता, व्यवहार और आचरण की बहुलता तथा उपासना पद्धति के वैकल्पिक स्वरूपों की स्वीकृति सांप्रदायिक सौहार्द की बुनियादी शर्त है। सामाजिक जीवन में विभिन्न स्वाभाविक है और एक हद तक जरूरी भी। परिधियाँ सीमा रेखा व अस्तित्व की पहचान को रेखांकित करती है। पर यह परिधि तब बाधा बन जाती है जब उस से होकर गुज़रने वाले मार्ग में आवाजाही की मनाही हो और एक अस्तित्व दूसरे का विरोधी बन जाता है। बड़े पैमाने पर यह स्थिति जियो और जीने दो की याद दिलाती है और

उस व्यापक दृष्टि से अपने को वंचित कर रहे हैं जो व्यापक सत्य है। व्यक्ति हो या देश अकेले अपने में अधूरा और अपर्याप्त ही मानता रहेगा। देश और काल से ही जुड़ने में जीवन की संभावना बनती है। स्थानीयता का विलोप धीरे धीरे व्यक्ति और राज्य के बीच किसी भी इकाई को ठीक से नहीं रहने देता। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम स्थानीय अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक बनावट को ध्यान में रखते हुए मानव अधिकारों के लिए एक सकारात्मक पहल करें। अंत में प्रकृति और मनुष्य के बीच सामंजस्य बिठाकर सम्मानित जीवन जीने के मनुष्य के नैसर्गिक अधिकार की भावनात्मक गूँज से निकली मानवाधिकार के 30 सूची रचनात्मक मानवाधिकारवादी संकल्पनाएँ एक व्यापक मनुष्यता की अभिव्यक्ति है जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, मतदान का अधिकार, भोजन का अधिकार, काम का अधिकार, सवस्थ रहने का अधिकार, रहने के लिए आवास का अधिकार आदि अनेक अधिकारों के लिए श्रृंखलाओं की संस्तुति हैं।

21 वीं सदी की पीढ़ी के अपने जीवन के तौर तरीके बदल रहे हैं। उपभोग की तरफ आकर्षण से हाशिए पर गुजर बसर कर रही जनता तक हम संयुक्त राष्ट्र राज्य पूँजीवादी और मानवाधिकारवादी केसे पहुँच सकेंगे? इस पर संवेदनशील होने का समय आ चुका है। विश्व की साम्राज्य शाली, देश, थर्ड वर्ल्ड कंट्रीज़ तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की संस्थाओं को एक दूसरे के बारे में सोचना होगा। मानव अधिकार मनुष्यों के पहुँच से बाहर है, यह हमारी विफलता है। राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अथवा लोकल स्तर पर न्याय, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म उपासना और अन्य मामलों के एक मनुष्य को मिलने वाले अधिकार को प्रदान करने के वे प्रयास शुरू करने का वक्त है। जो वास्तव में समता, स्वतंत्रता और गरिमा को सामान्य से हाशिए के लोगों की अनुभूति का हिस्सा बन सके। हमारे यहाँ आध्यात्मिक होना व्यक्ति के विवेकवान होने का लक्षण था। किंतु उत्तर आधुनिक विमर्श व संवेदना को स्वीकार करने की प्रक्रिया भी बदली है। लेकिन अब भी शिक्षा एक ऐसा विकल्प है जो व्यक्ति को अपना खुद का पैमाना बनने का अवसर मुहैया कराती है। ऐसे में जब दुनिया के वैश्विक विमर्श का केंद्र बिंदु मनुष्य है तो संयुक्त राष्ट्र की चेतना क्यों काम नहीं कर पा रही है? क्यों उसकी अध्यक्षता में बने व्यापक मानवता के घोषणा पत्र अभी समय मूर्त रूप नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। फ्रेडरिको मेयर ने इस पर स्पष्ट टिप्पणी भी की थी कि संयुक्त राष्ट्र एक अनोखा प्रजातांत्रिक मंच है, परंतु इसके प्राधिकारों को पहले तो शी तियों की लगभग अर्ध सदी द्वारा तथा उसके बाद प्रमुख शक्ति द्वारा उन सिद्धांत की ही अवज्ञा करते हुए जिनकी रक्षा के लिए वह प्रतिबद्ध है। (मानवाधिकार सभी के लिये/फ्रेडरिको मेयर/यूनेस्को दूध संपादक/एमपी श्रीवास्तव व सुमन शर्मा/अंक जनवरी 2000, पृष्ठ संख्या 9)

जहाँ भुखमरी होगी, वहाँ शांति हो ही नहीं सकती, वहाँ संघर्ष और आतंकवाद होगा। यदि यह नहीं होगा तो किसान आत्महत्या करेंगे, युवा नक्सल की राह पकड़ लेंगे, जैसा की भारत में हो रहा है। स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, सुरक्षा और गरिमा यदि बरकरार हो जाए। ले जा सकते हैं कि पंत नस्ल, जाति, लिंग जैसे। मनुष्य का पहला विचार विमर्श नहीं बनेगा, बल्कि लोगों के बीच अनुराग बढ़ेगा। 1961 में एमनेस्टी इन्टरनेशनल का जन्म हुआ तो नवीन मानवाधिकार आंदोलन की मांग यह है कि प्रत्येक देश की सरकार को सैद्धांतिक मतभेदों के बावजूद भी अपने नागरिकों के साथ कुछ मूलभूत सिद्धांतों के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। इसी क्रम में 1879 में हेलसिंकी में मानवाधिकार वाच के नाम से एक गठबंधन की स्थापना की। इसके अतिरिक्त कई क्षेत्रीय समूहों का जन्म हुआ जो विश्व को विश्व स्तर पर मानवाधिकारों की पैरवी करते हैं।

मानव अधिकारों का भारतीय संदर्भ देखने की कोशिश की जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय समाज और संस्कृति में मानव अधिकारों का लंबा इतिहास रहा है। प्रत्येक दौर में मानव अधिकारों को परिभाषित और परिष्कृत करने की कोशिश की गई। व्यवस्थित ढंग से मानवाधिकारों के क्षेत्र में कौटिल्य की महत्वपूर्ण देन है। **कौटिल्य ने अपने ग्रन्थ अर्थशास्त्र में लिखा है कि राजा को वृद्धों, निर्बलों, असहायों, दुखियों तथा मजबूरों के कल्याण की व्यवस्था करनी चाहिए।** वैदिक काल के बाद मानवाधिकारों तथा मूल्यों का तेजी से पतन हुआ। हर्षवर्धन ने सक्षम तथा गुणवान व्यक्ति को जाति, रंग, धर्म और मत के भेदभाव के बिना अपने दरबार में आश्रय दिया। हर्षवर्धन के बाद भारत विदेशी विजयों का महत्वपूर्ण गढ़ बन गया। विरासत में मिले विशिष्ट आदर्शों को बनाए रखने तथा मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। हम सभी नागरिकों को समझदारी, संवेदनशीलता व विचारशीलता से अपने दायित्व को निर्वाह करने की आवश्यकता है।

सामाजिक जीवन के साथ राजनीति की संबद्धता बहुत ही जटिल होती है और चुकी राजनीति की भूमिका या तो पुराने सामाजिक संबंधों को कायम रखने या नवीन संबंधों को बढ़ाने में स्पष्ट होती है। राजनीति और सामाजिक न्याय के संबंध का इतिहास गवाह है कि सामाजिक न्याय के सिद्धांत के बीचे नहीं, मानवीय नैतिकता के सार्वभौमिक विकास की मानक मान्यता भी उतनी ही पुरानी है जितनी मनुष्य की सभ्यता। इसकी मूल में नव मानव का विकास नहीं, नैतिकता का संवर्धन और नई आर्थिक तकनीकी व्यवस्था का जनतन्त्रीय राजनीति के द्वारा स्थापन मुख्य माना जा सकता है। मानवाधिकार के समाजशास्त्र को समझने के लिए उन ऐतिहासिक मोड़ों को पहचानना लाजिमी है, जहाँ आकर समाज विज्ञान ओका चिंतन विभिन्न प्रकार की उपधाराओं को जन्म देता है, जिनके परिणामस्वरूप प्रायः आपसी विरोध जनित अभिप्रायों और आदर्शों का जन्म होता है। अधिक सहमति के विकास के कारण संभव हो पाता है। विचारधाराएं या उनकी उपशाखाएँ इस बात को प्रमाणित करती हैं। इतिहास साक्षी है

की इस प्रकार का मत विभाजन तभी संभव हो पाया है जब मानव समाज अधिनायकवादी, सामंतवादी और विभिन्न प्रकार की तानाशाही व्यवस्थाओं से मुक्त होकर जनतन्त्रीय व्यवस्था में बदल सका है। सामाजिक न्याय का सवाल नित नए संदर्भों में नए अर्थ लिए खड़ा रहा है और यही वह सवाल है, जो मानवता को गत्यात्मक बनाए हुए है।

नई सदी का भारत समाज अजीबोगरीब विरोधाभासों के बीच खड़ा है। एक तरफ देश विदेश स्तर पर नई आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा है, दूसरी तरफ समाज का बड़ा वर्ग हाशिए पर खड़ा विकास की बाट जोह रहा है। कारों के लिए संघर्ष कर रहा है मूलभूत आवश्यकताओं के लिए जूझ रहा है। समाज में समृद्धि के टापू खड़े हो रहे हैं, तो गरीबी की खाई चौड़ी होती जा रही है। खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता के बावजूद देशभर में किसान आत्महत्या कर रहे हैं। जातीयता और स्थानीयता को विस्तार के रास्ते मिल रहे हैं। के अस्तित्व पर संकट भी मंडरा रहे हैं। देशी विदेशी कॉर्पोरेट्स विकास की नई संस्कृति खड़ी कर रहे हैं तो प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर पर्यावरणीय संकट भी खड़े कर रहे हैं। लोकतंत्र में परिपक्वता और समानता की महत्ता बढ़ी है तो दलित और स्त्री अस्मिता के प्रश्न आज भी ज्यों के त्यों हैं। ये मानवाधिकारों की मांग कर रहे हैं। वे भी अस्तित्व से व्यक्तित्व की तरफ बढ़ना चाह रहे हैं। समाज में अपने अधिकारों की सुरक्षा चाह रहे हैं। भूमंडलीकरण के दौर में उपजे असुरक्षा के वातावरण का अध्ययन इन्हीं विरोधाभासों के संदर्भ में किया जाना है। बिना इन विरोधाभासों को समझे मानवाधिकारों का मसला सुलझने की बजाय उलझता ही जाएगा। राजनीति ने विकासशील समाजों के मानवाधिकारों का हनन किया है और पूरी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को इस ढंग से ढाला है कि विकासशील देश विकसित देशों के लिए सिर्फ कच्चा माल तैयार कर सकें। परिणाम स्वरूप विकासशील और विकसित समाजों में समृद्धि और विपन्नता का असंतुलन बढ़ा है। भूमंडलीकरण के दौर में विकसित देशों ने पिछड़े समाजों पर ना सिर्फ आर्थिक, राजनैतिक प्रभुत्व कायम किया है बल्कि नजरिये, बाजार और मीडिया की सांस्कृतिक वर्चस्व भी कायम किया है। सूचना क्रांति और भूमंडलीकरण के दौर में भारत जैसे विकासशील देशों के सामने असुरक्षा की नई चुनौतियां खड़ी कर दी है। इन स्थितियों और परिस्थितियों में भारतीय राज्य अपने नागरिकों के मानवाधिकारों की रक्षा कैसे करें? वैश्विक होती दुनिया में राज्य की अपनी सामाजिक नीती और नियोजन को किस ढंग से संतुलित और प्रभावी बनाएं, यह भी एक चुनौती है। आर्थिक विकास और सामाजिक विकास को जोड़ने वाले सरकारी प्रयास कितने परिणाम देने वाले हो, यह एक बड़ी मांग है। कमजोर वर्गों, महिलाओं, दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों, आदिवासी समुदायों के विकास के लिए राज्य की नीतियां संतुलित ढंग से बनाने का काम आज के वैश्विक दबावों के चलते इतना आसान नहीं है। इन तमाम सवालों को मानवाधिकारों के संदर्भ में तलाशना आज की महती आवश्यकता है। भूमंडलीकरण के दौर में बाजार के आकर्षण, अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के दबाव, दुनिया संसाधनों का बढ़ता अभाव, ये मानवीय इच्छाओं, संवेदनाओं और आवश्यकताओं को कुचल रही है, मानवाधिकारों का हनन कर रही है। इन सबके बीच संतुलन साधना भूमंडलीकरण के दौर की सबसे बड़ी चुनौती है।



**डॉ० राकेश कुमार**  
प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

# वागड़ के आदिवासी समाज में प्रचलित वैवाहिक परंपराएं एवं रीति रिवाज

प्राचीन काल से ही विवाह एक सामाजिक दायित्व माना जाता है। जिसका अस्तित्व विश्व के सभी समाजों में किसी न किसी रूप में विद्यमान है। वागड़ के आदिवासी समाज में भी विवाह से संबंधित अनेक परंपराएं एवं रीति रिवाज प्रचलित हैं। वागड़ राजस्थान के दक्षिणांचल में अवस्थित एक आदिवासी बहुल क्षेत्र है। जिसके अन्तर्गत बांसवाड़ा एवं डुंगरपुर जिलों को सम्मानित किया जाता है। वागड़ के आदिवासी समाज में विवाह एक बंधन नहीं है। पुरुष एवं स्त्री दोनों के लिए यह सामाजिक स्वतंत्रता है कि वे जब चाहे सब वैवाहिक बंधन से मुक्त हो सकते हैं। स्त्री एवं पुरुष दोनों को छोड़ा फड़वाने की प्रथा का पालन करना होगा। जिसके अंतर्गत दंपति को समाज के समक्ष उपस्थित होना होगा। पगड़ी का एक चौथड़ा फाड़कर स्त्री को देगा। स्त्री उसे लकड़ी के खंभे से बांध देगी। इस प्रकार दोनों का संबंध विच्छेद हो जाएगा। आदिवासी शो मोहन समाज में वैवाहिक संबंध जोड़ने से पूर्व भी अनेक परंपराओं एवं रीति रिवाजों का पालन किया जाता है, जिनका विवरण निम्नलिखित है:

**सगाई-** आदिवासी समाज में विवाह की परंपरा में सर्वप्रथम सगाई तय करने का रिवाज है। करने के लिए किसी संबंधी (बड़छाली) के माध्यम से लड़के के पिता अपने से भिन्न गोत्र (अटक) की लड़की का पता लगवाते हैं। लड़की का पता चलने के बाद सगाई की बातचीत करने के लिए लड़के का पिता अच्छा शगुन जिसमें कंवारी कन्या द्वारा पानी लेकर आते हुए या किसी पक्षी को देखकर परिवार के कुछ व्यक्तियों के साथ बड़वाली के घर जाता है। बड़वाली कन्या के घर जाकर आगे का कार्यक्रम निर्धारित करता है। दोनों पक्षों के रिश्तेदार कन्या के घर में आमने सामने बैठते हैं। शगुन की थाली को सजाया जाता है। दीप प्रज्वलन कर कन्या को शगुन स्वरूप भेंट प्रदान की जाती है। कार्यक्रम संतोषजनक संपन्न हो जाने पर सगाई को मान लिया जाता है। गुण धनिया, नारियल से मुँह मीठा कराया जाता है। इसके साथ आदिवासी समाज का उद्घोष 'जय गुरु' को एक साथ बोला जाता है।

**दापे का चलन-** सगाई होने के कुछ मास बाद दापे का दस्तूर किया जाता है। लड़के का पिता अपनी बिरादरी के लोगों के साथ लड़की के घर जाता है। वहाँ कन्या के घर के बाहर किसी छायादार वृक्ष के नीचे बैठकर दापे की राशि तय करते हैं। जिसमें कन्या पक्ष द्वारा रखे गए दापे के प्रस्ताव को वर पक्ष के लोगों को मानना पड़ता है, जिससे दापा वदना कहते हैं। इस दौरान लड़की को निश्चित गहने पहनाने के लिए तय किए जाते हैं, जिससे गहने वदना कहते हैं। दोनों पक्षों की आपसी रजामंदी से तय किया जाता है।

**होड़ा रंगना-** विवाह की शुरुआत में प्रथम दिन दूल्हे के शरीर पर उबटन (पीठी) चढ़ाई जाती है। उसके कपड़े जों और हल्दी में भी भिगोए जाते हैं। यह कार्य वर की भौजाई द्वारा किया जाता है। इस परंपरा में चावल एवं घुघरी की गोदी में रखकर आरती उतारी जाती है। स्त्रियां गीत गाती हुई पांच कंवारी कन्याओं को दूल्हे के पीछे खड़ी करती है, जिसे 'खुबो झिलावाणो' का कार्य कहा जाता है। तत्पश्चात वर को पाट पर बिठाकर खूब उछाला जाता है। जिसे 'मोरीयू नाचना' के नाम से जाना जाता है।

**नोतरा प्रथा -** नोतरा प्रथा का आदिवासी समाज में अत्यधिक महत्त्व है। यह एक प्रकार के सामाजिक बैंक का कार्य करता है। विवाह की तिथि तय होने के पश्चात भीलों का मुखिया, रावत, गमेती, प्रमुख व्यक्तियों के माध्यम से रिश्तेदारों व गांव वालों को सूचना पहुंचाता है। नोतरा न्योता के लिए जाने वाले व्यक्ति को पीले चावल लेकर जाना पड़ता है। जो रिश्तेदारों के घर की देहरी पर रखे जाते हैं। जिससे व्यक्ति को नातेरा रखा जाता है वह नोतरे वाला निश्चित दिन वर या वधू के कपड़े, नारियल व अन्य उपहार लेकर आते हैं। पीठी लगन के बाद वर वधू को पानी व तेल में मिलाकर उसके शरीर पर लगाया जाने वाला हल्दी एवं बेसन का उबटन होता है। इस अवसर पर पीठी से संबंधित गीत गाए जाते हैं।

**गणेश का दिवस-** गणेश रस्म के अवसर पर वर वधू के करीबी रिश्तेदार सगे संबंधी वस्त्र आभूषण लेकर आते हैं। इस दिन फुलेका (घोड़ा घोड़ी का जुलूस) निकालने का रिवाज प्रचलन में है। इस मौके पर गांव के बड़े बुजुर्ग वर वधू को उनके पूर्वजों के आशीर्वाद दिलाने हेतु चोखलियों एवं सीरा बावसी के पास ले जाते हैं, जो अपने पूर्वजों के प्रति आस्था सम्मान का सूचक है। इस दिन मांडवा बांस का मंडप का निर्माण किया जाता है।

**जान चरणी-** आदिवासी समाज में दूल्हे के मामा दूल्हे को सजाकर नए कपड़े पहनाकर बारात को गाजे बाजे के साथ रवाना करते हैं। धोली अपना ढोल मांदल, थाली, बांसुरी इत्यादि वाद्ययंत्रों को अपने साथ रखता है। ऐसे अवसर पर गीत एवं नृत्य किया जाता है। वधु के घर रवाना करने की इस विधि को 'वोर उगलना' कहा जाता है।

**विवाह-** पंचों द्वारा चौघड़िया को देखकर वर को तय समयानुसार वधू के आंगन में लाया जाता है। जहाँ उसकी होने वाली सालिया तिलक लगाकर दूल्हे का स्वागत करती है। बाद में दूल्हन की भुवाए एवं माँ आरती उतारकर दूल्हे को गले में तौलिया या अन्य वस्त्र डालकर खींचती हुई मंडप के नीचे ले जाती है। मंडप के नीचे जाने से पूर्व दूल्हा तलवार से तोरण मारता है। इस पुनीत अवसर पर भील पुरोहित अग्नि प्रज्वलित कर मंत्रोच्चारण के साथ विवाह संपन्न करता है। तोरण पर जाने के अवसर पर वर वधु के माता पिता को तोरण से दूर रखा जाता है।

अनिल कुमार मड़ड़ा

शोध छात्र

हिन्दी विभाग

“आदिवासी कोई धर्म नहीं है। आदिवासी एक सभ्यता है  
एक संस्कृति है ऐसी संस्कृति जो पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर है।” - जोहर जय आदिवासी

## नारी

माना की आज नारी चाँद पर पहुँच गयी है। उसे पढ़ने लिखने और जीने का अधिकार मिलता है, वह अपनी सत्ता और शक्ति का दम्भ भरती है परन्तु यह खंड सत्य है। इस के लिए वह बहुत हृद तक स्वयं भी ज़िम्मेदार है।

वह सतती है और सताती भी है जब शक्ति हाथ में आती है,  
नारी ही न समझती नारी की पीड़ा, पीड़ित को खूब सताती है।  
बेटे की चाहत में माँ ने, बेटी को मार गिराया है।  
बेटे को पढ़ने भेजा स्कूल, बेटी को घर बैठाया है।  
बेटे को दिया भर पेट भोजन, बेटी को आधा खिलाया है।  
जब नारी बनकर वधु, अपने ससुराल में आयी है।  
वहां दहेज़ की मांग ने, उसकी दुविधा बढ़ाई है।  
पल-पल मारी जाती है, पल पल सताई जाती है।  
इस दहेज़ की प्रथा में, वधु हर दिन जलाई जाती है।  
कभी पैर की जूती बनती, कभी वो बेची जाती है।  
नारी ने पुरुष को जन्म दिया, फिर क्यूँ ठुकराई जाती है।  
देवो ने नारी शक्ति को, प्रथम रूप में माना है।  
फिर ऐसी नारी को हमने पूजनीय क्यों नहीं माना है।

**प्राची वर्मा**

एम अस सी द्वितीय वर्ष  
जूलॉजी

## यादों की स्याही से

वो सुबह की धूप, वो देर तक सोना,  
कैंटीन की चाय और ज़िन्दगी का रंगीन चौमास।  
ठिठोलियों से भरे वो दिन,  
अब बस यादों में है समाया।

कॉरिडोर अब सूने हैं, जहाँ गूँजती थी आवाज़ें,  
बेंच पे बैठ कर जो सपने बुने थे, वो अधूरे हैं।  
परीक्षा की रातों की वो बेचैनी,  
अब लगती है कितनी प्यारी।

दूर होते मित्र दूर होता वक़्त,  
जैसे हाथ से फिसलता रेत का क़िला।  
मिलेंगे कभी या बन जायेंगे अनजान,  
दिल पूछता है पर जवाब नहीं...

अलविदा कहना अब इस मुकाम से,  
जहाँ हमने बिठाये थे इतने यादगार पल।  
ऍम0 ऍम0 एच0 कॉलेज हमेशा मेरी यादों में रहेगा,  
यदि रहेंगे दोस्त और ज़िंदा रहेंगी यारियां।

**शाहीन परवीन**

एम कॉम चतुर्थ सेमेस्टर

# अमृत-वाणी

मन समस्त मानव जीवन का नियामक है। यह सदैव चंचल अवस्था में रहता है। जिस व्यक्ति के मन में जितनी अधिक चंचलता होगी, उसके जीवन में उतना ही अधिक बिखराव होगा। बिखराव मन में क्षोभ उत्पन्न करता है और यह क्षोभ ही अंततः तनाव बन जाता है। इसलिए मन की चंचलता को नियंत्रित करना ही तनाव मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

अज्ञान की धूल जमते रहने से मानव का मन मैला गंदा और कुरूप हो जाता है। अतः मन को शुभ और सकारात्मक विचारों की साबुन से शुद्ध व निर्मल करते रहना चाहिए। मन को भौतिक इच्छाओं की अपेक्षा ज्ञान स्वरूपा बुद्धि के मार्गदर्शन में रखिए। संसार की समस्त साधनाएं मन से मुक्ति का मार्ग खोजती आई हैं। मन के मरने पर संसार मर जाता है और शेष रह जाती है आत्मा तथा उसका नित्य नवीन आनंद। इसी को मुक्ति अथवा मोक्ष कहा गया है। स्वर्ग और नरक भी मन की दो अवस्थाओं में के ही नाम हैं। अज्ञान से आवृत मन नरक का और ज्ञान से युक्त मन स्वर्ग का सूचक है।



प्रो० सुता कुमारी  
अंग्रेजी विभाग

## माँ की महिमा

घर को पूरा जीवन देकर बेचारी माँ क्या पाती है, रूखा सूखा खा लेती है, पानी पीकर सो जाती है।  
जो माँ जैसी देवी घर के, मंदिर में नहीं रख सकते हैं, वो लाखों पुण्य भले कर ले, इंसान नहीं बन सकते हैं।  
माँ जिसको को भी जल दे दे, वो पौधा संदल बन जाता है, माँ के चरणों को छूकर, पानी गंगाजल बन जाता है।  
माँ के आंचल ने युगो युगो से, भगवानों को पाला है, माँ के चरणों में जन्नत है, गिरजाघर और शिवाला है।  
माँ कबीरा की साखी जैसी, माँ तुलसी की चौपाई है, मीराबाई की पदावली, खुसरो की अमर रुबाई है।  
माँ वेदरचनाओं की गरिमा, माँ महाकाव्य की काया है, माँ मानसरोवर ममता का, माँ गोमुख की ऊँचाई।  
माँ परिवारों का संगम है, माँ रिश्तों की गहराई है, माँ हरी डूब है धरती की, माँ केसर वाली क्यारी है।  
माँ की उपमा केवल माँ है, माँ हर घर की फुलवारी है, जब आप खुली तो अम्मा की, गोदी का एक सहारा था,  
उसका नन्हा सा आंचल, मुझको भूमंडल से प्यारा था।  
उसके चेहरे की झलक देख, चेहरा फूलों सा खिलता था, उसके आंचल की एक बूंद से, मुझ को जीवन मिलता था।  
हाथों से बालों को नोंचा, पैरों से खूब प्रहार किया, फिर भी उस माँ ने पुचकारा, हम को जी भर के प्यार किया।  
मैं उसका राजा बेटा था, वो आंख का तारा कहती थी, मैं बन्नू बुढ़ापे में उसका, बस एक सहारा कहती थी।  
उँगली को पकड़ चलाया था, पढ़ने विद्यालय भेजा था, मेरी नादानी को उसने, निज अंतर में सदा सहेजा था।  
मेरे सारे प्रश्नों का वो, फ़ौरन जवाब बन जाती थी, मेरी राहों के कांटे चुन, वो खुद गुलाब बन जाती थी।  
सातों सुर नर्तन करते जब, कोई माँ लोरी गाती है, माँ जिस रोटी को छु लेती है, वो प्रसाद बन जाती है।  
माँ की ममता को देख, मौत भी आगे से हट जाती है, अगर माँ अपमानित होती तो, धरती की छाती फट जाती है।

प्रियांशु  
बी. एस. सी.

## बच्चा काम पर जा रहा है

कहानी उसका चेहरा बता रहा है।  
लडखड़ाता बचपन जिम्मेदारी उठा रहा है।  
उसके हाथ में नहीं है किताबें। देखो, बच्चा काम पर जा रहा है।  
एक तरफ मजबूरी, दूसरी तरफ गरीबी खड़ी है,  
शायद इसकी जिम्मेदारी इसकी उम्र से बढ़ी है।  
नहीं मांगता खिलौने इसे तो शाम की भूख की पड़ी है।  
परिपक्वता का भाव इसके भावों में छा रहा है, देखो बच्चा काम पर जा रहा है।  
रंगे सियार एसी की गाड़ी में घूमे हैं।  
वह क्या इनका दर्द जानेंगे जो खुद भोग विलास में डूबे हैं।  
ये गरीब बच्चा क्या भारत महान के नारे लगाएगा  
जब इसे ये नहीं पता कि कल क्या खाएगा?  
रो रही है बेबसी फिर भी मुस्कुरा कर दिखा रहा है  
देखो बच्चा काम पर जा रहा है  
ज़िद्द करना ये नहीं जनता अपनी मजबूरी ही अब ये अपनी  
किस्मत मानता  
कोमल हाथ पड़ चुके हैं काले  
है कैसा है प्रभु तेरा न्याय कैसी ये समानता, अपनी कहानी अपनी  
आँखों से पढ़ रहा है  
नाम पूछे तो छोटू बता रहा है  
कमानी है इसको कमाई, कुछ भाई बहन की भूख कुछ माँ की,  
इसीलिए बच्चा काम पे जा रहा है।

सोनम  
रिसर्च स्कॉलर  
कॉमर्स डिपार्टमेंट

## अभी भी बाकी है

कोई बात अधूरी छूट गयी,  
पर ख्वाब अभी भी बाकी है  
कोई टूट गयी माला फूलों की  
पर फूल अभी भी बाकी है  
कभी हाथ किसी का छूट गया  
कोई अपना हमसे रूठ गया  
कभी छूट गया जो साथ किसी का  
पर याद अभी भी बाकी है  
कभी घाव हुआ जो बरसो पहले  
पर मरहम लगाना बाकी है  
कोई चुप जो था जब हक़ की खातिर  
अब आवाज़ उठाना बाकी है  
एक लौ जो जलती थी कोने में  
उस लौ से आग लगाना बाकी है  
अतीत भले ही गुज़र गया हो  
पर उसका निशान अभी भी बाकी है  
कुछ ख्वाब अधूरे जल गए हैं  
पर कोई सपना सजाना अभी भी बाकी है

शिखा यादव  
बी.ए. छठा सेमेस्टर

## दो भाई

एक गांव में दो भाई रोहन और राजू रहते थे। रोहन बड़ा ही मेहनती तथा राजू बहुत की आलसी था। उन दोनों के घर बहुत पुराने थे और बरसात भी जल्दी ही आने वाली थी। रोहन को ऐसा लग रहा था कि इस बरसात में शायद घर नष्ट हो सकते हैं। इसलिए उसने अपने छोटे भाई राजू से कहा कि अब हमें अपने अपने घर की मरम्मत करवाने की जरूरत है, लेकिन राजू बहुत आलसी था। वह काम करना नहीं चाहता था इसलिए उसने बहाना बनाकर कहा की मेरा घर तो अभी कुछ वर्षों तक सुरक्षित रह सकता है राजू ने रोहन से कहा कि आप अपने घर की मरम्मत पर ध्यान दीजिए और यह कहकर बात काट दी। रोहन ने बहुत कहा की उसे भी अपने घर की मरम्मत करवानी चाहिए, लेकिन राजू आलसी होने के कारण रोहन की बात को नजर अंदाज करने लगा। बरसात आने से पहले रोहन ने अपने घर की मरम्मत करवा ली। कुछ दिन बाद वर्षा शुरू हो गई और रोहन बड़े सुकून के साथ अपने घर में परिवार के साथ रहता था। लेकिन राजू के घर की छत से शुरुआत की बरसात से ही पानी टपकने लगा। कुछ दिनों के बाद एक भयंकर बरसात के साथ तूफान भी आया। रोहन को एहसास हुआ कि यह तूफान बहुत ही खतरनाक लग रहा था इसलिए वह राजू के घर जाकर उसके परिवार के सभी सदस्यों को अपने घर ले आया। घर से निकलने के कुछ समय बाद एक तेज रफ्तार के साथ तूफान आया और बहुत से पेड़ पौधों के साथ राजू के घर को भी नष्ट कर दिया। यह सब देखकर राजू के होश उड़ गए। उसको अपने भाई की बात न मानने पर बहुत ही बुरा लगा। राजू ने अपने भाई से भविष्य में सही काम को सही समय पर करने की शपथ ली।

शिक्षा: हम सभी को समय रहते हुए अपने कार्यों को कर लेना चाहिए।

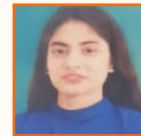
अमित सागर

बी० ए० चतुर्थ सेमेस्टर

“जीवन में बहुत सी बड़ी चीज़ों का महत्व हम तब पहचानते हैं, जब हम उन्हें खो चुके होते हैं।” - शरतचंद्र

## उम्मीदवार

ख्वाबों की सफर में, एक सपना पिरोया अपने जिगर में,  
अब ना थी कोई हसीन ज़िंदगी जीने की इच्छा, बस चाहत थी एक पास हो जाए ये सरकारी परीक्षा।  
घंटों घंटों की मेहनत निरंतर प्रयास, कुछ ऐसा ही होता है हर उम्मीदवार का सरकारी परीक्षा के लिए अभ्यास।  
किताबों में खोया ज्ञान की गहराई में, ताकि ना छूट जाए कोई सवाल उसकी लापरवाही में।  
शुरुआत में संघर्ष होता है गहरा, ताकि हर कोई पहचान सके उसका चेहरा।  
गुजरना पड़ता है टेस्ट के हर दौर से, प्री मेन्स फिजिकल, उसके बाद फिर मेडिकल।  
इसके बाद आता है आखिरी पड़ाव, जिसमे इंटरव्यू क्लियर कर पूरा हो जाता है एक उम्मीदवार का ख्वाब।  
यह मैरिट कट ऑफ से बनी राह होती नहीं आसान, मेहनत और परिश्रम को करने पड़ते हैं ज़िंदगी के कुछ साल दान।



कीर्ति वर्मा

एम्० एस० सी०, जूलॉजी  
द्वितीय सेमेस्टर

“ज़िन्दगी में कुछ भी आसानी से नहीं मिलता, लक्ष्य हासिल करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।” - अज्ञात

## हम फिर लौटेंगे

एक दिन हस्ती खेलती ज़न्दगी पर, टूट पड़ा था कहर,  
रक्षकों के भेष में छुप आ गए थे भक्षक,  
विकृत था मन आँखों में दिख रही थी हिंसा, जाती धरम के नाम पर,  
तार तार हुई मानवता, रो रही थी फ़िज़ा, शांत थी वादियां,  
मौन था पहलगाम, शाम ढली नहीं थी पर उजाला भी न था  
वो घाटी थी मगर पहले जैसा सिलसिला भी न था,  
फ़िज़ाओं में बारूद की बू थी घुली,  
हर तरफ़ ख़ामोशी थी, कहीं कोई धड़कन छूटी मिली।

फिर एक शोर, गोलियों की बारिश,  
टूटे थे ख़्वाब और बिखरी थी खुशियां, हुई आंसुओं की बारिश  
पहलगाम की वादियां सहम गयी थी,  
जिन्हे देख मुस्कुराते थे लोग, अब वो भीग गयी थी आंसुओं से

माँ ने बेटे को खोया था और पिता ने काँधे पे उठायी थी अर्थी,  
उठायी राइफल आँखों में खून उतर आया  
सब पी रहे थे ग़म और आंसू, जहाँ कभी सैलानी आया करते थे,  
लौटते थे सुन्दर यादों के साथ, वो अब भयभीत हैं डरावनी लगने लगी  
हैं वादियां

क्या कसूर था उन् मासूम दिलों का, क्या मज़हब था उस नन्ही सी  
चप्पल का,  
जो गिर पड़ी सड़क पर खामोश गवाही देते हुए,  
की नफरत ने फिर एक बार, मासूमियत कुचल दी है

जाति और धर्म की कुण्ठा ने, मानवता रौंद दी है,  
लेकिन बिगड़ी फ़िज़ा को सुधारना हमें ही है,  
भाईचारा को फिर कायम करना है  
हिंसा को छोड़ प्यार का राग छेड़ना है  
जिससे सब और सबकुछ सहज हो सके।  
डराना नहीं, गले लगाना है प्यार से,  
कश्मीर की सुषमा को निहारना है फिर से।  
घाटी को फिर से मुस्कुराना है,  
पर उससे पहले आंसू पोछना है, दिलों को समझाना है  
शहीदों की शपथ है, उनकी आखिरी सांसें गूँज रही हैं,  
"हम फिर लौटेंगे, जब अमन की हवा बह रही होगी।"

अखंड

एम० कॉम० चतुर्थ सेमेस्टर

## मैंने पहलगाम को रोते देखा

मैंने पहलगाम को रोते हुए देखा, उसकी वादियों से चीखें उठती सुनी,  
जहाँ पहले झीलें गीत गुनगुनाती थीं, आज वहाँ लाशें बिछी हैं,  
धुआं और गोलियों की बौछार, बारूद की गंध टूटे हैं ख़्वाब,  
सब तरफ़ चीख पुकार, सूनी हो गयी माँ की गोद,  
सोच रही थीं माँ।  
कैसी विडंबना है, क्रूरता का तांडव बेबसी का मंज़र,  
उसका बेटा कल हँसता था, आज तिरंगे में लिपटा है बिना कुछ कहे  
चला गया

कौन समझे उस बहन की सिसकियों को, जो कभी मिल न पायेगी भाई  
से,  
राखी के दिन ढूँढेगी कलाई भाई की, बूढ़ी आँखें ढूँढ रही हैं बेटे को,  
जो जीने का एक सहारा था।  
वो बूढ़े हाथ, जो नमाज़ में दुआ मांगते थे, वह उसी खुदा से सवाल कर  
रहें हैं क्यों?  
क्यों बुद्धि देकर भी पशुता भर दी है, इंसान बना कर भी इंसानियत  
नहीं दी।  
क्यों नदियों का कल-कल चल-चल, पक्षियों की चहं-चहं नहीं लुभाती  
है,

आज बन्दूक और गोली ने, घर उजाड़ा है,  
हर धमाके ने, इंसानियत को रौंदा है, लहलुहान किया है।  
उजड़े हैं घर और सूनी हुई है मांग, आखिर क्यों?  
कोई बताये ये कैसी जंग है यहाँ जीत कर भी कोई क्या पायेगा,  
आखिर, किस धर्म किस मज़हब ने सिखाया है  
कि मासूमियत को मार के जन्नत मिलती है  
पहलगाम अब भी वहीं हैं पर उसकी रूह अब कांपती है,  
हर दरख्त, हर नाला, हर पहाड़ मासूमों की चीत्कार दोहराता है,  
रोती हैं वादियां और मासूम है फ़िज़ा लेकिन इससे हमें उभारना है  
मुश्किल है लेकिन मज़बूती से खड़े होना है  
लेना है संकल्प हमें कि,  
हम टूटेंगे नहीं, हम खातें हैं कसम उनकी  
जिनकी सांसें गोलियों से छीनी गयी।  
हंसती खेलती ज़िन्दगी, क्रूरता ने ले ली  
लेकिन हम फिर खड़े होंगे, अपने आंसुओं को हथियार बना कर,  
ताकि हर दिन हर सुबह, सिर्फ़ सूरज ही नहीं,  
अमन भी उग सके, चैन मुस्कुरा सके, हम गीत गा सकें,  
कि सुन्दर है विहंग सुमन सुन्दर मानव तुम सबसे सुन्दरतम।

फ़िज़ा

एम० कॉम० चतुर्थ सेमेस्टर

## बेटी की अभिलाषा

मुझे माफ़ कर देना पापा,  
आंसू रोक न पायी,  
अपने सपनों की खातिर,  
सुख आपका देख न पायी,  
छोटी थी बच्चे सपने थे,  
मेरी भी इतनी चाहत थी,  
मैं गोदी में मचलू खेलू,  
काँधे चढ़ मेला भी देखू,  
बस्ता स्कूल न प्रिय लगता,  
बस खेल कूद ही भाता था,  
जब आप कभी घर आते थे,  
तो दिन मस्ती के होते थे,  
न होमवर्क बस्ता किताब,  
हर दिन आनंद हमारा था,  
माँ का कोप स्वयं सहते,  
पर हमें सदा बचा लेते,  
पापा मेरे प्यारे पापा,  
मैं भूल गयी थी मोह में,  
केवल बच्चों के पिता नहीं,  
आप भारत माँ के भी बच्चे हैं,  
उसकी हर आन बान शान हेतु,  
आप मर मिटने को तत्पर थे,  
इक दिन दुश्मन की गोली ने,  
भारती के सपूत को लीला था,  
भारत माता की ममता को,  
जब तर तर कर डाला था,  
उसकी रक्षा में खड़े हुए,

दुश्मन को मार गिराया था,  
पापा मेरे प्यारे पापा  
छरम छदम प्रबल दुश्मन जीता,  
इक गोली सीना छेद गयी,  
भारत माता की रक्षा में,  
एक सैनिक पुनः शहीद हुआ,  
पापा मेरे प्यारे पापा,  
तुम हारे नहीं हराया है,  
मरना तो एक उत्सव जैसा,  
है वीर जवान का गौरव यह,  
जब लिपटे आये तिरंगे में तो मुझे जैसे त्यौहार लगा,  
सबकी आँखें नाम थी पापा, पर मैं बहुत गर्वित सी थी,  
अमर शहीद के नारों ने, मेरे मन के कौर कोने में,  
कुछ लिखा पढ़ा, कुछ सिखलाया,  
कुछ बतलाया कुछ जतलाया,  
जब बढ़ी हुई संकल्प लिया,  
माँ भारत भूमि की खातिर में,  
सानंद रहूंगी हर क्षण पल,  
मैं वीर जवान की बेटी हूँ,  
मैं भी सेना में जाऊंगी  
भारत माता, जननी और जनक,  
मैं धन्य तभी कहलाऊंगी।

सुरुचि नागर

एम अस सी चतुर्थ सेमेस्टर

“आंसू कभी धोखा नहीं देते  
वे दिल की की गहराइयों से निकलते हैं।” - महादेवी वर्मा

## प्रहेलिका:

## सुभाषितानि

१.  
जलेन उत्पन्नो भवामि, श्वेतवर्णो चास्मि ।  
भोजने मिलित्वा चाऽहं, वर्धयामि तस्य स्वादम् ॥

२.  
श्यामवर्णः न कागः, नागोऽपि तस्य नामः न भुजङ्गः ।  
एकहस्तः पादाः तु चत्वारः, विचार्य कथयत को अयम् ॥

३.  
परम् शक्तिवानोस्मि अहम्, मनुष्यस्य कार्ये सहायोस्मि ।  
परन्तु पिबामि यदा जलम्, शीघ्रं गच्छामि सुरधामम् ॥

४.  
दानेन कदापि न न्यूना भवति, दीयमानापि सदा वर्धते सा ।  
चौराः न हरितुं शक्यन्ते याम्, वदतु वदतु का सा ॥

५.  
अस्म्यहं श्यामवर्णः, न मम प्रियः प्रकाशः ।  
भानु भवति अस्तः यदैव, आगच्छामि अहं तदैव ॥

६.  
श्यामा अस्ति न कागः, दीर्घा अस्ति न भुजङ्गः ।  
वक्रास्ति न रज्जुः, बद्धा भवति न पशुः ॥

७.  
द्वौ भ्रातरौ एक वर्ण, घनिष्ठं तयोः सम्बन्धम् ।  
किन्तु यदा एकः वियुक्तः, द्वितीयः निष्प्रयोजनः भवति ॥

भाषा चौहान  
शोध छात्रा "संस्कृत"

संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पल कोमल ।  
आपत्सु च महा शैलशिलासद्घात केशम् ॥  
(नीतिशतकम् ६६)

महतीमपि श्रियमवाप्य विस्मयः ।  
सुजनो न विस्मरति जातु किंचन ॥  
(शिशुपालवधम् १३.६८)

अथ मरणमवश्यमेव जन्तोः ।  
किमति मुधा मलिनं यशः कुरूध्वे ॥  
(वणिसंहारम् ३.६)

शब्दजालं महारण्यं चित्तभ्रमणकारणं ।  
अतः प्रयत्नाज्ज्ञातव्यं तत्त्वज्ञान्तेत्वमात्मनः ॥  
(विवेकचूडामणि ६२)

अहो समुद्रगम्भीर धीरचित्ता मनस्विनः ।  
कृत्वाऽप्यनन्य सामान्यमुल्लेखं नोद्गिरन्ति ये ॥  
(कथासरित्सागर १२.११.११५)

प्रत्यासन्नविनाशानामुपदेशो निरर्थकः ।  
(राजतरङ्गिणी ७.५५)

वैरस्य रूपमेतद् हि भेदं याति मुहुर्मुहुः ।  
सन्धीयमानमपि यत्क्लिन्नाम्बरमिवाशयम् ॥  
(राजतरङ्गिणी ७.३८४)

त्यजन्त्यसूत्रशर्म च मानिनो परं ।  
त्यजन्ति न त्वेकमयाचित्त्रतं ॥  
(नैषधीयचरितम् १.५०)

सिते हि जायते शितेः सुलक्ष्यता ।  
(नैषधीयचरितम् १२.२२)

किं खलु रत्नैरेतैः किं पुनरभायितेन वपुषा ते ।  
सलिलमपि यत्र तावकमर्णव वदनं प्रयाति तृषितानाम् ॥  
(भामिनी-विलासः ४०)

कंचन  
बी. ए. तृतीय वर्ष



उत्तरं:  
१. लवणम्, २. गजः, ३. अग्निः,  
४. विद्या, ५. तिमिरः, ६. शिखा, ७. उपानहौ

## तृषितः काकः

एते ग्रीष्मदिनानि आसन्, अतीव उष्णं दिवसं आसीत्, तृषितश्च एकः काकः जलं अन्वेषणमाणः यत्र तत्र भ्रमति स्म, परन्तु सः कुत्रापि जलं न आप्नोत्। काकस्य कण्ठः पिपासया शुष्यति स्म। बहुकालपर्यन्तं अन्वेषणे सः एकं घटं दृष्टवान्। काकः घटस्य समीपं गत्वा घटं दृष्ट्वा अश्चर्यचकितः अभवत्। यतः घटे अत्यल्पं जलम् आसीत्। सः घटे तुण्डं स्थापयित्वा बहुवारं जलं पातुम् प्रयत्नं अकरोत्। तदा तस्य मनसि एकः विचारः आगतः सः घटस्य परितः शिलाखण्डान् पाषाणान् च संगृह्य घटे क्षेप्तुं प्रारब्धवान्। शिलाखण्डानाम् अधो गमनमात्रेणः जलः शनैः शनैः उपरि आगन्तुं आरब्धः। ततः सः तुण्डं निमज्ज्य आनन्देन जलं अपिबत् तृष्णां शामयित्वा च स आकाशं प्रति उड्डीयते स्मः 'परिस्तिथि सर्वं शिक्षयति'। इति कथनम् उचितम्। कदापि परिस्थितेः दासः न भवेत्। वस्तुतः मनुष्यः स्वयमेव स्वभाग्यस्य निर्माता भवति। अतः सदैव साहसेन निष्ठावानं भूत्वा कार्यं कुर्यात्।

वीनू वर्मा

ऍम0 ए0 द्वितीय सेमेस्टर, संस्कृत

## विद्यायाऽहङ्कारः

एकः पुत्रः दीक्षितः भूत्वा गृहं प्रत्यागच्छत् सः पितरं प्राह - " तात। अहं सर्वान् विद्यान् अध्यगच्छम्। अहं विद्वानो अभवम्। मया सर्वं ज्ञातम्, अधुना किञ्चित् अपि ज्ञातव्यं नास्ति। "

पिता अवदत् - " वत्स, अद्यापि तव विद्या न संपूर्णा। जीवनस्य अनुभवैः बहु अपि ज्ञातव्यं यावत् जीवनस्य अनुभवैः किञ्चित् अपि न शिक्षयते। तावत् विद्याज्ञानं न पूर्णं भवति।

पुत्रः पितुः वचनं न स्वीकर्तुम् इच्छित स्म।

पुनः पिता अवदत् - " साधु, गच्छ पक्कं फलम् आनय।

पुत्रः - फलम् आहरति।

ततः पिता तम् अवदत् - इदं छिन्धि।

पुत्रः - फलम् छिनन्ति।

पिता अप्रच्छत् - " अत्र किं अस्ति "

पुत्र अवदत् " अत्र तु बहवः " बीजाः सन्ति : पितः।

पुनः पिता अप्रच्छत् - " किं त्वं जानासि वृक्षः कुतः उत्पद्यते ? "

पुनः शीघ्रं प्रत्यवदत् - " बीजात् पितः "

पिता अवदत् - " साधु एतं बीजं छिच्छि पुत्रः बीजं छिनन्ति।

पिता अप्रच्छत् : " कुत्र अस्ति अत्र वृक्षः पुत्रः मूकः अभवत्।

पिता तम् कथयति - " वत्स, एषा एव अनुभवस्य विद्या एतद् एव जीवनानुभवात् प्राप्तं ज्ञानम्, ज्ञातव्यं यत् विद्या सा अनन्ता, ज्ञानम्, असीमम्। विद्यायाः अहङ्कारः निरर्थकः।

" शब्दरूपं ज्ञानं मृषा भवति। मनुष्यः केवलम् अनुभवस्य नेत्राभ्यामेव तद् द्रष्टुं बोधितुं च समर्थः भवति।

" सत्यं ज्ञानं तत् एव यत् अनुभवेन सह परिपक्वं भवति विनयञ्च जनयति। "

अक्षिता त्यागी

ऍम0 ए0 द्वितीय सेमेस्टर  
संस्कृत

## सिंहमूषकयोः मैत्री

कस्मिंश्चित् अरण्ये कश्चन सिंहः वसति स्म । एकदा सः सुखेन सुप्तः आसीत् । तदैव एकः मूषकः स्वबिलात् बहिर् आगतवान् । क्रीडातत्परः सः मूषकः सिंहस्य पृष्ठस्योपरि आरूढ अभवत् । सः सिंहस्य शरीरे धावनं क्रीडनं च आरब्धवान् । अकस्मात् सिंहः जाग्रतः अभवत्, कोपेन च सः मूषकं स्वहस्ते गृहीतवान् । यदा सिंहः स्वमुखस्य निकटं मूषकमानीतवान् तदा मूषकः उच्च्वरेण चीत्कारं कुर्वन् अञ्जलीं बध्वा विनीत भावेन सिंहं प्रार्थितवान् - भो सिंह, हे मृगराज मां मा खाद । दयां कुरु । दयालु भूत्वा सिंह हः तं मुक्तमकरोत् । सः अकथत् कदाचित् भवतः आपत्काले अहं निश्चितरूपेणः तव सहायता करिष्यामि । हसन् सिंहः उक्तवान्- अहं सिंहः अरण्यस्य राजा । भवान् तु सामान्यः मूषकः कथं भवान् मम साहाय्यं कर्तुं शक्नोसि एवं परिहासं कुर्वन् सः दयया मूषकं अमुञ्चत् ।

अपरस्मिन् दिने केचन व्याधाः वने विचरन्ति स्म । सिंहं दृष्ट्वा ते तं जाले निब्ध अभवन् । सिंहोऽपि मुक्तये प्रत्यनं अकरोत् परन्तु सफलो न अभवत् । सः उच्चैः स्वैः गर्जितवान् । तस्य गर्जनं श्रुत्वा सैव मूषकः आगतः । सः सिंहमपश्यत् झटिति च जालस्य समीपं अगच्छत् । शनैः शनैः प्रयत्नं कृत्वा सः लघुकाय प्राणी जालं छेदने सिद्धो अभवत् । तदा सिंहः मुक्तं भूत्वा धन्यवादेन सह मूषकमथयत् 'अद्य प्रभृति आवां द्वौ मित्रौ' । इयं कथा शिक्षयति यत् प्रत्येकजीवस्य महत्वः अस्ति । न कोऽपि विशालः न च कोऽपि लघु, न कोऽपि महानः, न च कोऽपि तुच्छः भवति ।

कु. नर्गिस अहमद

एम० ए० संस्कृत, द्वितीय सेमेस्टर

## शिकागो यात्रा

त्रिनवत्युत्तर अष्टादश शत 1893 तमे वर्षे स्वामी विवेकानन्दस्य शिकागो नगरस्य यात्रा विश्वधर्म संसदस्य कृते आसीत्, यस्मिन् विश्वस्य बहवः प्रसिद्धाः धार्मिकगुरुवः अगच्छन् । अस्याः यात्रायाः विषये केचन महत्वपूर्णाः तथ्याः सन्ति -

स्वामी विवेकानन्दस्य प्रसिद्धभाषणम् -

स्वामी विवेकानन्दः स्व प्रसिद्धं भाषणं विश्वधर्मसंसदे दत्तवान् । यस्मिन् सः स्व धार्मिकदार्शनिकान् विचारान् प्रकटं अकरोत् । सः स्व भाषणे "अमेरिका-भगिनी-बन्धुश्चः" इत्यनेन संबोधनं कृतवान् । येन सर्वेषां मनाः प्रभाविताः अभवन् । सः सनातनं धर्मस्य शान्ति-सभ्यता- एकतादिनाम् अनेकानाम् गुणानां वैशिष्ट्यं अदर्शयत्

वैदिकहिन्दुधर्मस्तु विवेकानन्दभाषितः ।

सर्वजनोपयोगित्वात्तत्र श्रेष्ठतया मतः ॥

(विवेकानन्दचरितामृतम्, ॥५॥)

विवेकानन्दः स्वभाषणे जगतः सर्वधर्मान् समानं महत्त्वं दत्तवान् तथा च सर्वेषां धर्माणां उद्देश्यं समानं अकथयत् ।

स्वामी विवेकानन्दस्य एतत् भाषणं न केवलं शिकागो नगरे अपितु समस्त जगति प्रसिद्धं अभवत् । एतेन भाषणेन सः जगति अग्राणिधर्मगुरुयोगी- इति रूपे स्थापितः ।

अमेरिकादेशे स्वामी विवेकानन्दस्य अतीव भव्यं स्वागतम् अभवत् । अनेके जनाः तस्य विचारान् स्वीकृतवन्तः । इदं स्वागतम् विवेकानन्दः स्वदेशस्य अभिनन्दनम् अमन्यत् ।

विवेकानन्दचरितामृतम् काव्ये कवि इदमेव भावं कथयति -

" नगरे नगरे तस्य जातं यदभिनन्दनम् ।

मेने महामनास्तु भारतस्यैव वन्दनम् ॥"

(विवेकानन्द चरितामृतम्, ॥८॥)

स्वामी विवेकानन्दः युवकान् प्रेरितं कर्तुम् इदं नारा अददत् -

"उत्तिष्ठ जाग्रत न विवर्तत ।

यावत् लक्ष्यं न सिद्धयति ॥"



शिखा यादव  
बी. ए. तृतीय वर्ष

## सुविचाराः

आपत्काले तु संप्राप्ते यन्मित्रं मित्रमेव तत्।  
वृद्धिकाले तु संप्राप्ते दुर्जनोऽपि सुहृद्भवेत् ॥  
(पञ्चतन्त्रम् २.११८)

प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यो, देवोऽपि तं लंघयितं न शक्तः।  
तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे, यदस्मदीयं न हि तत्परेषां ॥  
(पञ्चतन्त्रम् २.११२)

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान्।  
आत्मन्येवात्मनां तुष्टः स्थिप्रज्ञस्तदोच्यते ॥  
(श्रीमद् भगवद् गीता २.५५)

धृतिः क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रिनिग्रहः।  
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥  
(मनुस्मृतिः ६.९२)

न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।  
गृहं हि ग्रहिणीहीनमरण्यसद्रश्यं मतम् ॥  
(पञ्चतन्त्रम् ३.१४५)

क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः।  
पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत् ॥  
(कुमारसंभवम् ५.४)

तस्मात् सत्यं वदेत्प्राज्ञो यत्परप्रीतिकारणम्,  
सत्यं यत्परदुःखाय तदा मौनपरो भवेत् ॥  
(विष्णुपुराणम् ३.१२.४३)

न ह्यस्यास्ति प्रियः कश्चिन्नाप्रिय स्वः परोऽपि वा।  
आत्मात्वात्सर्वभूतानां सर्वभूतप्रियो हरिः ॥  
(भागवतम् ६.१७.२३)

अचिन्त्यो हि महात्मनां प्रभावः।  
(कादंबरी)

दुःखितमपि जनं रमयन्ति सज्जन समागमः।  
(कादंबरी)

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।  
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारभ्यतूत्तमजनाः न परित्यजन्ति ॥  
(भर्तृहरिः नीतिशतकम्)



सोनम  
बी. ए. षष्ठ सेमेस्टर, संस्कृत

## Spectrum of Cultural Activities



Convener and members of cultural committee gathered at the sahtyik sanskritik parishad award ceremony, celebrating art, literature and culture.



Students showcasing creativity in the 'Best out of waste' competition under the guidance of teachers.



Our dedicated volunteers: The pillars of cultural events.



Teachers with participants of the 'Mehandi Competition' celebrating creativity and teamwork.



Students proudly showcasing their creative artwork during the poster competition.



Students showcasing their creativity through beautiful 'Rangoli' designs during the competition.

## Drawing and Painting Exhibition 2024-25



Our Principal Prof. Sanjay Kumar Singh along with Secretary Shri. Abhinav Krishna and Chief Guest keenly observing the creative artworks displayed during exhibition.



Principal sir along with guests and students during Drawing & Painting Exhibition



Faculty and students posing together during Exhibition.



Esteemed dignitaries unveiling the catalogue during exhibition and making a moment of pride and celebration.

## Highlights of sports activities



Sports stars of our college celebrating their victory with the principal and members of the department of physical education.



Students embracing Wellness through yoga on campus.



Team Spirit and determination on display at the sports ground.



Players geared up with energy and excitement, ready to begin the game.



Opening ceremony filled with encouragement and motivation as dignitaries interact with players before the game begins.



Champion being felicitated with a trophy for his outstanding performance in the weightlifting.



Victorious moment at the CCS University Inter Collegiate Championship as winners proudly receive the medals and celebrate success on the podium.



Winners are lifting the trophy with pride.

## Basant Panchami Celebration



Secretary Shri Abhinav Krishna along with Principal Prof. Sanjay Kumar Singh offering floral tribute at the statue to honour the legacy and values that inspire generations.



Esteemed Secretary Shri Abhinav Krishna and Principal Prof. Sanjay Kumar Singh offering flowers to Maa Saraswati.

## Felicitation of Our Bright Stars



Felicitation of the Student Akansha selected as SDM honoured by Principal and other faculty members for her remarkable achievement.



Gini Bhati (B.Sc. 3rd year) and Raunak (B.Sc. 3<sup>rd</sup> year) gold medallist being felicitated by Principal Prof. Sanjay Kumar Singh along with Jitender Pal and Rosy Mishra for their outstanding achievement in All India University Tournament held at University of Jammu and University of Mohali respectively.

# NCC Rank Ceremony (2024-25)



1 Akansha Chauhan NCC-C Cadet  
2 Anupriya NCC-B Cadet (Rank Holder)



CO Sandeep Pandey 37 U.P. Battalion Ghaziabad and  
Principal Prof. Sanjay Kumar Singh during Rank  
Ceremony 2024-25 session.



Group photo of NCC Cadets with Principal Prof. Sanjay Kumar  
Singh, Officers of NCC and faculty members.



Visit to Parliament by Students of Law Faculty alongwith Principal Prof. Sanjay Kumar Singh & Faculty Members



C.C.S. University, Meerut N.S.P.C. Releasing of Poster

## Annual Prize Distribution Function



The chief Guest Shri Srichand Sharma (MLC) along with Principal Prof. Sanjay Kumar Singh and Secretary Shri Abhinav Krishna inaugurating the function by lighting of the ceremonial lamp.



Principal Prof. Sanjay Kumar Singh and Secretary Shri Abhinav Krishna honouring the Chief Guest Shri Srichand Sharma (MLC) by presenting a memento.



A memento was presented to the Chief Guest Shri Sanjeev Kumar (Vidhayak) by Principal Prof. Sanjay Kumar Singh and Secretary Shri Abhinav Krishna along with Dean Student Welfare Prof. Prakash Chaudhary and Chief Proctor Prof. Ravinder Yadav



Student honoured with award and certificate by distinguished Chief Guests



Esteemed Chief Guests alongwith Principal presenting certificate to students in recognition of their achievements



The Chief Guest Shri Srichand Sharma (MLC), Shri Sanjeev Kumar (Vidhayak) along with Principal Prof. Sanjay Kumar Singh and Secretary Shri Abhinav Krishna, Dean Student Welfare Prof. Prakash Chaudhary and Chief Proctor Prof. Ravinder Yadav gracing the Annual Prize Distribution Function.



Teachers and students attentively listening to the speaker during annual event

## College Committees

### Proctorial Board



**Sitting Row:** Prof. Shalu Tyagi, Prof. Rakhi Dwivedi, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Prof. R.S. Yadav, Prof. Kaamna Yadav, Dr. Vinita Dheeran

**Standing Row:** Prof. Alka Vyas, Dr. Hari Dutt Sharma, Dr. Umesh Kumar, Prof. R.P. Patel, Prof. Uttam Kumar, Dr. Preeti Raawat

### D.S.W.



**Sitting Row:** Prof. Subhashini Sharma, Prof. Prakash Chaudhary, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Prof. Rosy Mishra, Prof. Madhu Srivastav, Prof. Meena Verma, Prof. Vandana Semalty

**Standing Row:** Prof. Jamuna Prasad, Prof. Manmeet Siras, Prof. Sanjeet Pratap Singh, Prof. Kumudesh Kumar Singh

## Anti Ragging Committee



**Sitting Row:** Dr. Chhaya Rani, Smt. Meenakshi, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Prof. Ravinder Yadav, Dr. Harshita, Dr. Anuradha

**Standing Row:** Sh. Shivam Gupta, Dr. Abhishek, Sh. Moolchand Verma

## Cultural Committee



**Sitting Row:** Prof. Abha Dubey, Prof. Subhashini Sharma, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Prof. Rosy Mishra, Prof. Sunita Singh, Prof. Kalpana Dubey

**Standing Row:** Shri Shivam Gupta, Sh. Mool Chand, Dr. Poonam Chaudhary, Dr. Harshita Ojha, Prof. Suta Kumari

## IQAC Committee



**Sitting Row:** Prof. Alka Vyas, Prof. Shalu Tyagi, Prof. Aparna Malhotra, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Dr. Anirudh Kumar Bhargava, Dr. Inamur Rehman, Prof. Seema Kohli, Prof. Anil Govindam  
**Standing Row:** Prof. Seema Sharma, Dr. Hari Dutt Sharma, Shri Avnindra Singh, Praveen Kumar

## Career Cell (IAISDC)



Prof. Jamuna Prasad, Prof. Prakash Chaudhary, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Prof. Seema Kohli, Prof. Rosy Mishra, Dr. William

## Examination Committee



Prof. Jamuna Prasad, Prof. Ravindra Yadav, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Prof. Prakash Chaudhary, Dr. A. K. Shah, Prof. Alpa Singh, Dr. Kumudesh Singh

## Women Development Cell



**Sitting Row:** Prof. Shalu Tyagi, Prof. Abha Dubey, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Prof. Aparna Malhotra, Prof. Seema Sharma, Preeti Chauhan  
**Standing:** Shri. Avindra Singh

## Website Committee



Dr. Rajpal Tyagi, Dr. Inamur Rehaman, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Prof. Kamna Yadav, Dr. Chayya Rani, Shri Ankur Yadav

## Innovation Cell



Prof. Subhashini Sharma, Dr. Rajni Singh, Prof. Sanjay Kumar Singh (Principal), Prof. Abha Dubey, Dr. Harshita Ojha, Prof. Aparna Malhotra

# Global Skills: Creating Empowered 21<sup>st</sup> Century Citizens

21<sup>st</sup> century life is characterized by rapid change. With advances in digital technologies, rising global competition and greater diversity and mobility, human communities are in constant flux and a corresponding pace of change can be observed in the workplace. It is increasingly recognized that education needs to cover more than traditional subjects in order to equip learners to flourish in future. Students of all ages need to learn the skills that are critical for the lifelong learning and success.

In a dynamic and fast-evolving 21<sup>st</sup> century world, it is increasingly recognized that students need to learn the global skills that are critical for lifelong learning and success. Developing global skills can prepare students at all levels of education for active participation in our rapidly changing 21<sup>st</sup> century society. As global skills have become increasingly relevant, many educational frameworks describing them have been produced. In general, global skills can be grouped into five independent skills clusters. These are all applicable to English Language Teaching and learning settings:

- Communication and collaboration
- Creativity and critical thinking
- Intercultural competence and citizenship
- Emotional self-regulation and wellbeing
- Digital literacy

Global skills can and should be accessible to every learner in every education setting. They prepare learners for lifelong success, not only academically and professionally but also personally. Moreover, with its typical emphasis on communication, collaboration and competence, the English language classroom is particularly suited to the development of global skills. As they develop their global skills, learners become empowered and fulfilled citizens of an increasingly globalized 21<sup>st</sup> century world.

Many skills which are now labeled in education as 'global skills' are not new, concepts such as communication, collaboration and critical thinking have existed for a long time. What is new is the recognition that these global skills can and should be taught in any subject. While they can sometimes appear difficult to teach and learn, an integrated educational approach can make global skills accessible to all learners, whatever their educational context.

There are a number of frameworks of 'global skills' publicly available. These frameworks show the importance given to the development of global skills for today's learners, at all levels of schooling. The following four frameworks have notable international standing and all are relevant and applicable to ELT contexts.

## UNESCO's four pillars of Education:

UNESCO (The United Nations Educational Scientific and Cultural Organization) proposes four "pillars of education" that reflect the fundamental principles necessary for preshaping education to make it relevant to today's world and future.

**Learning to know:** Developing the cognitive tools which are required to better comprehend the world and its complexities, and learning to learn.

**Learning to do:** Acquiring knowledge and social skills to support effective participation in the global economy and society.

**Learning to live together:** Developing an understanding of other people and human interdependence and respecting the values of Pluralism, mutual understanding and peace.

**Learning to be:** Developing one's personality and an ability to act with autonomy, judgement and personal responsibility.

This framework is connected with continuous development and learning in a global context at all stages of education.

The framework for 21<sup>st</sup> Century learning focuses on the skills and knowledge needed to thrive in the 21<sup>st</sup> century and also on the systems necessary to support learning outcomes. This framework is the source of the '4Cs' understanding of 21<sup>st</sup> century skills- critical thinking, communication collaboration and creativity and has gained particular traction in the NEP-2020 Framework. Teaching of these skills needs to be underpinned by our essential support systems. The framework emphasizes that for global skills to be successfully developed, several key macro issues need to be taken into account. These include the suitability of assessment approaches, curriculum and instructional methods, learning environments as well as the provision of professional development for educators.

Citizenship is closely related to the promotion of intercultural values, such as respect for diversity and the reduction of discrimination and prejudice. Citizenship also includes a specific set of competencies related to an individual's role in local and

global communities. International targets for sustainable living practices are becoming a focus in education. Many school textbooks already address topics and themes such as the environment, global citizenship, social justice, inclusivity, politics and finance.

Teaching practices to promote intercultural competence can include critical reflective engagement with films, literature and other cultural artifacts such as newspapers, magazines, advertisements, pop/folk songs, radio programs and podcasts. Excursions, exchange visits, online partnerships and cultural visits also represent ideal learning opportunities, as do multicultural classrooms. With respect to citizenship, alongside the typical in-depth projects and textbook units, teachers can exploit topical issues in the media for discussions or debates in class. Learners can also be encouraged to reflect on their own actions and participation in their communities.

In short, developing global skills is widely accepted as an important aim of education across all subjects and in all disciplines. English language teachers too can choose to introduce global skills in a sustainable way that is achievable for them and their learners. I personally believe that we have to teach more in our English classes than reading, writing, listening and speaking. Our students need to be able to solve problems, use creativity and communication technologies, interact cross-culturally and be innovative.

**Professor Surekha Ahlawat**  
Department of English



*"To have another language is to possess a second soul". - Charlemagne*

## Arjun: The Eternal Warrior

In the heart of battle, where courage is tested. Arjun stood firm, his spirit invested.  
With bow in hand and resolving eyes, he faced his fate beneath the skies.  
Doubt may have whispered, fear may have called, But Arjun rose, though darkness installed.  
He sought the truth not for fame, but to honour the duty that admire his name.  
Through the storm of questions, through the pain he found in Krishna's wisdom, strength to sustain.  
"Arise, O Arjun, let go of the fear, The path is clear, the answer is near."  
He learned that victory is not in the fight, but in standing tall for what is right.  
To rise, to fall and rise again- This is the Warriors destiny to attain.  
So when your path seems tough to tread, And you feel lost with courage dead,  
Remember Arjun, who faced the strife and chose to walk the path of life.  
With every challenge, a lesson to learn, with every setback, a chance to return.  
For like Arjun in the end you'll see, that true strength lies in being free.

**Aditi Nagar**  
Research Scholar  
Dept. of English

# Importance of Dreams

Dreams are fascinating phenomenon that reflect a mix of thoughts, sensations and experiences occurring during the sleep. They can evoke a wide range of emotions, from humor and please to fear and confusion, serving as a window into the subconscious mind. Dreams often help us to deal with unresolved feelings and issues. Despite much research, we still don't fully understand dreams. Many cultures have been fascinated by dream interpretation throughout history. Different societies of different eras offer various beliefs and practices related to dreams. To understand dreams, we need to look at how and why they happen, highlighting their importance in life. By exploring the history of dream interpretation, we can better understand their role in human life.

Dreams are more than just random images; they serve as valuable insights into our subconscious mind, emotions and even daily life experiences. They reflect our hidden fears, desires and unresolved conflicts, offering a deeper understanding of our thoughts and feelings. Psychologists like Sigmund Freud and Carl Jung believed that dreams reveal suppressed emotions and archetypal symbols, helping individuals connecting with their inner selves. Dreams help people deal with unresolved emotions, especially when they face trauma, anxiety or personal challenges. During the day, people might push these feelings away but at night, their subconscious mind brings them back in dreams. For example, someone who is grieving might dream about a lost loved one, which can help them express feelings that are hard to show while awake. Similarly, a person with anxiety might dream about their fears, allowing them to practice handling stressful situations in a safe way. This process can help release emotions, provide insights, reduce stress and lead to better psychological balance.

Dreams aid in emotional processing problem solving and creativity by allowing the mind to explore beyond conscious limitations. By understanding our dream we can learn more about our feelings and thoughts. They connect us to different experiences and emotions, helping us face things that are hard to process when we are awake. In this way, dreams serve as a mirror that reflects our true selves and the world around us.

It is believed that dreams can predict future. The most famous example of it is the dream of the President Abraham Lincoln shared a hunting dream with Ward Hill Lemon just days before his assassination. In his dream, he wandered through the White House and stumbled upon a funeral scene. When he enquired about who had died, a soldier ominously replied, "The President". There are several people who claim their dream predict the future incidents. Across cultures, dreams have been interpreted as divine messages, prophecies or reflection of one's spiritual journey. Many traditions use dreams for guidance and self-discovery.

Many artists, writers and scientist have drawn inspiration from dreams. They stimulate creativity by allowing the mind to think beyond logical constraints, leading to new ideas and innovations. The great mathematician Ramanujan was one of them. He claimed that he solved the equation in dreams and a goddess helped him. In one of his writings, Ramanujan recounted a remarkable dream where he envisioned a red wall. Suddenly, a hand appeared and began to inscribe mathematical equations in rapid succession. Ramanujan was able to memorize all these equations and upon waking, he verified their validity. He noted that these equations were not only crucial and accurate but also far ahead of their time.

Many creative breakthroughs and scientific discoveries have been inspired by dreams. They allow our brain to make connections we not consciously consider, leading to innovative ideas. Elias Howe, though not a conventional artist, envisioned being attacked by spear-wielding warriors with holes at the tips in his dream, which inspired him to invent the modern sewing machine.

Throughout history, several notable figures have drawn inspiration from their dreams, leading to groundbreaking creations. Paul McCartney composed the melody for the Beatles' iconic song "Yesterday" after waking from a dream, initially wondering id it was forgotton tune before realizing it was entirely original. Mary Shelley's classic novel Frankenstein originated from a nightmare in which she envisioned a scientist animating a corpse, a concept she later described as a "Waking dream". In a different realm, S.T.Coleridge wrote his famous poem Kubla Khan after awakening from a vivid dream. Lastly, Salvador Dali's renowned painting of melting clocks was born from a dream, utilizing a technique known as "dream-induced hallucinations" to delve into his subconscious and create surreal imagery. These instances highlight the profound influence that dreams can have on creativity and artistic expression.

Dreams have a profound ability to symbolize and illuminate solutions to the challenges we face in waking life. By paying close attention to these fleeting visions, you can give your mind the workout it needs to tackle obstacles creatively, even while you are at rest. Also, Dreams can sometimes act as early warning signs, hinting at potential health issues that may require your attention.

So, harness the power of your dreams for creative inspiration. Consider delving into your dreams as a source for crafting captivating stories, the narratives that unfold in your sleep can ignite your imagination and furl your writing. Embrace the extraordinary and surreal imagery from your dreams to weave evocative poetry that resonates on a deeper emotional level. Vivid dreams can serve as a muse for your artistic endeavors, inspiring striking paintings that capture the essence of your subconscious mind. By studying and reflecting on your dreams, you have the potential to transform your life, enriching your creativity and enhancing your well-being. Embrace the journey into your dream world and discover how it can lead you toward a brighter, more fulfilling existence.

**Pinki Rani**  
Research Scholar  
Dept. of English

*"The future belongs to those who believe in the beauty of their dreams." - Eleanor Roosevelt*

## Dream Trap

The shadow of a tree,  
made me feel free.  
The sad voice of birds,  
made me feel worse.

I thought it's a trap,  
But then I felt it's just crap.  
I decided to leave this place,  
Suddenly I felt someone chase.

The stone glanced off a crag,  
And hit me on the head.  
I shouted, creamed and leaned,  
But when I woke up, I found it was just a dream.

**Ansh Veerbhan**  
B.Sc II Semester

## Teenage

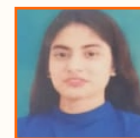
An age to study hard,  
A time to accelerate not to retard,  
Toiling hard with books in hand,  
with minds travelling in fairy lands.

Wandering places like chirping birds,  
and glances showering pointed arrows,  
forced to return from place to place,  
in order to study and explore the space.

Working hard in Moon and sun,  
longing to recede and have some fun,  
expressions growing grave and fail,  
faces telling life's tale.

Absorbed in book day and night,  
fighting with the urge to fight,  
trying the most to beat the best,  
to reach to the top before the rest.

Don't make our lives a burdened sack,  
like donkeys carrying weight on back,  
give us some air to breathe,  
like a bud stretching out for breeze.



**Kirti Verma**  
M.Sc Zoology IV Sem

# Revitalizing Roots

## Integrating India's Cultural Heritage Through NEP2020

*"To other countries, I may go as a tourist, but to India, I come as a pilgrim."*

*Martin Luther King Jr.*

This thought brilliantly sums up India's incredible heritage as a land brimming with wisdom knowledge and spirituality. For centuries, India has been a country for those seeking truth, education and personal growth- an intellectual and philosophical haven. The rich cultural tapestry of Indian subcontinent has established itself as a significant centre of knowledge and understanding for ages. From the ancient universities of Takshashila and Nalanda, to timeless texts like the Vedas, Upanishads and Arthashastra, this region has shaped perspectives in crucial fields such as mathematics, astronomy, medicine, and philosophy. Education, however, in ancient India was not merely an act of handing down knowledge, but it was about overall development of the individual to nurture the body, mind and spirit. The education sector plays a pivotal role in shaping the socio-economic development of a state. Historically, India had a knowledge system that not only ensured the effective transfer offer holistic episteme from generation to generation but also its enhancement as per the requirements of age, nation and society. A smooth transition of this tradition to the modern day was hampered by successive colonial interference is leading to severe and glaring gaps in the modern education systems.

The National Education Policy (NEP) 2020 is a revolutionary approach to reconciling India's rich cultural heritage with the needs of the 21st century. By incorporating indigenous Indian knowledge systems into the contemporary education system, the policy seeks to foster a comprehensive learning culture that endows student with both cultural wisdom and modern skills. Carrying this idea forward, NEP2020 proposes the concept of constructing an Indian education system that has a very firm base in Viksit Bharat @ 2047. The policy is designed to harness India's rich cultural heritage to equip its youth for future endeavours. It marks an exciting shift in the country's educational scene, blending the rich and diverse culture of India with modern teaching methods. At the heart of this policy is the creation of Indian knowledge systems (IKS) Which includes traditional subjects such as Ayurveda, yoga, classical arts and ancient sciences, alongside the contemporary curriculum. This integration seeks to develop a holistic and multidisciplinary approach to learning, enriching students' experience by connecting them to the intellectual legacy of India. In addition, NEP2020 is also an advocate of multilingualism and invites the regional languages, be it Hindi or English, into the education. The policy emphasises the focus on arts and culture as it imparts courses with classical arts, crafts and music into educational curriculum, inspiring creativity and safeguarding cultural practise in one's own land. Such a method does not only help in cognitive improvement but also enhances cultural bonding. Efforts towards translating undergraduate course books into various Indian languages as well as holding competitive exams in regional languages depict the policies commitment to preserving our linguistic legacy. It aims at development and identifying culture among the students through such efforts. By weaving India's cultural heritage into the fabric of modern education, NEP 2020 aspires to create a system that honours the past while equipping students for the future. This fusion enriches the learning experience, fosters national pride and positions India to share its rich legacy with the world.

*"True education must correspond to the surrounding circumstances or it is not a healthy growth."*

*- Mahatma Gandhi*

**Anjali**

Research Scholar

Dept. of English

# Rights And Duties

## A Constitutional Conundrum In India



**INTRODUCTION:** Right and duties: Morning drum refers to the complex and sometimes conflicting relationship between the rights guaranteed to the individuals by the Constitution and the duties expected of them as members of the society. Fundamental rights are considered inalienable and they protect individuals from arbitrary actions of the state and ensure personal liberties. Rights like freedom of speech and expression, religion, equality and personal liberty are very crucial in our democratic setup. However, these rights are not absolute. They're subject to reasonable restrictions, especially when they infringe upon the rights of others or threaten public order, morality or national security. This conditionally introduces the need to examine how rights operate alongside duties. The duties, though non-justiciable, serve as a moral compass for reasonable citizen and promote harmony. They emphasise that rights must be exercised with a sense of duty and not in isolation or disregard for the collective good.

**CONSTITUTION OF INDIA: A Living Document:** The Constitution of India adopted in 1950 and shrines and guarantees fundamental rights and expects that duties will also be fulfilled. The relationship between rights and duties has often been marked by tension, contradiction and debate giving rise to a constitutional conundrum. A Constitution is regarded as the supreme legal document of a nation, defining the structure of the government and safeguarding the fundamental rights of its citizens. Inherent within this framework lies a critical tension between rights and duties.

**Part III of India Constitution:** This part of the Constitution lays down the fundamental right which are the cornerstone and the bedrock of the Indian democracy, as well as the shield of the individual. Part III includes the Right to equality (Articles 14 to 18), the right to Freedom (Articles 19-22), the right against Exploitation (Articles 23-24), the right to freedom of religion (Articles 25-28), cultural and educational rights (Articles 29-30) and the right to constitutional remedies ( Article 32). These rights ensure that individuals can live worth dignity, participate in public life and seek protection against the excesses of the state. It is to be kept in mind that these rights are not absolute, and this conditional nature of rights is where the question of duties often enters the discussion.

**Part IV-A of the Indian Constitution:** Fundamental duties were introduced by the 42nd Amendment in 1976 and are outlined in Article 51 A. These include duties such as respecting the Constitution and the national symbols, promoting harmony, preserving the environment and developing scientific temper. While these duties are not enforceable by courts, yet they reflect the spirit of responsible citizens. The inclusion of duties is heavily influenced by the philosophy that rights and duties must go hand in hand. Mahatma Gandhi once said "The true source of rights is duty. If we all discharge our duties, rights will not be far to seek."

**THE CONUNDRUM: Conflict or complement- A Delicate Balance:** The constitutional conundrum arises from situations where the exercise of a right may hinder the performance of a duty or vice versa. In other words, despite the complementary nature of rights and duties, their practical application often creates conflict. The challenge arises when the assertion of rights clash with the fulfilment of duties, raising questions about their mutual compatibility and the extent to which one should take precedence over the other. Some Examples:

- i. A citizen's right to freedom of expression may come into conflict with another's right to dignity and privacy.
- ii. The right to freedom of speech and expression can also clash with the duty to promote harmony and avoid inciting hatred.
- iii. The right to protest must be weighed against the duty to maintain public order and not obstruct essential services.

These conflicts revealed the interdependent nature of rights and duties and gives rise to difficult questions, the layer of conundrum:

1. Should rights take precedence over duties?
2. Should the state prioritise the enforcement of duties?
3. Are citizens too focused on claiming rights?
4. Are citizens neglecting their duties?
5. Can a democracy truly function if duties are only advisory?
6. Should duties be elevated to equal importance?
7. In time of national crisis, social unrest and environmental emergencies, what should take precedence?

**CONCLUSION: Towards a Harmonious Coexistence:** As the debate continues among legal scholars, policymakers, and philosophers, resolving constitutional conundrum requires a balanced approach. This must be preserved and expanded where necessary but they must also be exercised responsibly, with awareness of the broader social and legal context. Simultaneously,

duties should be internalised as part of the civic education and democratic engagement. In an ideal constitutional framework, rights and duties are not opposing forces, but complementary pillars of a just and equitable society. The corner room between rights and duties is not merely a legal issue, but a Philosophical one too. Rights without duties lead to chaos, duties without rights lead to oppression. The true spirit of the Constitution lies in a symbolic relationship between the two. The judiciary has often emphasised the importance of balancing rights with duties. The Supreme Court in *AIIIMS Student Union v. AIIIMS* (AIR 2001 SC 3262) held that Fundamental duties, though not enforceable by a writ of the court, provide a valuable guide and aid to interpretation of constitutional and legal issues. The fundamental duties should not be overlooked while exercising fundamental rights. As India continues to evolve, nurturing a culture that respects both rights and duties is crucial to ensuring justice, liberty, equality and fraternity- the very enshrined in the Preamble.

**Prof Sunanya Trisal**  
Dept. of Law

*"Every right implies a responsibility: Every opportunity, an obligation, Every possession, a duty." - John D. Rockefeller*

## Artificial Intelligence: Shaping the Future

### Introduction:

Artificial intelligence (AI) is no longer science fiction-it is a reality that is changing our world today. From Siri and Alexa, virtual assistants to autonomous cars, AI is transforming industries, making life easier and expanding the limits of human capabilities.

### What is AI?

AI is computer programs that can carry out tasks requiring human intelligence, including learning, problem-solving, reasoning and decision-making. Machine Learning (ML) and Deep Learning (DL) are branches of AI that allow computers to learn from data and become better over time.

**Applications of AI:** AI is being incorporated into many fields, contributing enormously to society:

1. **Healthcare:** AI driven diagnostic equipment assists in identifying diseases such as cancer at an early stage. Robotic surgery and AI-Based drug discovery are also revolutionizing medical science.
2. **Education:** AI-driven personalized learning platforms learn to adjust according to individual students' needs, enhancing the quality of education. Virtual tutors and AI-based grading systems are also becoming popular.
3. **Business and Finance:** AI aids in fraud detection, risk evaluation and automated customer support using chatbots. It also aids in stock market forecasting and financial planning.
4. **Entertainment and Media:** AI is utilized by streaming services such as Netflix and Spotify personalized content. AI is also applied in video game development and content generation.
5. **Transportation:** Self-driven cars, AI-based traffic management and intelligent navigation systems are making transport safer and efficient.

### Ethical Concerns and Challenges:

Although it has advantages, AI has several ethical issues associated with it, including:

**Job Displacement:** AI can take over human jobs across different sectors.

**Bias in AI:** AI systems can inherit the existing biases in data used to train them, resulting in discriminatory results.

**Privacy Concern:** AI-based surveillance and data collection pose privacy threats.

**Security Threats:** AI can be abused for cyber-attack and deep fake technology.

### The Future of AI:

The possibilities of AI are endless in the future, ranging from robotic advancement to scientific breakthroughs via AI. Yet ethical AI creation and responsible use will be essential to guarantee that AI serves humanity.

### Conclusion:

AI is transforming the world, with tremendous potential for development and growth. Challenges are present but responsible innovation and regulation can be used to unlock AI's potential for the good of the society. The solution is to use AI intelligently-augmenting human capabilities instead of substituting them.

**Beenu**  
LL.B. IV Sem

*"The future of AI is not about replacing humans, It's about augmenting human capabilities." - Sunder Pichai*

## Is our default set to self-destruct?

After ample experiments, humankind was successful, could do everything on its own and was believed to grow. Through the ages, we have developed, grown, created and destroyed too. As we believed mankind was set towards growth, what did we achieve? What significance did we create? Most important of all, are we still sustained towards growth?

The very recent scenarios forced me to think about what humans are up to now. Initially, we learned to make fire, built, hunt, eat, cook and sustain in the environment. A lot of growth indeed! Going back to various historical errors, priorities were very different. Used to hunt to survive, then they started owning territories.

Marking their tribes, building communities, setting up colonies, travelling and exploring the globe. Then Kingdoms were established, people ruled and religions and castes were created. The trend became to fight, wars took place. Kings, in order to mark their rule in power, started to declare wars and abducted kingdoms.

Aligning all this without basic necessities, I gathered that humans first worked for their will to survive and uphold, the ability to reproduce and then greedy over authority and power.

Undoubtedly, the World has changed a lot and people are thinking of more than just powers, survival and reproduction. But even after gaining all that we have now, are we going towards evolution?

There is so much more to the world now. We are working on technical development, establishment progress in the profession, gaining educational achievements, mutual benefits and economic growth. And somewhere among all this, we try to find peace, a fulfilling life and happiness. That is what I believe we all desire.

Everything that we work for, everything that we do, consciously or unconsciously, we do with the purpose of fulfilment and attainment. Directly, what gives us happiness varies for every individual.

For example, As we take, some find comfort in food and some may go to a serene place to connect with themselves. Mother Nature also sometimes helps us connect with our spiritual being.

Now I would like to probe you over the very recent scenarios and changes occurring across the globe over a few years. There has been a lot of chaos, lives have taken a very different turn and as I see all this, I'm very sure we all know what I'm talking about.

As we move forward, many things that were once considered wrong are now gaining a better understanding. People are breaking free from stereotypes, superstitions, an outdated customs and traditions. This shift is truly encouraging. As time progresses everything evolves and it is essential that we adapt accordingly. But up to what extent?

People are breaking barriers, creating and achieving new goals, but what meaning does that hold?

Various things that were considered unconventional are being normalized now, creating more independence and freedom for people. But what about the social responsibility?

Whereas changing the time is crucial, altering mindsets according to the time is necessary and breaking barriers and superstitions is vital for development. For once, let's just consider all the limitations of the changes scientific reasoning and meaning and examine potential risks.

The technological advancements that were a boon to us, now with excessive usage are causing serious physical and mental impairments. Society has advanced with its facilities and buildings, but all that is visible now is concrete jungles. Everything is available at our doorstep making us lethargic and lazy. Ultimately resulting in adopting unhealthy habits. The unusual working hours result in disturbed sleep cycles, which go against our biological clocks, thus, A hub of illness and diseases. With the emergence of social media, People have become highly jovial, but just digitally. Physically, everyone has to be pushed or dragged out.

Modern culture provided freedom and independence to all, but somewhere became the reason for the vanishings of cultural roots and traditions. Earlier, when performing every task somehow pressured everyone to think of their social responsibility, the 'not being a model' idea is assumed by people themselves and that is how they are moving forward with it. Does this imply that people are not learning by actions?

I'm not saying that freedom or independence is wrong, but there is a strict need to focus on the extent to which these changes are decent. The social instability caused by all the transformations, history itself being an alibi, never had outcomes. The work culture we are striving to create is having a profoundly stressful impact on individuals, leading to a disturbing decline in mental well-being. We are observing a growing number of sudden and unusual incidents that surpass the boundaries of typical psychological behaviour. The troubling trend highlights the urgent need to address the pressures that our work environment is exerting on Employees, as the consequences, we are becoming increasingly alarming.

Every individual is unique. Therefore, I advocate that the definitions of right and wrong are highly varied. However, everything rests on the same principles and considering the outcomes is our responsibility, not just socially but as members of humanity. We need to identify behaviours that may stem from ego, intentions to rebel or desires to create our own distinct identity. In this process, mindset to work towards what is right has faded away, overshadowed by our greed and desires.

It is time to wake up and take responsibility. We must acknowledge and accept our actions, identify what is truly exemplary and eliminate what is unfit? Our default setting was set for growth, not destruction.

**Ketki Saxena**  
B.A Sem VI

*"I have met my enemy, and it is me." - Alexander The Great*

# The Future of AI in India: Shaping Tomorrow Today

Artificial Intelligence (AI) is rapidly transforming the global technological landscape and India is no exception. As one of the world's largest and most dynamic economies, India stands at a pivotal moment in its journey toward embracing AI. With the combination of a large, young population, a thriving tech ecosystem and a growing demand for innovation, India has the potential to be a major player in the AI revolution. But what does the future of AI in India look like? Let's explore how AI will shape the country's future.

## **AI as a Driver of Economic Growth:**

India's economy is expected to benefit significantly from AI Integration. By 2035, AI could add an estimated \$957 billion to India's GDP, representing around 15% of the nation's economic growth. AI technologies can optimize key sectors such as manufacturing, agriculture, healthcare and education, leading to enhanced productivity, cost savings and innovation.

## **Manufacturing and Automation:**

In industries like manufacturing, AI-powered automation will reduce costs, improve quality and increase efficiency. Smart factories using AI will lead to a new wave of industrial growth.

## **Agriculture:**

AI can help revolutionize India's agriculture sector by improving crop yields, managing resources efficiently and predicting weather patterns, all of which are crucial in a country with a heavy reliance on agriculture.

## **Healthcare:**

With AI-based tools for diagnosis, drug discovery and personalised treatment, the Indian healthcare system can become more accessible, efficient and effective. AI will also help bridge the gap in rural healthcare by providing telemedicine and remote diagnostics.

## **Education:**

India has a vast education system and AI can play a transformative role in shaping its future. AI-powered platforms can provide personalised learning experiences for students, adapt to individual learning speeds and offer tailored resources to maximize learning outcomes. AI can also assist in administrative tasks, freeing up educators to focus more on teaching.

In the future, India could see the widespread adoption of AI-driven tools like virtual tutors, AI-based assessment systems and automated content creation platforms, making education more accessible and efficient.

## **Impact on Jobs: A double-edged Sword:**

Like many other countries, India faces the challenge of job displacement due to AI and automation. While AI will create new jobs in sectors like data science, machine learning and robotics, it could also lead to job losses in more traditional sectors like retail, manufacturing and agriculture. However, India's demographic dividend of a young workforce can be an asset in this transition. With the right focus on re-skilling and up-skilling, India can prepare its workforce for the AI-powered future. Vocational training, lifelong learning initiatives and public-private collaborations will be key in ensuring a smooth transition.

## **Indian Startups and Innovations:**

India's start-up ecosystem has already made significant strides and AI is expected to drive further innovation. AI-enabled start-ups in India are tackling diverse problems across industries, from fintech to healthcare to agriculture. Government initiatives like Startup India and Atal Innovation Mission are creating an environment that supports AI-focused entrepreneurs. With increased investment in AI and Machine learning, Indian start-ups can lead the charge in global AI Innovation.

**Sweta Basoa**  
B.A Sem II

# Women in Stem: Challenges and Triumphs

*"Gender does not matter. You work as a scientist, not as a woman." Said the missile woman of India. Tessy Thomas, in the realm of Science, Technology, Engineering and Mathematics (STEM). Many women like her have been rewriting the narrative, breaking barriers and contributing significantly to innovation and progress. This article delves into the inspiring tale of women in stem from India. Exploring their history, challenges, triumphs and the promising future that lies ahead."*

**History:** Throughout history, women in India have been standout achievers in Stem. From ancient mathematician the Lilavati to contemporary ISRO scientist Ritu Karidhal Srivastava, who co-led projects like Mangalyan and Chandrayan-III. Indian women consistently make viral contribution to stem, with figures like Muthayya vanitha in science. Sudha Murthy in engineering and Sakuntala Devi in Mathematics. Despite facing numerous challenges, these women have risen to the top in their respective fields.

**Need:** Having more women in stem is really important. It's because women bring different perspectives that help in coming up with new ideas and solving problems. When teams have diverse members, they work better together. This is good for the economy and society too, as stem jobs are usually better-paying ones. When we support women in Stem Jobs, it's not just about being fair, it helps the country grow and improves our communities. Also, when girls see successful women in stem, it breaks old stereotypical ideas about what girls can or cannot do. So, having more women in stem isn't just about having more women at work; it's about making things better for everyone and making progress in our world.

**Challenges:** Historically, women have always faced strong challenges in pursuing careers in stem fields. The influence of patriarchy acts as a significant barrier, reinforcing traditional gender roles and discouraging women from entering male-dominated sectors like science and technology. Additionally, the stereotype associating women with "Pink-collar" jobs limit their exposure to stem opportunities, creating a mindset that hinders their pursuit of these fields. The scarcity of visible role models further adds to the issue, as young girls often lack examples to look up to and aspire to stem career all of this leads to the underrepresentation of half of humanity in the most rapidly growing and lucrative fields; This not only perpetuates gender inequality but also results in the loss of valuable perspectives and talents.

On a very positive note, despite all of these challenges, Indian women have always been breaking barriers and stereotypes by pursuing such fields and making exceptional contributing to them. Increasing awareness, advocacy for gender equality and the rise of female role models in paving the way for more inclusivity in Stem, ensuring a brighter and more equal future.

**Victory:** Indian women in stem have been achieving remarkable milestones, marking a significant shift towards becoming leaders. Notably, the Chandrayaan-3 mission, led by two women scientists, stands out as a testament to their expertise and leadership. Over 100 women were actively contributing to the same project. The gender ratio of people pursuing stem in India has been constantly improving. Reflecting a positive change, government initiatives like the Vigyan jyoti and Kiran schemes are playing pivotal roles in encouraging and supporting women in Stem. But more than that, the extreme efforts such as women coupled with increasing awareness are creating an environment where Indian women continue to Triumph and make substantial contribution in the dynamic and evolving landscapes of science and technology. I believe many undiscovered cures, groundbreaking inventions and revolutionary theories have been lost to the world because they were never given the chance to blossom simply due to gender. A positive change in this notion in recent times is going to be bliss for humankind. As we celebrate the achievements of women in Stem, it's crucial to envision a future where gender no longer dictates opportunities. As we look to the future, let us strive for a World where the achievements of Women in Stem are not exceptional but rather the norm.

Sweta Basoa  
B.A Sem II

*"Life is series of building, testing, changing and iterating". - Lauren Mosenthal*

# Are we Living in Simulation?

## Examining Control, Effort and Luck

The idea that we might be living in a simulation invites us to explore the nature of reality and our perceived control over it. This document delves into the simulation hypothesis, questioning whether our efforts truly dictate our outcomes or if external forces shape our paths. It examined the illusion of control, the role of luck, the importance of effort and the complexity of free will in a simulation world. Ultimately, it argues that even if our reality is a construct, the journey of striving, learning and growing remains significant and gives life its depth and purpose.

### **Control, Efforts and Luck in the simulation**

**The Illusion of Control:** We often assume our lives are the direct result of our choices and efforts. We believe that hard work leads to success and careful planning prevents failure. However, unexpected events and circumstances beyond our control often disrupt this belief, leading us to question the extent of our autonomy. These experiences suggest that our sense of control might be an illusion. If we are indeed living in a simulation, our actions might not be as free as we perceive them to be. Our decisions could be influenced or even predetermined by algorithms and external forces designed by the simulators.

### **Luck: An External Force**

The concept of "luck" further challenges the notion of complete control. Luck, whether good or bad, implies that external factors can significantly impact our lives, irrespective of our efforts and decisions. We meticulously prepare for a presentation, only to have the projector fail. A seemingly random encounter might lead to a life-changing opportunity, or an unforeseen global event can devastate carefully laid plans. These chance occurrences could be manifestation of glitches within the simulation or they might be deliberately programmed events intended to test or challenge the simulated beings. In either case, the existence of luck suggests that our outcomes are not solely determined by our actions.

### **Why Efforts?**

If our efforts are subject to unpredictable outcomes and the possibility of external control, the question arises: why bother trying? If success is not guaranteed and our actions might be manipulated, is there any point in striving towards goals? Despite these uncertainties, we continue to make an effort. This persistence could be rooted in the inherent value of the effort itself. The act of striving shapes our character, fosters personal growth and provides a sense of purpose, regardless of the ultimate result. Even within a simulated world, our actions may contribute to our personal evolution and impact the simulated environment around us. The journey, rather than the destination, becomes the primary source of meaning.

### **Free will in a simulated world**

The simulation hypothesis complicates the question of free will. If our reality is a simulation, are our choices pre-programmed, or do we possess genuine agency? Some argue that while the broad outcomes of our lives may be predetermined, our moment-to-moment experience of making decisions is real. Our internal deliberation, our weighing of options and our final choices, even if guided, have intrinsic value. This experience of agency shapes how we perceive and interact with the simulation, giving meaning to our existence within it. Even in a world where ultimate control is absent, the perception and experience of free will can provide a sense of purpose and responsibility.

### **Embracing the Uncertainty:**

Ultimately, the question of whether we live in a simulation serves as a catalyst for deeper reflection on the nature of reality, control and meaning. Regardless of the answer, the question it raises about luck, effort and free will are profoundly meaningful. The inherent unpredictability of life teaches us that even when outcomes are beyond our control, the process of striving, learning and growing remains vital. The journey, whether real or simulated, is what imbues life with its richness and significance. By embracing the uncertainty and focusing on the value of our experiences, we can find purpose and meaning in a world that may be more complex and mysterious than we can comprehend.

**Tumul Chauhan**  
B.Sc 2<sup>nd</sup> Semester

# Northern Indian Folk Rhythms

## The Vibrant Legacy of Ragnis and Saangs

Northern India is a melting pot of rich traditions and soulful music, with each state contributing its own unique flavour. Among the many treasures of this region are **Ragnis and Saangs**- Art forms that have long been the lifeblood of our cultural heritage. They're not just performances, they're heartfelt stories passed down through generations, echoing the joys, struggles and everyday lives of the people.

### Ragnis: The Heartbeat melodies of the North

Picture yourself at a local village fair in Haryana, Punjab, Rajasthan or Western area of Uttar Pradesh. The air is filled with captivating sounds of a Ragni- a special kind of folk music that tells a story with every note. Although "Ragni" has roots in the classical "Raga", it has blossomed into a vibrant tradition all its own. Its simplicity and raw emotion strike a chord with everyone, no matter where they are from.

### Stories and Sounds

Ragnis share tales of **Love, courage, devotion and change**. They're sung in a variety of regional dialects-whether it's Bagri, Ahirwati, Rajasthani, Punjabi or Hindustani- reflecting rich tapestry of our languages. Accompanied by the soulful sounds of instruments like the **harmonium, dholak, manjeera and sarangi**, these songs don't just entertain, they transport you to another time and place. Whether drawing from epics like the **Mahabharata and Ramayana** or the simple realities of everyday life, Ragnis remind us of where we come from and what we value.

### Legend of Ragni

Over the years, artists such as **Lakhimchand, Dhanpat Singh, Jangi Ram and Mir Mukhtiyar Ali** have become synonyms with Ragni. Their songs continue to light up festivals and village gatherings, inspiring new generations while staying true to the tradition's roots. Even as modern sounds creep in the pure, unfiltered essence of Ragni remains a beloved constant.

### Saangs: The Theatrical Pulse of the North

If Ragnis are the music that touches the heart, then Saangs are the stories that make us laugh, cry and think. Saang is more than just folk theatre- it's a full-blown celebration of life, complete with music, drama and dance. It's where history, mythology and everyday tales come together in a lively performance that you just have to see to believe.

### The Magic of Saang

At its core, Saang means "representation" or "mimicry". It's a dynamic performance where a group of talented artists bring stories to life using a mix of dialogue, song and dance. These shows are bursting with energy and humor, often performed in the open air or at local festivals. Once a domain where even women's roles were played by men, Saang has now evolved to welcome female performers, adding even more depth to the narratives. From the romantic legend of **Heer-Ranjha** to the tales of heroism featuring **Bhagat Singh, Draupadi and Lord Krishna**, Saangs not only entertain but also educate and inspire.

### The Faces behind Saang

The legacy of Saang is carried forward by artists like **Pandit Lakhimchand, Suraj Bhan, Mehar Singh and even icons such as Ustad Bismil Khan** who have left an indelible mark on this art form. Their performances are a master class in storytelling, proving that Saang is much more than just a traditional play-it's a living, breathing part of our culture that continues to evolve.

### Keeping our Musical Heritage Alive

In today's digital age, with modern music and entertainment dominating the airwaves, the traditional sounds of Ragnis and Saangs might seem like distant memories. Yet, across Haryana, Punjab, Rajasthan, West area of Uttar Pradesh, Himachal Pradesh and beyond dedicated form academies and cultural organizations are working hard to keep these traditions alive. Schools and colleges are also taking up the mantle by introducing these art forms to young minds, ensuring that the soulful legacy of Northern Indian folk music is passed on to future generations.

By cherishing and supporting our folk artists, we not only preserve a vital part of our history but also keep the spirit of Northern India vibrant and ever-evolving.

**Saurabh Lohchab**

Research Scholar, Dept. of English

*"Folk music takes back to the roots of our culture".*

# Happiness in Life Depends On Your Mental Attitude

Happiness is not just luck or something the world gives you. It is a choice you make by how you think. Life will always bring pain, problems or failures but how you react to them matters. Do you give up or do you keep going, seeing tough times as temporary? The difference is in your mindset. As Dale Carnegie said, happiness isn't about what's happening around you, it's about how you choose to see things. Even science shows that your thoughts can change how your brain works, affecting your stress, creativity and health.

Two people can face the same problem like losing money or a job but end up in totally different places. One might feel defeated while the other finds strength they didn't know they had. This shows a simple truth: hard times will come but staying stuck in sadness is a choice. Choosing happiness means understanding that life's struggles are not punishment, they are part of being human. Think of Viktor Frankl, a man who survived the Holocaust. He believed that no matter what happens, we can always choose our attitude. When you see challenges as chances to grow, you take control of your story.

One of the best ways to be happier is to focus on what you have, not what you have lost. Studies show that being thankful literally changes your brain, making you feel calmer and more positive. Try this: every day, write down three things you are grateful for- a friend's help, a good meal, or even a sunny day. Over time, your brain gets better at noticing the good stuff. For example, if you don't get a job you wanted, instead of feeling stuck, ask: "What better opportunities waiting for me?"

Happiness also spreads to other. People attract Friends, opportunities, and kindness. A famous Harvard study found that people with strong relationships built on love and positivity live longer, healthier lives. Smiles, kind words or small acts of help create a ripple effect, making others happier too. Even in hard times, choosing joy is like saying "I won't let this break me."

To build lasting happiness, start by changing how you talk to yourself. Be as kind to yourself as you'd be to a friend. Don't aim for perfection, just try to do a little better each day. Do things that matter to you like helping others, creating art, or spending time with loved ones. These actions give life meaning. Simple habits like taking deep breaths or sitting quietly for a few minutes can calm your mind when worries take over.

Science gives us practical steps to stay positive:

- Enjoy the moment: Pay attention to happy things like a funny joke or a cozy hug and let yourself really feel that joy.
- Change negative thoughts: When you think, "Everything is going wrong" ask yourself, "is this true? Is this helpful?" Replace doom-filled thoughts with curiosity.
- Move your body: Exercise releases "Feel-good" chemicals in your brain. Even a short walk can lift your mood.
- Find Purpose: Do things that help others or make the world better. This brings deep satisfaction.

Life will always test you, but your attitude decides whether challenges make you stronger or bitter. Singing "Don't worry, be happy" is not about ignoring pain, it is about choosing hope anyway. Happiness is not a life without storms. It is learning to dance in the rain.

In the end, happiness is not about avoiding pain. It is about growing through it, being thankful and staying connected to others. It's a daily choice to focus on what you can control your thoughts, your actions, and your heart. No matter how dark the day, remember joy is always within reach if you are willing to look for it.

**Kashish Chaudhary**  
Research Scholar, Law

*"Our attitude towards life determines life's attitude towards us." - John Mitchell*

# Cybersecurity:

## Protect yourself in Digital Age

**Introduction:** In today's interconnected world, **Cyber Security** has become a critical concern for individuals, businesses and governments. With the rise of digital platforms, online transactions and social media, protecting personal and sensitive data is more important than ever. Cyber threats like hacking, phishing, malware, and identity theft pose significant risks, making cyber security awareness essential, especially for college students who spend a large part of their lives online.

### Understanding Cyber Threats

To stay safe online, it's crucial to understand the various types of cyber threats:

1. **Phishing Attacks:** Phishing is a fraudulent attempt to obtain sensitive information by pretending to be trustworthy entity. For example, you may receive emails or messages that appear to be from your bank asking you to verify your account details.
2. **Malware and Ransom Ware:** Malware is malicious software designed to harm your device, steal data, or spy on your activities. Ransom ware is a type of malware that locks your file and demands payment to restore access.
3. **Identity Theft:** Cybercriminals can steal your personal information and use it for fraudulent activities, such as applying for loans or making unauthorized purchases.
4. **Social Engineering:** This involves manipulating people into revealing confidential information. Attackers may impersonate a trusted friend or authority figure to trick you into sharing sensitive data.
5. **Denial-of-service (DOS) Attacks:** In a Dos attack, cybercriminals flood a website or network with excessive traffic, causing it to crash and become inaccessible to users.
6. **Data Breaches:** Unauthorized access to personal or institutional databases can expose sensitive information leading to identity theft and financial loss.

### Best Practices for Cybersecurity

Here are some essential tips to protect yourself from cyber threats:

1. **Use Strong and Unique Passwords**
  - Avoid using common passwords like "123456" or "password". Use a combination of letters, numbers and symbols.
  - Enable multi-factor authentication(MFA) for added security.
2. **Be cautious with E-mails and Links**
  - Never click on suspicious links or download attachments from unknown sources.
  - Verify the sender before providing personal information.
3. **Keep your Software updated**
  - Regularly update your operating system, antivirus software and applications.
  - Security patches help fix vulnerabilities that hackers might exploit.
4. **Use Secure Networks**
  - Avoid using public Wi-Fi for banking or sensitive transactions.
  - Use a Virtual Private Network (VPN) to protect your data on unsecured networks.
5. **Think before you share on Social Media Networks**
  - Avoid sharing personal information such as your address, phone number or location.
  - Cyber criminals can use publicly available data to target you.
6. **Backup your data regularly**
  - Keep copies of important files in cloud storage or external drives.
  - In case of a ransom ware attack, you can restore your data without paying the ransom.
7. **Enable Firewalls and Antivirus Protection**
  - Use a reliable antivirus program to detect and remove malware.
  - Enable firewalls to block unauthorized access to your devices.

## 8. Be mindful of IoT security

- Many students use smart devices such as smart watches, voice assistance and security cameras.
- Change default passwords on IoT devices and update their firmware regularly.

### Real Life Cybersecurity Incidents in Colleges

#### Case Study 1: University Data Breach

A leading university recently suffered a data breach where cyber criminals accessed student's records, including personal information and academic details. The breach occurred due to weak passwords and outdated security measures.

#### Case Study 2: Phishing Scam Targeting Students

A group of students fell victim to a phishing scam where fake job offers were sent via e-mail requesting their banking details. Several students lost money before their scam was detected and reported.

#### Case Study 3: Ransomware attack on a college server

A ransomware attack crippled a university's online learning system, forcing students and faculty to halt academic activities. The attackers demanded cryptocurrency payments to unlock the system.

### The Role of Colleges in Cybersecurity Awareness

Colleges play a vital role in educating students about cybersecurity, Institutions can:

- Conduct **workshops and seminars** on online safety.
- Encourage students to use **university provided cyber security resources**.
- Implement **strong cyber security policies** to protect student data.
- Provide free access to **antivirus software and VPN services**.
- Create **awareness campaigns** on campus about the dangers of cyber threats.

### Future of Cybersecurity in Education

With advancements in technology, Cybersecurity will continue to evolve. Here are some trends:

- **AI driven security** to detect and prevent cyber threats in real time.
- **Biometric authentication** for enhanced security in online learning platforms.
- **Block chain technology** for securing digital identities and academic records.
- **Increased focus on cyber security education** as part of college curriculums.

**Conclusion:** The shared responsibility and everyone must take steps to protect their digital identity. By staying informed, following best practices and being cautious online, college students can significantly reduce their risk of falling victim to cyber threats. In the digital age, cyber security is not an option, it's a necessity.

**Aarif Saifi**  
L.L.B, IV Semester

# Discrimination: A Deep-Rooted Issue We Must Uproot

Imagine a world where the sun chose to shine only on a few, where oxygen was rationed and given only to select individuals. Life, as we know it, would collapse. Similarly, when societies limit opportunities and resources to a privileged few based on caste, gender, race or religion, they sow the seeds of inequality, hatred and in extreme cases, violence and genocide. Despite India's constitutional guarantees under Article 15- which prohibits discrimination on the grounds of religion, race, caste, sex or place of birth- deep seated biases continue to marginalize millions, denying them basic rights and dignity.

Let's explore the different dimensions of discrimination through recent incidents.

## **Religious Discrimination: Secularism under Threat**

India's secular fabric often faces challenges, especially when discrimination infiltrates spaces that should uphold inclusivity. A distressing example is the 2022 Karnataka hijab ban, where Muslim students were barred from attending college for wearing hijabs. Educational institutions, meant to nurture diversity and free thought, instead became battleground for exclusion and prejudice. Such instances raise uncomfortable questions about how far we have drifted from our constitutional ideals.

## **Racial Bias: The legacy of colorism in India**

Racial discrimination, deeply rooted in India's colonial history, continues to affect society today, with its impact becoming more pronounced when intertwined with gender bias. As emphasized by the chief Secretary of Kerala, patriarchal norms still judge women based on the color of their skin. This damaging mindset is glaring evident in matrimonial advertisements, where family openly seek "fair brides", fostering an unhealthy obsession with light skin that marginalizes and demeans women with darker complexions. In her powerful words, Muraleedharan explained the importance of embracing one's identity declaring, "I need to own my blackness". She shared a poignant memory from her childhood when she asked her mother whether she could return to her womb to be born again, "all white and pretty". In a society where fairness is often the benchmark of beauty, this bias extends beyond personal identity and into professional spaces, such as beauty pageants and even anchoring, where lighter skin is often seen as a prerequisite for success.

## **Caste-base Discrimination: An Unfinished Battle**

Consider the recent incident at the Gidheshwar Shiv Temple in West Bengal, where for the first time, Dalits from the Das community were allowed to enter and perform rituals. While this appears to be a positive step, the real question is- why did it take so long? Why were they denied entry into a place of worship in the first place, despite constitutional safeguards? Such incidents expose the persistent caste-based exclusion that still grips, Indian society, making equality a distant dream.

## **Gender Discrimination: Normalized Inequality**

Sex-based discrimination has been normalized to such an extent that it often goes unnoticed. One glaring example is the gender pay gap- The same work or work of equal value are often paid less than their male counterparts. Think of how society glorifies male chefs in five-star hotels, while countless women performing the same culinary labor at home, I barely acknowledged, let alone rewarded. Such disparities reflect a society that consistently undervalues woman's contribution.

## **A way forward: Steps toward Eradicating Discrimination**

To combat this deep-rooted disease, we need a multi-pronged approach.

- **Strengthening Legal Framework:** The Protection of Civil Rights Act (1955) and the Scheduled Castes and Tribes (Prevention of Atrocities) Act should be enforced rigorously with stringent punishments for violations.
- **Value-based Education:** Educational Institutions must promote values of equality, diversity and inclusion from an early age. Campaigns highlighting the harmful effects of discrimination can foster empathy and understanding.
- **Skill Development for Marginalized Communities:** Focused skill development programs can empower marginalized groups by providing fair access to education, employment, and financial services.
- **Challenging Social Norms:** We need to question and dismantle ingrained social biases that perpetuate inequality. The media, influencers and policymakers should actively engage in reshaping societal perceptions.
- **Community-led Initiatives:** Encouraging local communities to challenge discrimination and foster dialogue can lead to sustainable social change.

**Conclusion:** Discrimination, like a deeply entrenched weed, continues to strangle the promise of equality and justice in our society. But just as a gardener tends to the soil to ensure that every plant thrives, we too must nurture a culture where every individual- regardless of caste, gender, race or religion- can grow and flourish. By enforcing strong legal frameworks, fostering value-based education, empowering marginalized communities and challenging harmful social norms, we can transform our society into one where dignity, respect and opportunity are not privileges, but rights enjoyed by all. The journey toward equality is long. Collective resolve and sustained effort, we can uproot discrimination and build a future where every individual shines equally under the sun.

**Manvi Nagar**  
LL.B. IV Sem

## “What Is A Friend?”

“A single soul dwelling in two bodies”, said Aristotle.

When we are talking about friends, we go into the past. Getting lost in old memories is inevitable. When we found a friend with all qualities and also of bad habits (but no one knows about those except you). Even after knowing everything you stay together without judging anything. Like: Loyalty, understanding, encouragement and a positive influence and yeah, I am not talking about officer-like qualities. But most of us want that kind of friend, where we don't need to hesitate while sharing our things and fear shaming.

We can say it is a deep relationship combining with support, understanding, trust, faith, love, unselfishness and many more... This relation is like where we don't need to weigh our thoughts and measure words before keeping them forth before our friends. Be it a late-night call for expressing a bad mood or an emergency it's rare to find them away from us.

**“Side by side or miles apart, real friends are always close to heart.”**

Yes, anybody can be a friend but... Is it true that our family members can be our friend or best friend? Yes, and most of us have one without even knowing. We do share that bond but with certain restrictions like with parents, generation-gap (sometimes you have faced) But for covering this we explore every possible way. And make them happy as they also do.

**“A friend who understands your tears is much more valuable than a lot of friends who only knows your smile.”**

Hope after this you may think and if something happened, you'll take step forward to make that fabulous change. Going to our best friend, our friendship is a bond of unconditional love, a feeling of emotional safety and comfort. Where they know us much more than we know about ourselves.

If you have ever realised that your friend is your copy, not because of heredity and of any physical appearance but your sense of humor, imagination and understanding without the need of using words. Recall your daily pieces of stuff when you laugh the hell out at small things, you glance at your friend and feel blessed to have that crazy, weird soul every time with you.

But the question arises in mind even when I was a child and saw people spending time with their friends. Did you ever think before making any friends? For most of us, it's a big NO. This bond is created with time without us being aware. But think once if that person comes to you for their benefit only.

It looks a little weird. But you'll be broken if this happened. Some people may correlated with this, learned a lesson and move forward. And you can listen to their experience, can easily move on. And safe yourself from any mental, psychological stress. See 'Friendship is always a sweet responsibility never an opportunity'. But always remember:

**“To the world you may be just one person but to one person you may be the World.” Dr Seuss.**

Different people have different definitions of friendship. It's a deep feeling no one can express in words.

**Suruchi Nagar**  
M.Sc. Zoology IV Sem

# Breaking The Silence: Supreme Court's Intervention in Campus Suicides

*"Every student lost to suicide is a dream unfulfilled, a potential untapped, and a voice silenced forever."*

## Introduction: The Tragic Reality of Student Suicides

Suicide is not just a personal tragedy; it is a social crisis demanding urgent attention. The second leading cause of death among young people worldwide. In India, student suicides have surged at an alarming rate, surpassing even farmer suicides. The distressing numbers as reported by the National Crime Records Bureau (NCRB) highlight that over 13,000 students ended their lives in 2021- a number that has nearly doubled in the last decade. The Supreme Court has now recognized the gravity of this issue, emphasizing the need of systemic Intervention.

## The case that shook the Nation

A tragic incident brought this crisis to the Supreme Court's Doorstep. The court was dealing with a case concerning the deaths of two students from marginalized communities at the Indian Institute of Technology, Delhi (IIT Delhi). In July 2023, A B.Tech student named Ayush Ashna was found hanging in his hostel room. On September 1, 2023, Anil Kumar (21), another B.Tech student, was also found dead in his hostel room at the institute. The parents alleged that these were not suicides but murders, covered up by the institution. Furthermore, they claim that both students faced caste-based discrimination from IIT faculty and staff.

Last year, the Delhi High Court refused to direct the police to register criminal cases, citing insufficient evidence of caste discrimination and stating that the students had taken their own lives due to academic pressure. Disheartened by this decision, the parents approached the Supreme Court for relief. In a landmark move, the Supreme Court directed the registration of First Information Reports (FIRs) in both cases and ordered a thorough investigation.

## The Supreme Court's Intervention and Formation of the National Task Force

Recognizing that suicides in higher educational institutions require urgent intervention, the Supreme Court has not only mandated criminal investigations but has also addressed the larger systemic issue. The court observed that suicides in premier institutions like IITs, NITs and IIMs reflect the inadequacy of the existing legal and institutional framework in addressing student mental health concerns.

In response, the court ordered the formation of **A National Task Force on Student Suicides and Mental Health** to:

- **Investigate Causes-** Analyze reasons behind student suicide, including ragging caste or gender-based discrimination, sexual harassment, academic pressure and financial stress.
- **Review Existing Policies-** Assess the effectiveness of current student welfare and mental health policies.
- **Recommend Legal Reforms-** Strengthen protections under the SC/ST (Prevention of Atrocities) Act, 1989 and other laws.
- **Conduct Surprise Inspections-** Evaluate student support mechanisms in Universities.
- **Develop a National Action Plan-** Ensure the mandatory inclusions of mental health services in higher educational institutions.

The Task Force, chaired by former Supreme Court Judge **Justice. S Ravindra Bhat**, will comprise nine other experts and is expected to submit an interim report within four months and a final report within eight months.

## Institutional Responsibility: Aiding the Task Force

The Supreme court has explicitly stated that all institutions must co-operate fully with the Task

1. **Mandatory Reporting:** If a suicide occurs on campus, institutions must promptly lodge an FIR with authorities.
2. **Mental Health Support:** Colleges must establish 24/7 helpline and on-campus psychological Counselling services.

3. **Strict Anti- Discrimination Policies:** Institutions must implement stringent penalties for faculty and staff found guilty of discrimination.
4. **Student welfare Committees:** Universities must create committees to monitor student well-being, conduct sensitization programs and act as watchdogs against discrimination.

The court also directed the **Union of India to deposit ₹20 Lakh for the initial operations of the Task Force** and mandated that central and state governments provide full cooperation.

#### **Conclusion: The Need for Urgent Action**

The Supreme Court's intervention is a much- needed wake up call. However, legal action alone cannot resolve the crisis. The root causes- academic pressure, social isolation, discrimination and lack of mental health support- must be addressed at an institutional and societal level. Universities are not just centres of education, they are responsible for fostering an environment where students feel safe, valued and empowered.

The loss of young, bright minds to suicide is a national tragedy. As of society, we must break the silence, dismantle discriminatory structures and ensure that no student feels so cornered that they see no other way out. The Supreme Court has taken the first step, it is now up to educational institutions, policymakers and communities to turn this ruling into lasting change.

**Case Title: AMIT KUMAR AND ORS. VERSUS UNION OF INDIA & ORS. (2025,SC)**

**Ekta Kasana**  
LL.B, IV Semester

# Artificial Intelligence in Crime Handling

Intelligent machines have long been the subject of science fiction. However, we now live in an era in which artificial intelligence (AI) is a reality, and it is having very real and deep impacts on our daily lives. From phones to cars to finance and medical care. From agriculture to industry, communications, education, finance, government service, manufacturing, medicine and transportation, AI is shifting the way we live. Even public safety and criminal justice are benefiting from AI. For example, traffic safety systems identify violations and enforce the rules of the road and crime forecasts allow for more efficient allocation of policing resources.

## What is Artificial Intelligence:

AI is a rapidly advancing field of computer science, “the science and engineering of making intelligent machines”. Conceptually, AI is the ability of a machine to perceive and respond to its environment independently and perform tasks that would typically require human intelligence and decision-making process but without direct human intervention.

One side of human intelligence is the ability to learn from experience. Machine learning is an application of AI that mimics this ability and enables machines and their software to learn from experience. Particularly important from the criminal justice perspective is pattern recognition. Humans are efficient at recognizing patterns and through experience we learn to differentiate objects, people, complex human emotions, information and condition on a daily basis. AI seeks to replicate this human capability in software algorithm and computer hardware. For example, self-learning Algorithms use data sets to understand how to identify people based on their images, complete computational and robotics tasks, understand purchasing habits and patterns online, detect cybercrime and fraud patterns, and make stock market predictions.

## Applications for Crime handling and Public Safety

AI is being researched as a public safety resource in numerous ways. One particular AI application- Facial recognition can be found commonly everywhere in both the public and private sectors, Intelligence Analysts. Examining the huge volume of possibly relevant images and videos in an accurate and timely manner, is a time consuming, painstaking task with the potential for human error due to fatigue and other factors. Unlike humans, machines do not tired. Analysts had performed successful trials on the use of algorithms that can learn how to distinguish one person from another, using facial features in the same manner as a human analyst.

AI is also quickly becoming an important technology in fraud detection. Companies are working on predict and recognize anomalous patterns and to learn to recognize new patterns. Following are the two major use cases of AI into crime prevention.

## Public Safety video analytics

Video and image analysis is used in the crime analysis and law enforcement communities to obtain information regarding people, object and actions to support criminal investigations. AI technologies provide the capacity to overcome human errors and to function as experts. Traditional software algorithms that assist humans are limited to predetermined features such as eye shape, eye color, and distance between eyes for facial recognition or demographics information for pattern analysis. AI video and image algorithms not only learn complex tasks but also develop and determine their own independent complex facial recognition features/parameters to accomplish these tasks beyond what human may consider. These algorithms have the potential to match faces, identify weapons and other objects, and detect complex events such as accidents and crimes (in progress or after the fact). The researchers are also working with low-quality facial image construction, including images with poor resolution and low ambient light levels, where the image quality makes facial matching difficult.

Finally, to decipher a license plate (which could help identify a suspect or aid in an investigation) or identify a person in extremely low-quality images, researchers are using AI algorithms that systematically degrade high-quality images and compare them with low-quality ones to better recognize lower quality images and video. The degraded images are then expressed and catalogued as mathematical representations. These degraded mathematical representations can then be compared with low quality license plate images to help identify the license plate.

Another important aspect of AI is the ability to predict behavior. In contrast to the imaging and identification of criminal activity in progress, develop algorithms that provide continuous monitoring to access activity and predict emergent, suspicious and criminal behaviour across a network of cameras. This work also concentrates on using clothing, skeleton structures, movement and direction prediction to identify and reacquire people of interest across multiple cameras and images.

### **Crime Forecasting**

Predictive analysis is a complex process that uses large volumes of data to forecast and formulate potential outcomes. This job rests mainly with police, probation practitioners and other professionals who must gain expertise over many years. The work is time-consuming and subject to bias and error.

With AI, volumes of information on law and legal precedents, social information and media can be used to suggest rulings, identify criminal enterprises, and predict and reveal people at risk for criminal enterprises. Trials could potentially increase their speed and quality of statutory interpretation performed by judges, advocates and other professionals. The researchers hypothesis that a computer program can automatically recognize specific types of statements that play the most important roles in statutory interpretation. The goal is to develop a proof-of-concept expert system to support interpretation and perform it automatically for cyber crime.

AI is also capable of analyzing large volumes of crime related records to predict potential criminal repetition. The algorithms form decision trees and perform survival analysis to determine the time span until the next occurrence of an event of interest and predict the risk of reoffending for absconding offenders (if a warrant goes unserved). AI can also help determine potential elder victims of physical and financial abuse, predict potential victims of violent crime based on associations and behaviours.

### **The Future of AI in Crime Prevention**

Every day holds the potential for new AI applications in criminal justice, paving the way for future possibilities to assist in the crime prevention and ultimately improve public safety.

Video analytics for integrated facial recognition, the detection of individuals in multiple locations via CCTVs and object and activity detection could prevent crimes through movement and pattern analysis, recognize crimes in progress and help investigators identify suspects. With technology, AI could detect crimes that would otherwise go undetected and help ensure greater public safety by investigating potential criminal activity, thus increasing community confidence in law enforcement and the criminal justice system.

Algorithms could also help prevent victims and potential offenders from falling into criminal pursuits and assessed criminal justice professionals in safeguarding the public in ways never before imagined.

AI technology has the potential to provide law enforcement with situational awareness and context, thus aiding in police well-being due to better informed responses to possibly dangerous situations. Technology that includes robotics and drones could also perform public safety surveillance, be integrated into overall public safety systems, and provide a safe alternative to putting police and public in harm's way.

By using AI and predictive policing analytics integrated with computer-aided response and live public safety video enterprises, law enforcement will be better able to respond to incidents, prevent threats, divert resources and investigate and analyze criminal activity. AI has the potential to be a permanent part of our criminal justice ecosystem, providing investigative assistance and allowing criminal justice professionals to better maintain public safety.

The government directed creation of a national strategy for AI research and development in law and enforcement stream under three categories: Analyze case law history, Assist with discovery process, Summarize evidence.

**Avadesh**  
LL.B, IV Semester

*"The Potential benefits of Artificial Intelligence are huge, so are the dangers". - Dave Waters*

# NGT and Pollution

Environmental degradation has long been a pressing concern and Indian courts have been addressing environmental disputes through Public Interest Litigations [PILs]. The courts have come up with innovative solutions and creative frameworks adhering to the international standards to tackle such concerns. However, the increasing number of cases related to environmental violations highlighted the need for a more specialized and efficient judicial body. To address this, it was recognized that a dedicated forum was necessary to handle the growing number of environmental cases. The three landmark judgments by the Supreme Court, alongside the recommendations made in the 186th report of the Law Commission of India, played a crucial role in advocating for a dedicated body to resolve environmental disputes.

The National Green Tribunal is a quasi-judicial body constituted on 18th October, 2010 under the National Green Tribunal Act, 2010 for the "effective and expeditious disposal of cases relating to environmental protection and conservation of forests and other natural resources including enforcement of any legal rights relating to environment and giving relief and compensation for damages to persons and property and for matters connected therewith or incidental thereto."

The National Green Tribunal (NGT) is empowered to deal with a wide range of environmental issues, including cases related to air pollution, water contamination, forest conservation and more. It has the jurisdiction to adjudicate matters arising out of or in connection with implementation of the Water (Prevention and Control of Pollution) Act, 1974, The Forest (Conservation) Act, the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981, The Environmental (Protection) Act, 1986, The Public Liability Insurance Act, 1991 and the Biological Diversity Act, 2002. Further, an inference can be drawn from the preamble of the NGT Act, 2010 that the Tribunal is required to apply the principles of Sustainable Development Goals advocated at the Stockholm Conference and the United Nations Conference on Environment and Development.

The Tribunal is seated at five zones at Bhopal, Pune, Kolkata, Chennai and the principal new bench at New Delhi. Circuit benches have also been set up for making itself more accessible. The legislation mandates the tribunal to constitute both judicial and expert members and ensure disposal of cases within six months from institution. The Act postulates that the principles of natural justice will be the guiding spirit of adjudication.

Since its establishment in 2010, the NGT has demonstrated remarkable efforts in addressing environmental concerns, frequently setting stringent protocols and standards. In 2012, the Tribunal suspended the final order of the Environment Ministry that green-signaled the POSCO steel project in Orissa favouring the local tribes and forest dwellers. In 2016, NGT imposed penalty on Sri Sri Ravi Shankar's Art of Living Foundation for damage caused to Yamuna flood plains during course of preparation for the World Cultural Festivals on the Bank of the river. In 2023, the NGT constituted a 5-member committee to frame standard operating procedure (SOP) for control and regulation of polluting activity in and around district hospitals and medical colleges and special measures like Multi-level parking and management of traffic etc. to be taken for AIMS Hospital in Delhi. Another applauding initiative is the intervention in respect of monitoring gaps in solid and liquid waste management, which prompted comprehensive deliberations with the chief secretaries of all States and Union Territories. It also passed directions for preparation of district environmental plans for all districts, action plans for rejuvenation of rivers, restoration of Environmental Quality in 100 polluted industrial clusters by regulating polluted activities, controlling air and noise pollution by setting up monitoring stations, groundwater harvesting systems and stoppage of illegal use of groundwater, compliance with Plastic Waste Management Rules 2016 and management of biomedical-waste, etc. NGT also used the polluter pays principle for rectifying past violations requiring the recovered compensation to be used for environmental restoration.

It is evident that the NGT has played a vital role in addressing environmental neglect by preventing polluting activities and penalizing wrongdoers. Compared to the previous environmental framework, the NGT has delivered more effective results and shown a faster resolution of cases. However, some fundamental issues that need to be addressed for effective adjudication include the lack of infrastructure and financial support, insufficient number of benches for adjudication, absence of a systematic mechanism for deposition compensation amounts, limited access to environmental justice for people in remote areas, and the shortage of scientifically trained expert members.

**Surbhi Jain**  
LL.B. IV Sem

*"Environmental pollution is an incurable disease. It can only be prevented." - Barry Commoner*

## A World Without Screens: Living in The Analog Age

Imagine a world without the constant hum of notifications, endless scroll of social media or the ever-present glow of a screen. It's a world where communication is face-to-face, where entertainment is found in books and board games, and where the rhythm of life is dictated by the natural world. This is the world of living without modern gadgets, a world that might seem aligned to many, yet hold a certain allure.

The absence of modern technology would necessitate a return to simpler ways of living. Communication would rely on letters, phone calls and face to face conversations, information would be sort in libraries and through personal interactions, fostering deeper connections and a greater appreciation for the knowledge gleaned. Entertainment would be found in the shared experience of live Music, theatre and storytelling, forging a sense of community and shared joy.

Life without modern gadgets would also mean a greater connection to the natural world. The sun would dictate our working hours, the seasons would guide our activities, and the rhythm of nature will become a Constant companion. This connection would foster a deeper appreciation for Earth's beauty and the greater sense of mindfulness.

However, living without modern gadgets would not be without its challenges. The pace of life would slow down, requiring patience and a different kind of focus. Access to information and resources would be limited, demanding resourcefulness and a reliance on local communities. And the constant bombardment of information and stimulation that we have come to expect would be absent, requiring a greater ability to entertain ourselves and find meaning in our own experience.

Ultimately, the question of whether life without modern gadgets is desirable is a personal one. It's a question of prioritizing connection, mindfulness, and a slower pace of life over convenience, instant gratification, and the constant influx of information. Gadgets offer undeniable benefits, they also come at a cost. The world without screens may be a world of greater simplicity that demands a different kind of engagement, a different kind of connection and a different kind of life.

**Shailja Kandley**  
B.Sc Bio IV Sem

## Value of Teacher

Teacher is like a 'lamp', who gives us light of 'knowledge',  
Teacher is like a 'flower', who gives us beautiful smell of 'education',  
Teacher is like a 'captain' who gives us the direction to our 'life ship',  
Teacher is like a 'pillar', who supports the building of 'progress',  
Teacher is like a "gardener", who cultivates good qualities in us,  
Teacher is like a 'pole star', who gives new life and 'new version',  
Teacher is like an 'architecture', that our sets our mood,  
Teacher is like a 'moon', who always guide us through the 'dark times',  
Teacher is like a 'tree', who plants the seed of 'knowledge',  
Teacher may be like a 'good friend', who takes a hand, opens a mind and touches the heart of students.

**Diksha**  
M.Sc Zoology IV Sem

# Misplaced Priorities: Fighting over a shadow

## The silent erosion of Humanity: A crisis we must face

In a world advancing in technology, infrastructure and science, the essence of humanity seems to be fading. Comparison is being replaced by indifference, understanding by judgment, and unity by division. We live in time where crime is on the rise, relations are crumbling and even the blood relationship are losing their meaning. Instead of addressing real issues, Society is consumed by pointless comparisons, baseless arguments and social conflicts that serve no purpose. The stronger are getting more strong from this, the powerful manipulate the system, While the common citizen is left fighting for basic rights.

## Crime: A society at war with itself

Every society has crime but what defined a civilization is how it react to it. Instead of demanding justice, we look for ways to justify violence, normalise corruption, obsessed with comparison and excuse brutality like:

- Rape cases vs victim blaming: A woman is assaulted and instead of punishing the rapist, people ask “what was she wearing?” “why was she out?” but what about the 8 month old baby? Really, are these questions worth it?
- Domestic Violence vs Male Suffering: A woman's abuse is dismissed as discussions shifts to men facing false cases, ignoring that both deserve justice.
- Language fight vs national unity: Instead of embracing India's diversity, people fight over which language is superior, forgetting progress matters more than dialects.
- Dowry vs Alimony: A woman is harassed, tortured or even killed for dowry yet people shift focus to alimony misuse, as if one crime justifies another.

There are more such cases but we ignore the root cause of violence, shifting blame instead of demanding real change. The choice is ours act now or watch society collapse.

- Religion is no longer about faith but about providing one belief system is superior to another
- Gender is no longer about equality but about proving one belief system endless fights that ignore real struggles
- Technology has advanced but morality has declined
- Education has increased but wisdom vanished
- Social medians turned life where we socially connected yet emotionally alone
- Political party make fake promises yet the real issues never change

## A wake up call: Restoring Humanity

It is not too late for change humanity over division. Small steps can bring real changes:

- Stop senseless comparison: Fight for justice not for arguments
- Reject division: Religion, language, gender status should never be the reason for hatred. Embrace diversity, not religion
- Speak with Empathy: Stop arguing to win, start listening with humanity
- Hold leader accountable: Demand transparency and justice
- Teach the value of Humanity: Ensure people feel safe with each other
- Stand against wrong: Say clearly no to injustice
- Focus on real issues: Education, health, poverty and safety

*“The real sin is to tolerate injustice silently.” - Bhagat Singh*

Final Thought: If we don't change now, we never will. The real enemy is not religions, gender, caste or nationality. The real enemy is our refusal to see the bigger picture. The question is no longer what is wrong with the world? The question is “do we have the courage to fix it?” The answer depends on what we choose today.

**Tanisha Chawra Gujjar**  
B.Sc Biology IV Sem

*“In misplaced priorities, you find a displaced personality.” - Godswill T.K. Mensah*

# Shining Stars of our college

## Arvind Sonkar: A Beacon of Determination



Arvind Sonkar, a proud student of MMH College, has etched his name in the annals of success with his remarkable journey. Hailing from Mhau district, Arvind's story is a testament to the power of perseverance and hard work.

### Early Life and Education

Arvind completed his schooling in his hometown and later pursued his graduation from Allahabad University, Prayagraj. His academic prowess and determination paved the way for his future successes.

### Civil Services Journey

In 2022, Arvind cracked the Uttar Pradesh Public Service Commission (UPPSC) examination with an impressive rank of 86, securing his position as a Deputy Superintendent of Police (DySP). This achievement is a culmination of his relentless efforts, even in the face of adversity.

### Current Pursuits

While serving as a DySP, Arvind is also pursuing his PhD from MMH College Ghaziabad, Department of Geography. His academic pursuits reflect his passion for learning and growth.

### Inspirational Figure

Arvind's journey serves as an inspiration to many, demonstrating that with dedication and perseverance, one can overcome obstacles and achieve their goals. His story is a shining example for aspiring civil servants and students alike.

## Akanksha: A Shining Example of Excellence



We are thrilled to share the remarkable achievement of Akanksha, a student of MSc Zoology at MMH College, who has been selected as a Sub-Divisional Magistrate (SDM) through the Uttarakhand Public Service Commission (UKPSC) in 2024. This accomplishment is a testament to her hard work, dedication, and perseverance.

### Inspiration to Peers

Akanksha's journey is an inspiration to her peers and a reflection of the college's commitment to nurturing talented individuals. Her success demonstrates that with determination and effort, one can achieve their goals and make a meaningful impact in their chosen field. Her selection is a significant milestone in her career, and we are confident that she will excel in her role.

### Congratulations to Akanksha

We extend our heartfelt congratulations to Akanksha on her remarkable achievement. We are proud to have her as a part of our college community, and we wish her continued success in her future endeavours.

# India and the New Geopolitics of a World Order That Is Falling Apart

For nearly three decades following the Cold War, the United States held sway over a largely unchallenged global system. But that illusion of stability has been shattered. The world today is witnessing a decisive shift: from unipolarity to multipolar instability, from economic interdependence to strategic decoupling, and from institutional consensus to great-power rivalry. This realignment is most visibly underscored by two theatres of conflict: the Russia–Ukraine war, a grinding conflict that pits Moscow's revisionist ambitions against the Western alliance; and the Israel–Iran conflict, which threatens to upend the fragile security balance in the Middle East, with global repercussions. In this context, India emerges as a vital swing state; balancing strategic autonomy, economic pragmatism, and regional leadership aspirations.

Three years into the war, the conflict in Ukraine has become more than a European crisis; it is a global one. Russia's military-industrial pivot, Western sanctions, NATO's eastward recalibration, and the energy supply chain disruptions have triggered seismic aftershocks worldwide. For India, the war presents a complex challenge: Strategic ties with Russia, cemented over decades through defence cooperation, BRICS coordination, and energy, trade remain crucial. At the same time, India's deepening partnership with the U.S. and the EU. Its largest export destinations and technological allies, compels a careful diplomatic dance.

India has abstained from condemning Russia at the UN, calling instead for "dialogue and diplomacy." Simultaneously, it has ramped up discounted oil imports from Russia, reaping economic benefits while facing pressure from the West. The recent revelations of Indian firms exporting dual-use materials to Russian defence-linked entities further underscore the tightrope India must walk.

The eruption of direct conflict between Israel and Iran in mid-2025 has added a combustible layer to global geopolitics. While skirmishes have long simmered via proxies such as Hezbollah and Hamas, the latest tit-for-tat missile exchanges have pushed the region to the edge of a full-scale war. This escalation has strategic (India maintains strong ties with both Israel and Iran), economic (Nearly 9 million Indian nationals reside in the Gulf, India imports 87% of its oil, much of it from West Asia), and humanitarian implications for India. India's response on Operation Sindoor, evacuating thousands of nationals was swift and effective. Yet, it also revealed the fragility of India's economic and human interests in the region.

India's foreign policy in the current geopolitical climate is shaped by three foundational pillars that reflect its evolving strategic identity. First, the principle of strategic autonomy remains central. India deliberately avoids permanent alignments, choosing instead to preserve its independence in decision-making. This approach is evident in its refusal to join Western led sanctions against Russia following the Ukraine conflict, even as it continues to deepen strategic partnerships with the United States and other members of the Quad. Second, India is a consistent advocate for a multipolar world order; one where global power is equitably distributed and no single bloc dominates the international system. It sees itself as a "Vishwa 2 Mitra," or friend to all, rather than a client state beholden to any great power. This positioning allows India to engage constructively with a wide range of partners across geopolitical divides. Finally, India prefers to engage in issue-based alliances, forming pragmatic and flexible coalitions that are tailored to specific strategic interests rather than rooted in rigid ideological frameworks. Whether in advancing maritime security in the Indo-Pacific or collaborating on food and technological resilience through the I2U2 group, comprising India, Israel, the UAE, and the United States; India's alliances are purpose-driven and context-specific. This layered, pragmatic approach underscores its desire to remain sovereign in both principle and practice while contributing to a more balanced and inclusive international order.

This posture is not without contention. Some international observers have criticized India's calibrated stance on conflicts like Ukraine and Palestine, interpreting it as moral ambivalence or strategic indecisiveness. However, from an Indian perspective, this approach reflects a deliberate assertion of strategic autonomy, rooted in national interest rather than ideological alignment. India's refusal to be drawn into binary positions imposed by competing global powers is not a sign of moral weakness but of sovereign agency in a complex, multipolar world. Rather than subscribing to narratives shaped by external powers, India prefers to respond to crises through the lens of its civilizational ethos of dialogue, diplomacy, and non-intervention without compromising its own geopolitical and economic priorities. In this view, realpolitik is not a betrayal of principle, but a pragmatic instrument to safeguard national interests while enabling a more stable and inclusive world order.

India's regional posture is evolving in response to shifting geopolitical currents, particularly in the Indo-Pacific and West Asian theatres. In the Indo-Pacific, China's increasing assertiveness—from its naval incursions near Taiwan to its militarization of the South China Sea—has intensified India's strategic engagement. New Delhi has responded by strengthening its maritime partnerships through joint naval exercises such as Malabar with the United States, Japan, and Australia, which aim to reinforce deterrence and promote a rules-based maritime order. Similarly, India's trilateral collaboration with France and the United Arab Emirates emphasizes connectivity, energy cooperation, and regional stability across the Indo-West Asian continuum. Crucially, India's approach to maritime security is not driven by hegemonic ambitions, but by the imperative to safeguard trade routes, ensure energy security, and uphold freedom of navigation.

In Central and West Asia, India has sought to expand its strategic footprint through infrastructure and connectivity initiatives. Its continued investment in the Chabahar Port in Iran offers a critical gateway to Afghanistan and Central Asia, bypassing Pakistan, while the India–Middle East–Europe Corridor (IMEC) is envisioned as a transformative trade and transit route connecting South Asia to Europe via the Gulf. However, the outbreak of direct conflict between Israel and Iran has cast uncertainty over these projects. Escalating violence, regional instability, and heightened security risks threaten to derail timelines and deter investor confidence. Without urgent diplomatic de-escalation, these strategically vital corridors may lose momentum.

India's relationships with major global powers further reflect its balancing act in a polarized world. The long-standing India–Russia partnership, underpinned by decades of defence cooperation, including major procurements such as the S-400 missile systems, nuclear collaboration, and coordination in multilateral platforms like BRICS and the Shanghai Cooperation Organisation (SCO), has persisted despite the war in Ukraine. Nevertheless, Moscow's growing economic and strategic dependency on Beijing introduces complications for India, especially in the context of ongoing tensions along the Sino-Indian border in the Himalayas.

Meanwhile, India's ties with the United States and the broader West have deepened across strategic and technological domains. Foundational defence agreements such as BECA and COMCASA, along with emerging collaborations in semiconductors, clean energy, and artificial intelligence, have reinforced mutual trust and interoperability. Yet, India resists full alignment with Western security frameworks. It has notably refrained from condemning Russia or joining exclusive blocs like AUKUS. This calibrated stance defines what many observers describe as a "strategic partnership of convergence with constraints", close cooperation without loss of sovereign policy space.

Economically, India has demonstrated a measure of resilience amid global volatility. Projections for the 2025–26 fiscal year suggest growth rates exceeding 6.5 percent, bolstered by steady foreign direct investment and a relatively controlled inflation environment achieved through judicious fiscal and energy management. Nonetheless, serious vulnerabilities remain. Fluctuating global crude oil prices, often triggered by geopolitical instability, pose risks to India's fiscal balance. Disruptions in critical trade corridors, whether due to the war in Ukraine or instability in the Middle East could slow export growth and jeopardize supply chains. Moreover, the broader global economic slowdown may temper demand for India's manufacturing and IT services exports. In response, India has adopted a diversification strategy: reducing overreliance on any single energy supplier by tapping into newer sources like the United States and Brazil, intensifying trade with Africa and Southeast Asia, and investing in domestic innovation across key sectors like defence, space, and renewable energy.

Beyond economics and hard power, India is increasingly positioning itself as a credible voice for peace and dialogue in global forums. At the United Nations, it has advocated for humanitarian ceasefires and diplomatic solutions while avoiding alignment with resolutions that reflect geopolitical bias. Its presidency of the G20 was emblematic of this approach, emphasizing inclusive development and global challenges through the motto “One Earth, One Family, One Future.” This philosophy resonates particularly with the Global South, which views India as a trustworthy interlocutor capable of bridging divides between the West and the developing world. India's crisis diplomacy further reinforces this perception. From Operation Ganga in 2022, which evacuated Indian nationals from war-torn Ukraine, to Operation Sindoor in 2025, which successfully extracted citizens caught in the Israel–Iran conflict, India has demonstrated logistical competence, swift action, and a commitment to safeguarding its diaspora, bolstering both its global standing and domestic credibility.

However, the pursuit of multipolarity and strategic autonomy is not without risks. India faces potential exposure to secondary Western sanctions if it continues deepening economic and defence ties with Russia. Additionally, its nuanced or non-committal positions on sensitive issues—such as the humanitarian crisis in Gaza—invite criticism, potentially creating a credibility gap in its projection as a values-driven democracy. A more complex concern is the increasing strategic alignment among Russia, China, and Iran, which could result in a semi coherent bloc with considerable influence in Eurasia and West Asia. India must tread carefully to ensure that it does not find itself isolated or pressured into unfavourable choices as these powers consolidate their positions.

In a rapidly fragmenting international order, India's insistence on autonomy can sometimes be misconstrued as indecisiveness or fence-sitting. Yet, from India's perspective, this approach is a conscious assertion of its right to act in accordance with national interest rather than ideological obligation. The central diplomatic challenge lies in maintaining this balance, preserving strategic flexibility while reinforcing its image as a responsible, values conscious global actor. Navigating this path will define India's role in shaping the contours of the 21st-century world order.

The world is undergoing a profound geopolitical shift, marked by intensifying conflicts, realignments in trade and technology, and a redefinition of global power structures. In this evolving landscape, India stands not merely as a balancer but as a potential architect of a new, more inclusive world order. With its expanding economic influence, strategic clarity, and civilizational perspective, India is uniquely positioned to mediate between rival blocs, rebuild disrupted regional linkages, and advocate for a fairer global governance model. To fully realize this role, India must transition from cautious pragmatism to assertive yet responsible leadership, grounded in its core principles but responsive to the demands of a rapidly changing world.



**Prof. Uttam Kumar**  
Dept. of Geography

## Nature's Paradox

### The Constant Interplay of Creation and Destruction

*"Nature like a kind and smiling mother lends herself to our dream and cherishes our fancies"*

**Victor Hugo**

Man is most successful living creature on the earth. In the primitive times he might have been struggling for existence but now a days he is trying to master the forces of Nature for his personal advantages. He has used natural water for so many purposes for producing electricity for growing crops, for driving engines and for many more purposes like that. He also has been using other natural resources for his survival and gains. Infact, Nature is an important and integral part of human beings. It is one of the greatest blessings for human life and a source of wonder, substance and inspiration. It encompasses all living and non-living things from the smallest organism to the largest eco-systems and plays a vital role in shaping our world and lives.

Nature offers an unparalleled aesthetic experiences. The vibrant colours of a sunset, the intricate patterns of a leaf and the majestic sweep of mountains and the endless beauty and intricate wonders. It offers solace, inspiration and a sense of peace allowing us to connect with something larger than ourselves. Being in nature makes us feel calm and happy. A simple walk outside and having birds sing can make us feel fresh and peaceful. The harmony of nature ensures the balance of ecosystems.

Moreover, Nature has been an inspiration for so many poets, writers and artists. This remarkable creation of nature inspired them to write artistic creation. Nature has been of immense benefit to man. It has laid its treasures bare to man. Wordsworth thinks that Nature can have a shaping influence on the personality of man. Nature develops even the moral aspect of personality according to Wordsworth. In the poem "Tintern Abbey" he describes nature as the "Anchor of my purest thoughts the nurse, the guide, the guardian of my heart and soul of all my moral being." This suggest that nature can play a significant role in shaping and nurturing one's moral sense. The moral sense is not merely a result of impulse or societal conditioning. It is a deeper, Intrinsic, quality that guides individuals towards moral choices and actions.

There might not be any difficulty in understanding that Nature has given us the pattern for artistic creation. Poets, Painters and others have been trying to imitate nature as much as it is possible for them. In this way, man is a part of nature but he has also been trying to harness the forces of Nature. And in this process, nature is facing unprecedented threats. Human activities such as overpopulation, pollution, deforestation and climate change are causing widespread damage to ecosystem and bio-diversity. These actions are significantly impacting nature, leading to habitat loss, species extinction and resource depletion. Such type of activities, not harm the natural world but also threaten our own well-being and future. Consequently, Nature has been appearing to him sometimes, "Red in tooth and claw" as English poet Tennyson would like to see it. Sometimes Nature was to him, "Nurse, Guide and Guardian and Philosopher". Shakespeare would try to find nature "Tongues in trees, books in running brooks, sermon in stones and good in everything". It means that nature itself can offer profound wisdom and insights. In spite of this, man has done a lot of harm to Nature. In the novel Tess of the d'Urbervilles by Thomas Hardy, Nature is depicted as both a source of beauty and solace and also a harsh brutal power that inflicts sufferings and reflects societal injustices. So, understanding these various aspects of nature is crucial for appreciating its complexity. The relationship between human and nature is complex and multifaceted, often described as a duality where Nature acts as both a friend and an enemy. It provides essential resources like air, water and food but also presents dangers like natural disasters and disease. Infact, despite man's efforts, man has not been able to conquer nature. It has not been revealing its secrets to the most scientific minded persons. Moreover, within the twinkling of eyes, it can cause huge destruction. The burstings of the volcanos have brought have upon earth. Floods cause much damage. Heavy rains can't be controlled by man. Similarly, there can be serious draught and the crops may fail and the land may become dry and even the life of the people may be in danger. Sometimes the rivers change their course and so they make many big tracts of land unfertile. Nature is all powerful and man is just a play thing in the hands of

nature. Byron, one of the English poet calls Ocean an image of God. The biggest ship, which may be considered the result of Man's hard and continuous labour, will sink like a bubble in the Ocean. Thus, Nature is a force that can benefit us and that can hurt us but to ascribe either malevolence or benevolence is a mistake our interactions with it should reflect that. Undoubtedly, God has bestowed many blessings on us, but nature is most beautiful one. It gives us a perfect environment to live a healthy life. So, taking a break from the hustle and bustle of the daily grind and heading outdoor is a great way to reconnect with nature. After all, getting outside invigorates your senses allows you to experience new things and best of all, reminds you of the endless wonders Mother Earth has offer. Now it is our moral responsibility to ensure well-being of all the living creatures for the utilization of future generations. It is time to 'Paying Back' to our Earth. Therefore, on 9<sup>th</sup> July 2025 "A tree in the Name of Mother" was a symbolic gesture planting a tree in the name of One's mother. This simple act served dual purpose encouraging people to plant trees as a tribute to their mothers, symbolizing love, respect and environmental Stewardship and also aims to promote tree planting and care, linking to it the nurturing role of mothers and the importance of environmental sustainability. The phrase "We are all children of our great mother Nature" is often attributed to Charles Dickens, though it is more accurately a paraphrase of a sentiment expressed in his works and by other writers of his time, yet it captures the idea that humanity is interconnected with nature and fundamentally shaped by the natural world just as children are shaped by their mothers. Other writers like Emily Dickinson also explored the profound relationship between human and nature, often portraying Nature as a nurturing and powerful force. In her poetry, Dickinson frequently personified nature as a gently mother figure emphasizing its care and patience towards all living things.

By anthropomorphizing nature, people can perceive nature as similar to humans. In this way, individuals can treat nature in a way that is similar to how they treat other people. As a result, people may feel guilty about harming nature. In essence, there is reciprocal-relationship between human and nature. Only them, Nature has been in existence long before human exists and ever since it has taken care of mankind and nourished it forever.

***"Let us return thanks to Nature for her Bounty by using every one of the senses she has given us".***

***Virginia Woolf***

Ultimately, the quote encourages us to be mindful of the beauty of Earth or nature and to express gratitude for the gifts it provides. It calls for a deeper appreciation of the natural World and our role within it.

**Prof Suta Kumari**

Incharge, Dept. of English



## Great Thoughts of Great Men

"Life should be inspired by a lofty ideal, guided by knowledge, sweetened by Love."

- **Goethe**

"Associate yourself with men of good quality, if you esteem your own reputation, for it is better to be alone than in bad company."

- **George Washington**

"The mind is its own place and in itself can make a Heaven of Hell, a Hell of Heaven."

- **John Milton**

"Almost everyman wastes, part of his life in attempts to gain applause which he cannot keep."

- **Samuel Johnson**

"Laws are like cobwebs, where the small flies are caught and the great break through it."

- **Francis Bacon**

"The World suffers a lot, not because of the violence of bad people but because of the silence of the good people."

- **Napoleon**

"I am Thankful to all those who said no to me, it's because of them I did it myself."

- **Albert Einstein**

"If friendship is your weakest point then you are the strongest person in the World."

- **Abraham Lincoln**

"Laughing faces do not mean that there is absence of sorrow, but it means that they have the ability to deal with it."

- **William Shakespeare**

"Opportunities are like Sunrises, if you wait too long you can miss them."

- **William Arthur**

"When you are in the light, everything follows you, but when you enter into dark, even your own shadow doesn't follow you."

- **Adolf Hitler**

"Coins always make sound, but currency notes are always silent, so when your value increases keep yourself calm and silent."

- **William Shakespeare**

"It is very easy to defeat someone, but it is hard to win someone."

- **Dr. APJ Abdul Kalam**

"Nothing ever becomes real till it is experienced."

- **John Keats**

"As a man acts, so he becomes."

- **Upnishads**

**Harsh Kumar**  
B.A III Semester



# अधिष्ठाता छात्र कल्याण वार्षिक रिपोर्ट सत्र 2024-2025

प्रो. प्रकाश चौधरी

तमसो माँ ज्योतिर्गमयः

महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों एवं सम्मानित पाठकों, सादर अभिवादन। विचारों की स्वतंत्रता, रचनात्मकता, विचारशीलता और बौद्धिक दृष्टिकोण के अमृत मंथन से साकार एम.एम.एच. कॉलेज की वार्षिक पत्रिका अमर ज्योति के प्रकाशन पर संपादकीय टीम और रचनाकार छात्र-छात्राओं को बधाई।

पत्रिका प्रकाशन के हर्ष के साथ, महाविद्यालय परिवार की उपलब्धियों के एक और शानदार सत्र के हम सभी साक्षी रहे हैं। हमारा महाविद्यालय अपनी समग्रता में शैक्षणिक, शिक्षणेत्तर गतिविधियों, साहित्यिक, सांस्कृतिक विशिष्टताओं एवं खेल प्रतिभा संपन्न, गुणवत्ता केंद्रित सह-शिक्षा का केंद्र है। छात्र-छात्राओं की बेहतर जिंदगी के सपनों को आकार और साकार रूप देने के लिए महाविद्यालय प्रशासन और शिक्षक साथी सतत प्रयत्नशील रहते हैं। मैं आप सभी विद्यार्थियों से आग्रह करता हूँ कि महाविद्यालय में उपलब्ध सभी सुविधाओं का भरपूर लाभ उठाएँ, सीखने की प्रक्रिया को अपने जीवन में उतारें, और अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें। हमें आपकी क्षमता पर पूर्ण विश्वास है और आपके सर्वांगीण विकास के लिए हम सदैव आपके साथ हैं।

अपनी विशिष्ट शैक्षिक यात्रा में वर्तमान में महाविद्यालय के परास्रातक विभागों में 236 से अधिक शोध छात्र पंजीकृत हैं और अब तक 1162 छात्र अपना उच्च स्तरीय शोध कार्य पूर्ण कर उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। महाविद्यालय से प्रति वर्ष विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं/नेट परीक्षा के साथ-साथ विद्यार्थी विश्वविद्यालय मेरिट में अपना स्थान लेते रहे हैं। महाविद्यालय छात्र-छात्राओं की साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतिभा के परिष्करण-परिमार्जन के लिए निरंतर कार्यक्रम आयोजित करता रहता है। साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद् द्वारा छात्र छात्राओं को विश्वविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग का सुअवसर दिया जाता रहा है। महाविद्यालय की नेशनल कैडेट कोर (एन.सी.सी.)-37 यूपी बीएन ईकाई में सीनियर अंडर ऑफिसर कैडेट आकांशा चौहान के साथ कैडेट्स की संख्या पूर्व से बढ़कर 154 हो गयी है।

हमारे कॉलेज का खेलों में अपना विशिष्ट स्थान रहा है। हम चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय की खेल टॉफी के विजेता रहे हैं। सत्र 2024-25 में राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय अंतर्विश्वविद्यालय नेटबाल प्रतियोगिता में मुस्कान (बी.एस.सी. फिजिकल एजुकेशन-द्वितीय वर्ष) और सितारा अंसारी (एम.ए. राजनीति शास्त्र द्वितीय वर्ष) ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। खेलो इंडिया 2024-25 (उत्तराखंड) की राष्ट्रीय स्पर्धा में हमारे महाविद्यालय की छात्रा छवि शर्मा (बी.एस.सी. फिजिकल एजुकेशन-प्रथम वर्ष) ने वुशू में स्वर्ण पदक और अनुष्का भाटी (बी.एस.सी. फिजिकल एजुकेशन-द्वितीय वर्ष) ने रजत पदक प्राप्त किया। अखिल भारतीय अंतर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में अनुष्का भाटी ने वुशू में कांस्य पदक और छात्र धर्मपाल (बी.ए. प्रथम वर्ष) ने पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया। महाविद्यालय के छात्र अक्ष सिंघल (बी.एस.सी. फिजिकल एजुकेशन-तृतीय वर्ष) का चयन बी.सी.सी.आई. द्वारा आयोजित विज्जी टॉफी में हुआ है।

नई शिक्षा नीति और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशों के अनुरूप महाविद्यालय में इंस्टीट्यूशनल इन्वोल्वमेंट काउन्सिल (I.I.C.), जोकि शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार तथा ए.आई.सी.टी.ई. से सम्बद्ध है, एम.एम.एच. कैरियर सेल, प्लेसमेंट और कैरियर काउंसिलिंग जैसी सुविधाएं आपके लिए कार्य कर रही हैं। अब तक छः सौ से अधिक छात्र-छात्राओं ने अपने कैरियर/रोजगार की यात्रा महाविद्यालय से प्लेसमेंट लेकर की है। महाविद्यालय का कैरियर सेल श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार के उपक्रम-नेशनल इंस्टिट्यूट फॉर करियर सर्विस (एन.आई.सी.एस), नोएडा के साथ मिलकर छात्र-छात्राओं के लिए बेहतर कैरियर विकल्प और रोजगार के कार्यक्रम आयोजित करता रहता है। महाविद्यालय के छात्र ऋषभ यादव (बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष) के इन्वोल्वमेंट (नवाचार) को भारत सरकार के युक्ति पोर्टल में पंजीकरण मिला है, उन्हें बधाई। महाविद्यालय के विधि विभाग के द्वितीय वर्ष के छात्र अवधेश कुमार ने शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के इन्वोल्वमेंट सेल द्वारा संचालित एडवांस लेवल ट्रेनिंग को पूरा कर इन्वोल्वमेंट एम्बेसेडर का प्रमाण पत्र प्राप्त किया है। आप भी शिक्षा के साथ-साथ आई.आई.सी./कैरियर सेल से जुड़ कर अपने कैरियर, प्रतिभा को नए आयाम दे सकते हैं। महाविद्यालय प्रशासन आपके उज्वल भविष्य और सफलता में सहायक बनने के लिए प्रतिबद्ध है।

महाविद्यालय अपनी सामाजिक सहभागिता में बढ़-चढ़ हिस्सेदारी करता रहा है। पर्यावरण जागरूकता, वृक्षारोपण, सड़क सुरक्षा अभियानों के साथ-साथ, सत्र 2024-25 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित मिशन शक्ति कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय में 10 कार्यक्रम आयोजित किये गए। मिशन शक्ति के अंतर्गत विभिन्न जागरूकता अभियानों एवं प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय के लगभग 1100 प्रतिभागियों ने हिस्सेदारी की। कार्यक्रम के अंतर्गत अक्टूबर 2024 में जागरूकता अभियान आरम्भ किया गया और 07 दिसंबर 2024 को मेडिकल कैम्प और 13 दिसंबर 2024 को आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता सफलतम कार्यक्रम रहे। इन कार्यक्रमों की रिपोर्ट एम.एस.एम.ई. उत्तर प्रदेश सरकार को प्रेषित की गयी है।

आज का समय छात्र-छात्राओं, युवाओं के समक्ष अनेक चुनौतियाँ लेकर उपस्थित है। जिसमें आर्थिक-सामाजिक असमानता, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, कृतिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.), तीव्र तकनीकी परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षरण शामिल हैं। इनका सीधा असर जीविकोपार्जन, रोजगार, कैरियर के साथ-साथ जीवन की आवश्यकताओं पर पड़ रहा है। वस्तुतः सच यह भी है कि चुनौतियाँ हमें लक्ष्य देती हैं कि हम खुद पर भरोसा करते हुए अपनी मेहनत, लगन और संकल्प से चुनौतियों पर विजय की तैयारी करें। इस विजय यात्रा के लिए ज्ञान, कौशल और तकनीकी निपुणता प्राथमिकताएं हैं। आपको अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों और नैतिक मूल्यों का संतुलन बनाए रखते हुए अपने भविष्य की राह प्रशस्त करनी होगी। स्वयं को अकेला न समझें, आपकी इस विजय यात्रा में महाविद्यालय आपके साथ है। यह पत्रिका इसी सकारात्मक, रचनात्मक प्रक्रिया की प्रतीक है।

अंत में, मैं महाविद्यालय परिवार के प्रमुख, महाविद्यालय की संचेतना शक्ति के ऊर्जा-श्रोत, प्रबंध-तंत्र के सचिव श्री अभिनव कृष्णा के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। मैं आभारी हूँ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. संजय कुमार सिंह का जो महाविद्यालय के समग्र विकास की ऐतिहासिक यात्रा का कुशल नेतृत्व कर रहे हैं। अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए लगातार प्रयत्नशील महाविद्यालय परिवार के समस्त प्रबुद्ध शिक्षक साथियों का आभार। महाविद्यालय में पठन-पाठन और शिक्षणेत्तर गतिविधियों में तत्पर सहयोग के लिए सदैव तैयार समस्त शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का धन्यवाद। विद्यार्थियों को उनके सफल भविष्य की कामना के साथ, मैं आशा करता हूँ कि यह अंक हमारे कॉलेज की शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक रचनात्मक ऊर्जा-श्रोत के बतौर पाठकों को प्रेरित करेगा।

तुम, अनंत संभावनाओं के आरंभ, चुनो सर्वोत्तम। रचो अपनी सफलता के नए आयाम, जीत लो चुनौतियों के शिखर और साकार करो अपने सपने, तुम्हारी जीत के रंगों से सजे नए गीत, गुनगुनाएं कल की बेहतर दुनिया!

शुभकामनाओं सहित



# साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद वार्षिक रिपोर्ट सत्र 2024-2025

डा. सुभाषिणी शर्मा

दिनांक 17-02-2025 को महाविद्यालय में साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद के तत्वावधान में सांस्कृतिक सप्ताह, "महानन्द उत्सव" का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और मां शारदा की वंदना से हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. संजय सिंह और डीन प्रो. केशव कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित किया। अनुशासन अधिकारी प्रोफेसर रवींद्र सिंह यादव ने छात्रों को आशीर्वाचन दिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में सर्वप्रथम रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था नारी सशक्तीकरण व विकसित भारत की अवधारणा। कार्यक्रम में छात्रों ने खूब उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया और रंगो की खूबसूरत छटा बिखेरी। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्रतीक्षा (एल.एल.बी. तृतीय), अनुपमा (बी. काम.) ने द्वितीय स्थान स्वाति (बी. काम. प्रथम) तृतीय स्थान और रवींद्र सिंह सांगवान, काजल शर्मा (एल.एल.बी.), रिया सागर (बी.बी.ए. द्वितीय) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसके बाद डा मूलचंद वर्मा के संयोजन में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें प्रथम स्थान सूरज सैनी (एम. ए. तृतीय), द्वितीय स्थान ललिता (एम. ए. तृतीय), तृतीय स्थान मनीष (बी. ए. प्रथम) ने प्राप्त किया। सान्त्वना धीरज कुमार (एल.एल.बी. द्वितीय), मनीषा (बी.ए. प्रथम), आराधना (बी.ए. तृतीय) ने प्राप्त किया।

इसके उपरान्त वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके संयोजक थी कल्पना दुबे, विषय था NEP की प्रासंगिकता, इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हेमन्त (बी.काम.ओनर्स) द्वितीय स्थान मयंक शर्मा (बी.काम.ओनर्स) व तृतीय स्थान क्रमशः वीरेंद्र कुमार (एल.एल.बी.द्वितीय) को प्राप्त हुआ। सान्त्वना पुरस्कार अनिकेत (बी.एस.सी. द्वितीय) को मिला।

अगले दिन त्वरित भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ इसके संयोजन का जिम्मा था, प्रो. अनिल गोविन्दन और प्रो. आभा दुबे। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान धीरज बहुगुणा (बी.एस.सी. द्वितीय), द्वितीय स्थान भावना सिसौदिया (एम. एस. सी. द्वितीय सेमेस्टर) तथा तृतीय स्थान प्रतिभा गर्ग (बी.ए. द्वितीय वर्ष) को मिला, सान्त्वना सुधा सिंह (बी.ए. द्वितीय वर्ष), सुहानी शर्मा (बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष) को मिला। कार्यक्रम में बहुत ही रोचक विषय दिये गये जिन पर छात्रों ने बहुत ही उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।

इसके उपरांत निबंध लेखन और 'बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट' की प्रतियोगिता का संचालन प्रो. सुता कुमारी व प्रो. आभा दुबे के नेतृत्व में किया गया जिसमें छात्रों ने बहुत ही उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। इनमें प्रथम स्थान धीरज राज (एम. ए. प्रथम सेमेस्टर) द्वितीय स्थान सिफा (एल.एल.बी. प्रथम) व तृतीय स्थान पर दीपशिखा (एम. ए. प्रथम सेमेस्टर) रहे। प्रियंका अहिरवार (बी. ए. तृतीय), मुस्कान (बी.ए. तृतीय), शिवांश (बी.काम. ओनर्स) ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट में मिला।

कार्यक्रम की श्रृंखला में अगला कार्यक्रम था नाटक प्रतियोगिता का जिसका संचालन प्रो. अनिल गोविन्दन और शिवम गुप्ता ने किया इसमें प्रथम स्थान शिल्पी सिंह (बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष) व द्वितीय स्थान स्नेहा, कामिनी और इनके ग्रुप को प्राप्त हुआ।

नाटक के पश्चात बारी आई गायन और नृत्य प्रतियोगिताओं की, इनमें छात्रों का उत्साह देखते ही बनता था। कार्यक्रम का संचालन और संयोजन प्रो. रोजी मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में गायन प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डा. रीना शर्मा, प्रियंका सिंह (एस. डी. कालेज) ने निभाई। इसमें गायन में प्रथम स्थान अरशद (बी.ए. तृतीय वर्ष) द्वितीय स्थान सुहानी शर्मा (बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष) एवं तृतीय स्थान धीरज बहुगुणा और शिवांशु यादव (बी.ए. तृतीय) को मिला। सान्त्वना पुरस्कार के लिए पूजा (एम. ए. प्रथम), कामना गौतम (बी.ए. प्रथम), टिंकल शर्मा (बी.सी.ए. प्रथम) चुनी गई। नृत्य प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डा. आकांक्षा सारस्वत, डा. सुमन गर्ग (गित्री देवी महाविद्यालय मोदी नगर) ने निभाई। नृत्य में प्रथम स्थान ललिता (एम. ए. द्वितीय वर्ष) द्वितीय स्थान शिल्पी सिंह (बी.एस.सी.) व तृतीय स्थान पल्लवी कश्यप (बी.ए.द्वितीय वर्ष) प्रथम, पलक गर्ग (बी. काम. ओनर्स) को मिला।

दिनांक 24-04-2025 को साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद एम. एम. एच. गाजियाबाद के तत्वावधान में "महानन्द उत्सव" पुरस्कार वितरण का भव्य समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सम्मानित अतिथि के रूप में गाजियाबाद के विधायक माननीय संजीव शर्मा जी और मेरठ-सहारनपुर मंडल से एम. एल. सी. डा. श्रीचंद शर्मा जी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के सचिव श्री अभिनव कृष्णा जी ने की।

कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना से हुआ। इसके पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य डा. संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। इसके उपरांत विजेता छात्र छात्राओं को विधायक माननीय संजीव शर्मा जी और मेरठ-सहारनपुर मंडल के एम.एल.सी. माननीय डा. श्रीचंद शर्मा जी द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। सभा में बोलते हुए श्री श्रीचंद शर्मा जी ने भारतीय ज्ञान परंपरा की अद्भुत विशेषताओं पर प्रकाश डाला व छात्रों को राष्ट्र हित और सही मार्ग पर चलने की बात कही।

माननीय संजीव शर्मा जी ने भी विजेता छात्र छात्राओं को बधाई दी। अनुशासित तरीके से जीवन में आगे बढ़ने और पढ़ाई लिखाई के साथ-साथ अपनी योग्यता को पहचानकर उसे निखारने की प्रेरणा दी।

गायन प्रतियोगिता के विजेता छात्र अरशद और सुहानी शर्मा ने और सुधीर ने अपने सुमधुर गायन से अतिथियों का भी मन मोह लिया। सुधा सिंह को स्टूडेंट्स आफ द ईयर का पुरस्कार मिला। प्रतिभा गर्ग और निकिता को भी पुरस्कृत किया गया। इसी कार्यक्रम में इग्नू की छात्रा खुशी शर्मा भी पोस्टर प्रतियोगिता में सर्टिफिकेट और मेडल से सम्मानित की गई।

कार्यक्रम की संयोजिका डा. सुभाषिणी शर्मा थी व संचालन डा. कल्पना दुबे ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संयोजिका डा. सुभाषिणी शर्मा ने किया। कार्यक्रम में डीन डा. प्रकाश चौधरी और मुख्य अनुशासन अधिकारी डा. रवीन्द्र सिंह यादव, डा. भीष्म कपूर, डा. रोजी मिश्रा, डा. सुता, डा. जमुना प्रसाद, डा. आभा दुबे, डा. राखी, डा. एस बी कुलश्रेष्ठ, डा. केशव कुमार, डा. स्मृति रायजादा, सुनीता सिंह, मीना वर्मा, डा. कामना यादव, डा. अनिल गोविन्दन, डा. मृदुला वर्मा, डा. शालू ल्यागी, डा. पूनम गुप्ता, रीमा उपाध्याय, डा. निशा अग्रवाल एवं महाविद्यालय के सभी शिक्षक साथियों की उपस्थिति रही।

# क्रीड़ा परिषद

## वार्षिक खेल कूद की संक्षिप्त रिपोर्ट

### सत्र 2024-25

प्रो० देवराज यादव

यह महाविद्यालय अपने खिलाड़ियों की अद्भुत प्रतिभा के कारण आरंभ से ही अग्रणी रहा है, इसीलिए महा विद्यालय को अपने खिलाड़ियों पर गर्व है। पहले का खेलकूद के क्षेत्र में ये गौरवशाली इतिहास रहा है। जिसका विशेष कारण यह है कि महा महा विद्यालय के संस्थापक श्री गुरु पिता जी महाराज का खेलों के प्रति अत्यधिक लगाव था। यह उन्हीं परम संत का आशीर्वाद है कि महाविद्यालय का नाम देश-विदेश में विख्यात है। श्री गुरु पिता जी महाराज का स्लोगन था कि खेल ही जीवन है और जीवन ही खेल है। जिसके फलस्वरूप महा विद्यालय ने खेलों में निरंतर प्रगति की और अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी इस देश को प्रदान किए। उदाहरण के लिए, महा विद्यालय के पूर्व छात्र श्री हरवंशलाल सूरी, जिन्होंने 1964 में टोक्यो ओलंपिक में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करके महा विद्यालय को गौरवान्वित किया। इसके पश्चात यह क्रम निरंतर जारी रहा। श्री रणवीर सिंह अर्जुन पुरस्कार विजेता रॉबिन सिंह जूनियर टेस्ट प्लेयर भारतीय क्रिकेट टीम इंड्रेश धीरज, एशियन क्रॉस कंट्री में कांस्य पदक विजेता और मुंबई मैराथन दौड़ में पुरस्कार स्वरूप इंडिका कार प्राप्त की। मुकेश कुमार जूनियर एशियन में देश का प्रतिनिधित्व, कालू राम लक्ष्मण पुरस्कार विजेता और तेहरान में भारतीय कबड्डी टीम का प्रतिनिधित्व दानवीर सिंह कॉमनवेल्थ गेम्स खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय एथलेटिक मीट में 5000 मीटर और 10,000 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त कर नया कीर्तिमान बनाया तथा सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया। इसी प्रकार धर्मसिंह किलोमीटर वॉक में स्वर्ण पदक प्राप्त कर नया कीर्तिमान बनाया। सुमित शर्मा ने विश्व अंतर विश्वविद्यालय शतरंज प्रतियोगिता जो मलेशिया में हुई में प्रतिनिधित्व किया। अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में महाविद्यालय की ऋचा सूद ने चक्का फेंक में स्वर्ण पदक, नरेश कुमार ने 20 किलो मीटर वॉक में स्वर्ण पदक प्राप्त कर नया कीर्तिमान बनाया। बबीता चौधरी ने 400 मीटर दौड़ व मीटर बाधा दौड़ में स्वर्ण पदक मनीषा भाटी ने वुशु महिला में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। संघप्रिय गौतम नी 400 मीटर दौड़ में रजत पदक विपुल त्यागी ने ऊंची कूद में स्वर्ण पदक, अनीता ने किलोमीटर रोडरेज में स्वर्ण पदक, पूजा पाल ने कबड्डी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक, सोनिया ने शॉटपुट में स्वर्ण पदक, संदीप सांगवान ने। संदीप कुमारी और सनी ने कबड्डी प्रतियोगिता में रजत पटल संजीव रस्तोगी ने पावर लिफ्टिंग में कांस्य पदक, निधि चौधरी ने 100 मीटर व 200 मीटर दौड़ में कांस्य पदक गौरव त्यागी, अजीत लोहिया, जगतपाल गौड़, अमित आनंद, दुष्यंत सेठी, रॉयल राजपूत, रॉबिन चौधरी ने क्रिकेट में स्वर्ण पदक, अनिल कुमार चहल ने लंबी कूद में रजत पदक। मीटर दौड़ में रजत पदक बॉक्सिंग में अरुण कुमार ने कि लोग। घर में कांस्य पदक और जूडो में यशपाल ने 60 किलोग्राम में कांस्य पदक, बॉक्सिंग में अजीत कुमार, प्रवीण कुमार एवं सतपाल ने स्वर्ण पदक तथा नरेंद्र ने रजत पदक, कुमारी अनीता ने 20 मीटर रोड रेस में स्वर्ण पदक, विश्व में गित्री भाटी ने स्वर्ण पदक तथा शिवानी ने जूडो में कांस्य पदक कबड्डी में नीता तिवारी, पूजा पाल, श्रीकांत तेवतिया, अमित कुमार आर्य, लोकेश कुमार, गीता तेवतिया, चौ० नेहा ने राज रजत पदक, हुमाखान ने वुशु में रजत पदक, अमित रोसा ने कांस्य पदक और श्वेता ने बॉक्सिंग में कांस्य पदक प्राप्त कर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया। अमित कुमार कुमार तेवतिया, सौरभ श्रीवास्तव का विज्जी ट्रॉफी और कंबाइंड यूनिवर्सिटी में चयन हुआ और अक्षत सिंघल का क्रिकेट विज्जी ट्रॉफी में चयन हुआ है। उत्तर क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय हैंडबॉल प्रतियोगिता में यामीन और हिमांशु कुमार निम ने रजत पदक प्राप्त कर महा विद्यालय को गौरवान्वित किया। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे महा विद्यालय के शीर्षस्थ खिलाड़ी इस समय

देश और प्रदेश की राजकीय सेवाओं में उच्च पदों पर आसीन होकर महा विद्यालय को गौरवान्वित कर रहे हैं।

इस वर्ष में अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में महा विद्यालय की नेटबॉल महिला प्रतियोगिता में मुस्कान व सितारा अंसारी ने स्वर्ण पदक, भूषण पुरुष व महिला प्रतियोगिता में अनुष्का भांति व जतिन का कांस्य पदक तथा उत्तर क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय क्रिकेट पुरुष प्रतियोगिता के अक्ष सिंघल, राघव चौधरी, शुभम चौधरी व शशांक सिंह ने रजत पदक प्राप्त कर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया।

चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय अंतरमहाविद्यालय की विभिन्न प्रतियोगिता में इस वर्ष 2024 में महा विद्यालय की नेटबॉल पुरुष, क्रिकेट पुरुष, वुशु (पुरुष व महिला) पावर लिफ्टिंग महिला टीमों को विजेता और हैंडबॉल पुरुष पावर लिफ्टिंग पुरुष व टेबल टेनिस पुरुष की टीमों को उप विजेता तथा शतरंज पुरुष, बॉक्सिंग पुरुष, खो खो पुरुष व कबड्डी की टीमों को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। महा विद्यालय के धर्मपाल, सुरेंद्र शर्मा व आकांक्ष को पावर लिफ्टिंग में बॉक्सिंग में कोमल शर्मा, ध्रुव सागर को कराटे में आकांक्षा, वुशु में मनी, प्रियांशु चौधरी, जतिन, अनुष्का भाटी को स्वर्ण पदक, टेबल टेनिस में आयुष्मान ओझा को ताइक्वांडो में भावना व रिया को पावर लिफ्टिंग में दिशा भिवानिया, बॉक्सिंग में अनुष्का भाटी, कराटे में हीना, वुशु में केशव शर्मा व छवि शर्मा को रजत पदक एवं पावर लिफ्टिंग में कंचन प्रभा, कविता रानी, बॉक्सिंग में रितिक, शिवम् कुमार, शिवम को कराटे में भावना, रविता को कांस्य पदक प्राप्त हुआ।

महा विद्यालय के निम्नांकित छात्र/ छात्राओं का चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय की विभिन्न टीमों में चयन हुआ, जिन्होंने अंतर विश्वविद्यालय की प्रतियोगिता में प्रतिभाग करके महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया। इनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं:

1. शतरंज- युगांक मौर्य
2. हैंडबॉल- कविता रानी, तनु, निधि यादव, मुस्कान, गुरलीन कौर, आयुषी तोमर  
विशाल सिंह, आकाश कुमार, उदित नागर, निखिल यादव।
3. टेबल टेनिस- आयुष्मान ओझा, रवि कुमार
4. पावरलिफ्टिंग- धर्मपाल
5. खो खो- क्रिश त्यागी, सचिन कुमार, अर्जित घोष
6. हॉकी- पूजा चौहान, ऋतिक चौहान।
7. वुशु- मनी, जतिन, अनुष्का भाटी, तृप्ति अग्रवाल
8. क्रिकेट- अक्ष सिंघल, राघव चौधरी, शुभम चौधरी व शशांक सिंह
9. बैडमिंटन- प्रिया शुक्ला
10. नेटबॉल- मुस्कान, सितारा अंसारी, करण माधव शर्मा व गौरव उज्ज्वल
11. कबड्डी- दिव्यांशी, खुशी व चंदन

अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर संजय कुमार सिंह का आभारी हूँ जिनसे हम को कार्य करने की दिशा मिलती है।

अपने सभी शिक्षकों तथा गैर शिक्षक साथियों को जिनके सहयोग के बिना यह कार्य संपन्न नहीं हो सकता था।

# कुल गीत

## महानन्द मिशन हरिजन कॉलिज, गाजियाबाद

ये हमारा ज्ञान-मन्दिर, प्यार का मंदिर है ये।  
घन-तिमिर में ज्योति के त्यौहार का मंदिर है ये॥

हो रही जिसमें महा आनन्द की आराधना,  
गुरु-पिता-हिय-पुष्प के मकरन्द की आराधना,  
जो रमा उस ब्रह्म के प्रिय छन्द की आराधना,  
सुर-सरोजिनी, जय-विजय ब्रज, सार का मंदिर है ये।

ये गगन वो है कि मीनारें न जिसको छू सकीं,  
विष मुझे बाणों की बोछारें न जिसको छू सकीं,  
जाति या मजहब की दीवारें न जिसको छू सकीं,  
मन के आँगन में बिना दीवार का मंदिर है ये।

कर रही इसकी सजग किरणें उजाला दूर तक,  
जिसने छलकाया मधुर अमृत का प्याला दूर तक,  
फेरता है हर कोई इसकी ही माला दूर तक,  
इक जगह रह के भी सब संसार का मंदिर है ये।

चाह है हर पल प्रगति के पथ पे ये बढ़ता रहे,  
उच्च आदर्शों की अनुपम सीढ़ियाँ चढ़ता रहे,  
रोज़ अनगढ़ पत्थरों से मूर्तियाँ गढ़ता रहे,  
प्रीति-वीणा की मधुर झंकार का मंदिर है ये।

- डॉ. कुँवर बेचैन



"अमर ज्योति" पत्रिका प्राचार्य प्रो० संजय कुमार सिंह ने एम० एम० एच० कॉलेज, गाजियाबाद के लिए "The Furnishine, Gheziabad" से मुद्रित एवं प्रकाशित करवाई।